मासिक

अध्यात्म संदेश

जनकल्याण एवं राष्ट्रोत्थान को समर्पित धर्म, संस्कृति, अध्यात्म चिंतन का मासिक पत्र

वर्ष: 3। अंक: 17। पृष्ठ: 43। मूल्य: नि:शुल्क । इंदौर–उज्जैन। सोमवार 1 जनवरी 2024। पौष/माघ मास (11), विक्रम संवत् 2080 । इ. संस्करण

॥ लोकाः समग्राः सुखिनो भवन्तु॥

मासिक
अध्यात्म संदेश
जनकल्याण एवं राष्ट्रोत्थान को समर्पित धर्म, संस्कृति, अध्यात्म चिंतन का मासिक ई–पत्र

editor.adhyatmsandesh@gmail.com
m.facebook.com/अध्यात्म संदेश

गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फ़ाउण्डेशन
www.gssfoundation.org

प्रेरणा स्रोत
महासिद्ध गुरू गोरक्षनाथ जी

सलाहकार समिति
महंत बालक नाथ योगी जी
गद्दीनशीन महंत, मठ अस्थल बोहर, रोहतक
संसद सदस्य (लोकसभा), अलवर, राजस्थान
कुलाधिपति, श्री बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय (हरियाणा)

महंत पीर योगी रामनाथ जी
भर्तृहरि गुफा, उज्जैन (मध्य प्रदेश)

महंत डॉ. योगी विलासनाथ जी
अध्यक्ष, श्री गुरू गोरक्षनाथ शिव पंचायतन मन्दिर (ट्रस्ट), गाळणे (महाराष्ट्र)

राष्ट्रसंत बालयोगी उमेशनाथ जी
पीठाधीश्वर–वाल्मीकि धाम, उज्जैन (मध्य प्रदेश)

प्रधान सम्पादक
योगी शिवनन्दन नाथ

सम्पादक मंडल
वरिष्ठ सम्पादक
डॉ. संतोष खन्ना (दिल्ली)
सम्पादक
डॉ. अलका शर्मा (दिल्ली)
उपसम्पादक
श्रीमती सुषमा सागर मिश्रा (लखनऊ)
सुश्री इंदु सिंह "इन्दुश्री" (मध्य प्रदेश)

ग्राफिक्स
IDEAwave COMMUNICATIONS

प्रकाशक एवं स्वामी
गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फ़ाउण्डेशन

- गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फाउंडेशन सर्वाधिकार सुरक्षित। किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित।
- पत्रिका में प्रकाशित सामग्री का समस्त उत्तरदायित्व लेखकों का है। प्रकाशक, प्रधान संपादक एवं संपादक मंडल इसके लिए किसी भी प्रकार से उत्तरदायित्व नहीं होंगे।
- समस्त विवादों का निस्तारण, मध्य प्रदेश सीमांतर्गत सक्षम न्यायालयों में किया जाएगा।

editor.adhyatmsandesh@gmail.com

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ क्र.
1	संपादक की कलम से	डॉ. अलका शर्मा	03
2	डाक टिकटों पर भी छाया राम राज	कृष्ण कुमार यादव	05
3	नववर्ष के दोहे	प्रो. डॉ. शरद नारायण खरे	09
4	पर्यावरण चिन्तन 11	डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह	08
5	मैं भारत की भगवा नारी	डॉ. निशा नंदिनी भारतीय	10
6	श्रीरामनाम अनमोल है	डॉ. नरेन्द्रकुमार मेहता	11
7	अभिव्यक्त संवेदना की यथार्थवादी...	डॉ. अजय शुक्ला	13
8	राष्ट्रीय युवा दिवस	श्रीमती सुषमा सागर मिश्रा	16
9	ज्ञानेंद्रपति: जनसंवेदना के कवि	मेघना रॉय	18
10	ग़ज़ल	विज्ञान व्रत	19
11	मेरे भीतर बसे हैं राम	डॉ. सन्तोष खन्ना	20
12	युवा शक्ति राष्ट्र की अमूल्य संपदा	सुजाता प्रसाद	22
13	मर्यादा पुरुषोत्तम राम...	डॉ. अलका शर्मा	24
14	मकर संक्रान्ति	डॉ. अर्चना प्रकाश	26
15	वैदिक साहित्य और संस्कृति	डॉ. विदुषी शर्मा	28
16	मानवतावाद के अग्रदूत स्वामी...	डॉ. हनुमान प्रसाद उत्तम	31
17	स्वामी विवेकानन्द जी पर छंद	डॉ. विद्यासागर मिश्र 'सागर'	33
18	राम नाम मधुशाला हो	अंकुर सिंह	33
19	ज्योतिष क्या है?	पंडित कैलाशनारायण	34
20	अर्जित ज्ञान के सदुपयोग के लिए...	सीताराम गुप्ता	36
21	हरियाली से परिपोषित भारत...	डॉ. षैजू के	39
22	बट हू विल टेक केयर	प्रेम नारायण गुप्ता	41
23	चिड़िया रानी	मुकेश कुमार ऋषि वर्मा	42
24	मकर संक्रांति अर्थात शुभकारी...	सोनल मंजू श्री ओमर	43

संपादक की कलम से

डॉ. अलका शर्मा
(वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर)
संपादक अध्यात्म संदेश

अध्यात्म संदेश पत्रिका परिवार के समस्त विद्वतजनों को नववर्ष की असीम शुभकामनाये

सर्वस्तरतु दुर्गाणि, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु
सवेर्रू कामान आप्नोतु, सवर्रूसर्वत्र नन्दतु

(सभी लोग कठिनाइयों को पार करें। सभी का कल्याण हो। सभी की कामनाये पूर्ण हो। सभी सर्वत्र आनंदित हो।)

अनवरत रूप से निरंतर गतिशील समय का चक्र इतनी तेज गति से चला कि 2023 का समय तो मानो पंख लगा कर उड़ गया। मन में नई आशा, विश्वास और आंखों में भविष्य सुनहरे सपने संजोए हम सभी ने 2024 में पदार्पण किया। एक बार पीछे मुड़कर अतीत के झरोखे से 2023 को देखा तो अनेको उपलब्धियां - जैसे-चंद्रयान-3 का सफल प्रक्षेपण, एशियन गेम्स में भारत पर असंख्य स्वर्ण पदको की बौछार, G 20 की सफलता पूर्वक अध्यक्षता, महिला आरक्षण बिल पास होना, पहाड़ की सुरंग में फंसे 42 मजदूरों का शारीरिक व मानसिक रूप से 17 दिन बाद सकुशल निकलना दैवकृपा के साथ साथ सरकार (कार्य कुशलता का सशक्त प्रमाण था। जो सदा अविस्मरणीय रहेगा। ये सब अत्यंत महत्वपूर्ण उपलब्धियां मुसकुराकर हमे विदाई रही थी। नए साल के उगते सूर्य की प्रखर किरणों ने मानो स्पष्ट संकेत दे दिया कि ये नववर्ष पिछले साल से भी ज्यादा उपलब्धियों को लेकर आया है। नववर्ष में सभी नए संकल्प, नई योजनाएं, भविष्य के अनेको नए सपनो को यथार्थ के धरातल पर उतारने में जी जान से जुट जाते है। उनमें कुछ को सफलता मिलती है कुछ असफलता के कारण मायूस होकर बैठ जाते है। पर इस बार नववर्ष के आरंभ 22 जनवरी को हम सभी भारतवासियों की आँखों द्वारा कई दशकों का संजोया सुंदर सपना साकार होने वाला है समस्त देश वासियो के दिल मे बसने वाले राम लला की बड़े जतन से बनाये गये अयोध्या के नवनिर्मित राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा का पावन पर्व जो है। जिस दिन की कल्पना मात्र से जन जन हर्षित, पुलकित व रोमांचित है। सभी भारत वासियों के लिए 2024 की सबसे बड़ी उपलब्धि होगी।

नववर्ष के प्रथम सप्ताह में 7 जनवरी को सभी कार्यो में सफलता प्रदान करने वाली सफला एकादशी मनाई जाएगी। इस दिन विष्णु भगवान के पूजा अर्चन वंदन का बहुत महत्व बताया गया है।

12 जनवरी के दिन स्वामी विवेकानंद को युवादिवस के रूप में मनाया जाता है। यह दिन युवाओं के गुणों और एक राष्ट्र तो क्या पूरे विश्व के विकास के लिए युवाओं की क्षमताओ का द्योतक है ।

13 जनवरी को जीवन मे हर्षोल्लास, स्फूर्ति, भाईचारे, नई ऊर्जा का संचारक लोहड़ी का पर्व मूल रूप से पंजाब का यह लोकप्रिय पर्व फसलों की कटाई से जुड़ा है । इस दिन रबी की फसल को

अग्नि समर्पित करके अग्नि का आभार व्यक्त किया जाता है साथ ही किसान अपनी अगली फसल के अच्छी होने की कामना भी करते है।

हिन्दू मान्यता के अनुसार सूर्य जब अपनी एक राशि से निकल कर दूसरी राशि मे प्रवेश करता है तो इस प्रकार की खगोलीय घटना को संक्रांति कहा जाता है। इस बार पौष मास की मकरसंक्रांति का महापर्व 15 जनवरी को मनाया जाएगा। इसी दिन दक्षिण भारत मे पोंगल का पर्व मनाया जाएगा। नई ऋतु नई फसल का संकेत माने जाने वाले इस पर्व में स्नान, दान का बड़ा महत्व बताया गया है।

17 जनवरी उनके जन्मदिन को गुरु गोबिंद सिंह जयंती के रूप में मनाया जाता है। गुरु गोबिंद सिंह सिक्ख धर्म के के दसवें व अंतिम गुरु थे। इस पुण्य दिन उनके उच्चादर्शों को भजनों के माध्यम से गाकर नई पीढ़ी तक पहुँचाया जाता है।

26 जनवरी 1950 को स्वतंत्र भारत का अपना संविधान लागू हुआ इसी के साथ इसी दिन भारत की पूर्णरूपेण गणराज्य का दर्जा मिला इसी कारण सम्पूर्ण भारत मे यह राष्ट्रीय पर्व हर्षोल्लास व धूम धाम से मनाया जाता है।

जीवन की समस्त बाधाओ को शांत करने वाले तथा सुख सौभाग्य प्रदान करने वाले गणपति की पूजा का विशेष पर्व संकष्ठी चतुर्थी 29 जनवरी को मनाया जाएगा। ऐसी मान्यता है कि इस दिन व्रत करने वाले के सारे संकट गणपति की कृपा से दूर हो जाते है।

30 जनवरी 1948 को शाम की प्रार्थना के समय बिड़ला हाउस में नाथू राम गोडसे ने गांधी जी को गोली से मार डाला यह दिन इतिहास में काले अक्षरों में अंकित हो गया। इसी कारण महात्मा गांधी की पुण्य तिथि के नाम से यह दिन जाना जाता है।

नव वर्ष के उपहार स्वरूप ज्ञानवर्धक रोचक लेखों से भरपूर जनवरी 2024 के अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हम सभी अत्यंत हर्षित है अपने सुंदर लेखों के माध्यम से इस पत्रिका में सहयोग करने वाले सभी विद्वान लेखकों का हृदयतल से आभार व्यक्त करती हूं। आशा है हमारी पत्रिका के प्रति आपका स्नेह उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त होगा।

रिद्धि सिद्धि शुभ लाभ रहे मिले समृद्धि हर्ष
तन मन धन से रहो आनंदित शुभ हो सबको नूतन वर्ष

पुनः नववर्ष की असीम शुभकामनाओ सहित–

संपादक
डॉ. अलका शर्मा

डाक टिकटों पर भी छाया राम राज

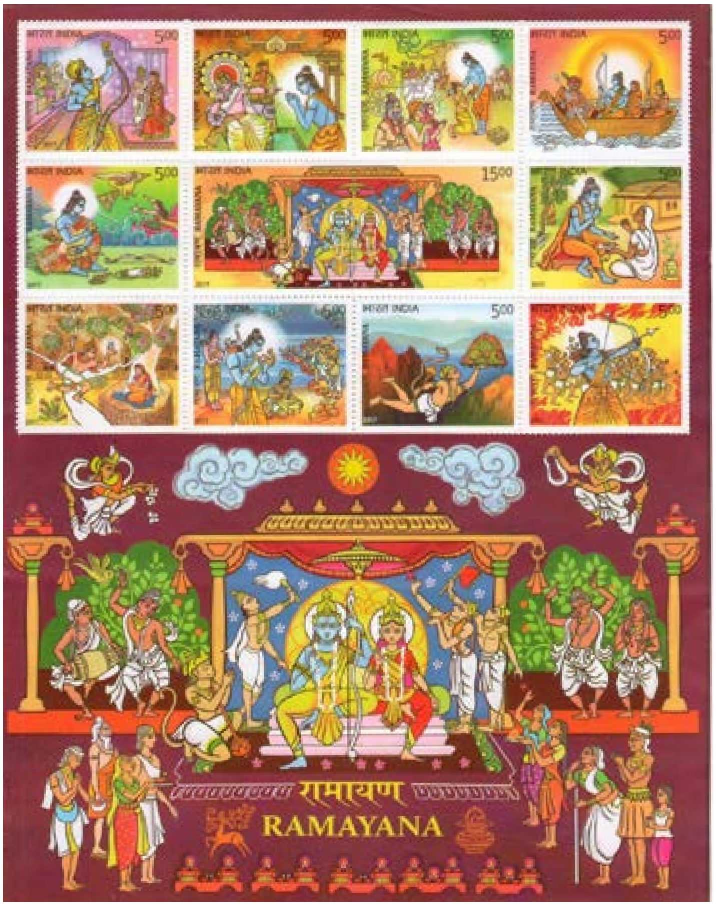

कृष्ण कुमार यादव
भारतीय डाक सेवा,
पोस्टमास्टर जनरल, वाराणसी परिक्षेत्र
वाराणसी, उत्तर प्रदेश

भगवान श्री राम हमारी धरती के सांस्कृतिक मूल्यों की अभिव्यक्ति करते हैं। मानव इतिहास में राम–कथा की जितनी व्याप्ति है, शायद ही उसका कोई अन्यत्र उदाहरण मिलता हो। वाल्मीकि रामायण में जब ब्रह्मा जी वाल्मीकि को यह ग्रन्थ लिखने का निर्देश देते हैं तो साथ ही एक वरदान भी देते हैं, **'यावत स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले, तावद रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति'** अर्थात जब तक इस दुनिया में पर्वतों और नदियों का अस्तित्व है तब तक रामायण का प्रचार होता रहेगा। श्री राम देश के जनमानस में बहुत गहरे व्याप्त हैं। श्री राम मानवीय आचरण, जीवन मूल्यों और आत्मबल के ऐसे मानदण्ड बन गए कि उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में स्वीकार किया गया। उनका धार्मिक ही नहीं सामाजिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक महत्व भी है। तभी तो राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने सार्वजनिक जीवन में राम के नाम का उपयोग करते हुए 'राम राज्य' का आदर्श सामने रखा। यह अनायास ही नहीं है कि आज भी भारतीय जनमानस अपने नेतृत्वकर्ताओं से लेकर नायकों में ऐसे चरित्र को ढूँढ़ता है, जो भगवान श्री राम की तरह लोक कल्याण के प्रति समर्पित हों।

डाक टिकट किसी भी राष्ट्र की सभ्यता, संस्कृति एवं विरासत के संवाहक हैं। डाक टिकट अतीत को वर्तमान से जोड़ते हैं। देश–विदेश के समृद्ध व गौरवशाली इतिहास और विरासत से परिचय कराने में डाक टिकटों का अहम स्थान है। राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय महत्व के विषयों, विभूतियों के साथ–साथ सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक पहलुओं पर भी डाक टिकट जारी होते रहते हैं। रामायण महाकाव्य केवल भारत में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में प्रसिद्ध है, ऐसे में मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्री राम से लेकर रामायण के विभिन्न दृष्टांतों पर भारत सहित दुनिया के कई देशों ने डाक टिकट जारी किये हैं। रामायण और इससे जुड़े

प्रसंगों पर भारतीय डाक विभाग द्वारा समय–समय पर विभिन्न डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण, विशेष आवरण जारी किये गए हैं। डाक विभाग ने रामायण के विभिन्न पहलुओं पर डाक टिकट जारी करके इसकी आध्यात्मिकता और ऐतिहासिकता को वैश्विक स्तर पर समृद्ध किया है।

भारतीय डाक विभाग द्वारा सन् 1952 में 'भारतीय संत एवं कवि' थीम पर 6 स्मारक डाक टिकट जारी किये गए। इनमें गा. `स्वामी तुलसीदास, संत कबीर, मीरा, सूरदास, गालिब एवं रविन्द्र नाथ टैगोर शामिल थे। श्री राम को जन–जन तक पहुँचाने वाले रामचरित मानस के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास पर 1 आना की डाक टिकट जारी की गई। अवधी में लिखी रामचरित मानस आज भी सर्वाधिक लोकप्रिय है। रामायण सिर्फ उत्तर भारत ही नहीं, दक्षिण भारत में भी उतनी ही लोकप्रिय है। महर्षि कम्बन द्वारा रचित रामवतारम् तमिल साहित्य की सर्वोत्तम कृति है एवं वृहत ग्रंथ है। डाक विभाग ने 5 अप्रैल 1966 को तमिल रामायण के रचयिता महर्षि कम्बन पर 15 नये पैसे का डाक टिकट जारी किया।

श्रीराम की कथा के सूत्र वैदिक, बौद्ध जातक कथा, प्राकृत के जैन ग्रन्थ 'पउमचरिय' में भी मिलते हैं। महाभारत के वन पर्व में भी 'रामोपाख्यान' आता है, किन्तु आदिकवि वाल्मीकि कृत 'रामायण' में ही यह कथा ललित और सुव्यवस्थित रूप में विकसित हुई। संस्कृत के प्रथम महाकाव्य रामायण की रचना महर्षि वाल्मीकि ने की। डाक विभाग ने महर्षि वाल्मीकि पर सन् 1970 में 20 नये पैसे का डाक टिकट जारी किया। गोस्वामी तुलसीदास द्वारा अवधी भाषा में 16वीं शताब्दी में रचित महाकाव्य रामचरित मानस हिन्दू धर्म का एक प्रमुख धार्मिक ग्रंथ है, जिसमें राम को मर्यादा पुरूषोत्तम के रूप में दिखाया गया है। वैसे भी जो चीज सहज–सरल भाषा में कही जाए, उसका प्रभाव अलग पड़ता है। गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरित मानस का अनुपम शैली में दोहों, चौपाइयों, सोरठों तथा छंदों का आश्रय लेकर बहुत अच्छा वर्णन किया है। भारतीय डाक विभाग ने रामचरित मानस पर भी 4 मई, 1975 को 25 पैसे का डाक टिकट जारी किया।

भारतीय डाक विभाग ने रामायण के सभी महत्वपूर्ण प्रसंगों को दर्शाते 11 स्मारक डाक टिकटों का सेट 22 सितंबर, 2017 को जारी किया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने तुलसी मानस मंदिर, वाराणसी में इसे जारी किया। रामायण का हर प्रसंग डाक टिकट के माध्यम से लोगों तक पहुंचाने का प्रयास किया है। मिनिएचर शीट और शीटलेट्स के रूप में जारी इन डाक टिकटों में सीता स्वयंवर, राम वनवास, भरत मिलाप, केवट प्रसंग, जटायु संवाद, शबरी संवाद, अशोक वाटिका में हनुमान–सीता संवाद, राम सेतु निर्माण, संजीवनी ले जाते हनुमान, रावण वध व भगवान राम के

राजगद्दी पर बैठने के आकर्षक दृश्य समाहित हैं। 65 रुपये के इस स्मारक डाक टिकट सेट में राज्याभिषेक वाला डाक टिकट 15 रुपये का तो अन्य सभी 10 डाक टिकट 5 रुपये के हैं। राम–सीता स्वयंवर से लेकर भगवान राम के अयोध्या में राज्याभिषेक तक के प्रसंगों को इन डाक टिकटों पर देखकर ऐसा एहसास होता है मानो पूरा रामराज ही डाक टिकटों पर उतर आया हो।

श्री राम जन्मभूमि मंदिर, अयोध्या के भूमि पूजन एवं शिलान्यास कार्यक्रम को अविस्मरणीय बनाने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 5 अगस्त, 2020 को अयोध्या में 'श्री राम जन्म. भूमि मंदिर के प्रतिरूप' पर आधारित डाक टिकट जारी किया। प्रधानमंत्री ने इसके साथ ही 'रामायण विश्व महाकोश' पर एक विशेष डाक आवरण व विरूपण भी जारी किया। यह कस्टमाइज्ड डाक टिकट और विशेष आवरण भारतीय डाक विभाग और उत्तर प्रदेश शासन के संस्कृति विभाग के अधीन अयोध्या शोध संस्थान के संयुक्त तत्वाधान में जारी किया गया। इस कस्टमाइजड डाक टिकट की 5 हजार शीट्स मुद्रित की गयीं जिनमें कुल 60 हजार डाक टिकट उपलब्ध हैं। **'ग्लोबल एनसाइक्लोपीडिया ऑफ द रामायण'** पर जारी किए गए विशेष आवरण में विभिन्न काल खंडों एवं विभिन्न देशों में मिलने वाले रामायण संस्कृति के प्रमाणिक साक्ष्यों की जानकारी दी गयी है।

अयोध्या और श्री राम एक दूसरे के पर्याय हैं। अयोध्या में होने वाली हर गतिविधि श्री राम के ही इर्द–गिर्द घूमती है। ऐसे में डाक टिकटों के साथ ही श्री राम और उनसे जुड़े कथानकों पर डाक विभाग द्वारा विशेष आवरण और विरूपण भी जारी किये गए हैं। अयोध्या में प्रति वर्ष होने वाले 'दिव्य दीपोत्सव' को यादगार बनाने के लिए डाक विभाग द्वारा विशेष आवरण जारी किये गए हैं। अयोध्या में आयोजित डाक टिकट प्रदर्शनी 'अवधपेक्स' के दौरान 5 जनवरी, 2019 को 'राम की पैड़ी' पर विशेष आवरण जारी किया गया। इसी कड़ी में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ ने अयोध्या शोध संस्थान के संग्रहालय में कर्नाटक शैली की कोदण्ड राम मूर्ति का एक भव्य कार्यक्रम में अनावरण किया और इस अवसर को यादगार बनाने हेतु उन्होंने भारतीय डाक विभाग द्वारा अयोध्या शोध संस्थान, तुलसी स्मारक भवन पर 7 जून, 2019 को एक विशेष आवरण एवं कोदण्ड राम की मूर्ति के अंकन वाला विशेष विरूपण जारी किया। रामायण कॉन्क्लेव के शुभारम्भ अवसर पर 29 अगस्त, 2021 को भारत के राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने "अयोध्या शोध संस्थान द्वारा वैश्विक स्तर पर अयोध्या की पारम्परिक रामलीला का मंचन' पर विशेष आवरण का विमोचन किया। यह विशेष आवरण पूरे विश्व में अयोध्या की पारम्परिक रामलीला मंचन का प्रसार करते हुए पर्यटन को बढ़ावा देने में मददगार है।

आजादी के अमृत महोत्सव के क्रम में डाक विभाग द्वारा ललित कला अकादमी, अलीगंज, लखनऊ में आयोजित 12वीं राज्य स्तरीय डाक टिकट प्रदर्शनी 'यूफिलेक्स 2022' का उदघाटन करते हुए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ ने 15 अक्टूबर, 2022 को 'श्रीराम वन गमन पथ' पर 14 विशेष आवरण व विरूपण का एक विशेष सेट एवं डेफिनिटिव स्टाम्प थीम पैक का विमोचन किया। श्री राम वन गमन से संबंधित यह सभी 14 स्थान उत्तर प्रदेश से संबंधित हैं – अयोध्या, तमसा नदी तट, सूर्य कुण्ड (सभी अयोध्या), सीता कुण्ड (सुल्तानपुर), देव घाट (प्रतापगढ़), श्रृंगवेरपुर, राम जोईटा, महर्षि भारद्वाज आश्रम, अक्षयवट (सभी प्रयागराज), सीता पहाड़ी, महर्षि वाल्मीकि आश्रम, कामदगिरि, रामशैय्या, रामघाट (सभी चित्रकूट)। निश्चितत: ये विशेष डाक आवरण न सिर्फ देश के भीतर बल्कि वैश्विक स्तर पर भी सांस्कृतिक संदेशवाहक का कार्य करते हैं।

हमारे देश में रावण बुराई का प्रतीक है और श्री राम अच्छाई के। तमाम ग्रंथों में रावण को महिमा–मंडित भी किया गया है। ग्रंथों में यह भी उल्लेखित है कि रावण प्रकांड पंडित और परम शिव भक्त भी था। बुराई को रावण की संज्ञा दी जाती है। विजयदशमी पर्व बुराई पर अच्छाई की जीत प्रतीक है। यह दर्शाता है कि बुराई के भले कितने भी सिर क्यों न हो, अच्छाई के आगे सब झुक भी जाते हैं और कट भी जाते हैं। ऐसे में भारतीय डाक विभाग ने रावण के दस सिर वाले मुखौटे पर भी 15 अप्रैल, 1974 को 2 रुपये का डाक टिकट जारी किया। भारतीय मुखौटों की श्रृंखला के तहत 15 अप्रैल, 1974 को डाक विभाग ने सूर्य, चंद्रमा, नरसिंह और रावण पर डाक टिकट जारी किये। ये डाक टिकट क्रमशरू 20 पैसे, 50 पैसे, 1 रुपये और 2 रुपये के मूल्यवर्ग में जारी किये गए।

श्री राम का चरित्र सिर्फ भारत ही नहीं, बल्कि कई देशों की सभ्यताओं और संस्कृतियों को प्रभावित करता है। बंगाल से बाली तक और तमिलनाडु से तिब्बत तक सबके अपने राम हैं और अपनी रामायण। कहते हैं कि दुनिया भर में अपने अलग–अलग पाठों के साथ लगभग 300 रामायण मौजूद हैं। भारत के विभिन्न अंचलों की बात करें तो 100 से ज्यादा तरह की रामायण यहाँ प्रचलित हैं। हैरतअंगेज तरीके से इन रामायणों में पात्र, कथानक और घटनाएं न सिर्फ बदल जाती हैं बल्कि अपना देशज स्वरुप और आंचलिकता भी दिखाती हैं। साहित्य और रंगमंच की दृष्टि से राम कथा विश्व के अधिकांश देशों में पहुँच स्थापित करती है। राम– कथा के सूत्र भारत के बाहर श्रीलंका, नेपाल, इंडोनेशिया, मलेशिया, थाईलैंड, लाओस, जापान, चीन, वियतनाम, सूरीनाम, कंबोडिया और म्यांमार इत्यादि देशों तक भी व्याप्त हैं। मुस्लिम बहुल देश इंडोनेशिया में श्री राम आज भी प्रेरक व्यक्तित्व हैं। थाईलैंड में भले ही बौद्ध धर्म की बहुलता हो, परन्तु वहाँ के राजा को राम का वंशज माना जाता है। यही कारण है कि विश्व के कई देशों ने श्री राम से जुड़े विभिन्न प्रसंगों पर डाक टिकट जारी कर उनके कथानक और विचारों को न सिर्फ आत्मसात किया है, बल्कि डाक टिकटों के माध्यम से उन विचारों और आदर्शों को देश–दुनिया के कोने–कोने में प्रचारित–प्रसारित किया है।

नेपाल द्वारा जारी डाक टिकट : नेपाल के डाक विभाग ने 18 अप्रैल, 1967 को रामनवमी के पावन पर्व पर 15 पैसे का डाक टिकट जारी किया। इस डाक टिकट में भगवान राम और सीता मां को दिखाया गया है। सन् 1991 में जारी डाक टिकट में भगवान राम एवं जानकी विवाह मण्डप (जनकपुर) को दर्शाया गया है।

इंडोनेशिया द्वारा जारी डाक टिकट : मुस्लिम बहुल्य देश इंडोनेशिया में रामायण को 'काकविन रामायण' कहा जाता है। 15 जून, 1962 को चतुर्थ एशियाई खेल पर जारी डाक टिकट में भगवान राम को अपने दिव्य धनुष के साथ दिखाया गया है। 1962 में ही देवी सीता, हनुमान, जटायु, रावण, मारीच पर भी डाक टिकट जारी किये गये । 24 जनवरी सन् 2016 में जारी डाक टिकट में हनुमान जी को लंका जलाते हुए दिखाया गया है।

कम्बोडिया द्वारा जारी डाक टिकट : 13 अप्रैल सन् 2006 में जारी डाक टिकट में भगवान राम के पुत्र लव और कुश को तीरंदाजी का अभ्यास करते हुए दिखाया गया है। सन् 2006 में जारी डाक टिकट में राम एवं सीता को दिखाया गया है।

थाईलैंड द्वारा जारी डाक टिकट : सन् 1996 में जारी की गई इन डाक टिकटों में राम को मारीच का शिकार करते हुए दिखाया गया है। 2 अगस्त 2005 को जारी टिकट में राम की सीता से मुलाकात, समुद्र पार कर लंका में वानर सेना का प्रवेश एवं राम रावण युद्ध को दिखाया गया है। सन् 1981 में जारी टिकट में इन्द्रजीत मेघनाद के मुखौटे को दिखाया गया है।

लाओस द्वारा जारी डाक टिकट : सन् 1969 में जारी की गई टिकटों में जटायु और रावण के बीच द्वंद्व को दर्शाया गया है और इसी वर्ष जारी एक अन्य टिकट में सीता को अग्नि परीक्षा देते हुए दिखाया गया है। अक्टूबर 1955 में जारी डाक टिकट में भगवान राम एवं सीता को दिखाया गया है। सन् 1971 में जारी डाक टिकट में हनुमान एवं मछली का युद्ध दर्शाया गया है। सन् 2004 में जारी टिकट में राम बाली को मारते हुए दिखाया गया है।

डाक टिकट को नन्हा राजदूत भी कहा जाता है। देश–दुनिया की सैर करते हुए ये डाक टिकट किसी भी देश की सभ्यता, संस्कृति, विरासत की परम्पराओं को आगे बढ़ाते हुए सांस्कृतिक संदेशवाहक की भूमिका निभाते हैं। विश्व भर के डाक विभाग ने रामायण के विभिन्न पहलुओं पर डाक टिकटों की सीरीज जारी करके श्री राम की आध्यात्मिकता और ऐतिहासिकता को वैश्विक स्तर पर समृद्ध किया है। भगवन श्री राम पर जारी डाक टिकट दुनिया भर के डाक टिकट संग्राहकों के लिए एक अमूल्य निधि की तरह है। देश–दुनिया से आने वाले पर्यटक और शोधार्थी इन डाक टिकटों के माध्यम से श्री राम और अयोध्या की पावन भूमि के महत्व को समझ रहे हैं। भगवान श्रीराम से जुड़ी ऐतिहासिक एवं आध्यात्मिक महत्व की चीजों को सामने लाकर भारतीय संस्कृति को निरंतर समृद्ध कर रहा है। हर डाक टिकट के पीछे एक कहानी छिपी है और इससे युवा पीढ़ी को रूबरू कराने की जरूरत है। इससे युवा पीढ़ी को भी अपनी संस्कृति एवं विरासत से जुड़ने में मदद मिलेगी।

भगवान श्री राम की महिमा भारत ही नहीं वैश्विक स्तर पर व्याप्त है। श्री राम को समझना इतना आसान नहीं। एक रोचक लोककथा के अनुसार हनुमान जी श्रीराम के हाथ से गिरी अंगूठी खोजते हुए पातालपुर पहुँच जाते हैं तो वहां का राजा उन्हें हजारों अंगूठियाँ दिखाता है। हर अंगूठी एक–सी लगती है। हनुमान जी यह देखकर बेहद आश्चर्यचकित होते हैं। तब पाताल लोक का राजा उन्हें बताता है कि इनमें से हर अंगूठी राम की है, बस वे सभी अलग–अलग समय हुए। जितनी अंगूठियां, उतने राम !!

नववर्ष के दोहे

प्रो. डॉ. शरद नारायण खरे
प्राचार्य
शासकीय जेएमसी महिला महाविद्यालय
मंडला (म.प्र.)

नया हौसला धारकर, कर लें नया धमाल।
अभिनंदित करना हमें, सचमुच में नव काल।।

नवल चेतना संग ले, करें अग्र प्रस्थान।
होगा आने वाला वर्ष तब, सचमुच में आसान।।

वंदन करने आ रहा, एक नया दिनमान।
कर्म नया, संकल्प नव, गढ़ लें नया विधान।।

बीती बातें भूलकर, आगे बढ़ लें मीत।
तभी हमारी जिन्दगी, पाएगी नव जीत।।

कटुताएँ सब भूलकर, गायें मधुरिम गीत।
तब सब कुछ मंगलमयी, होगा सुखद प्रतीत।।

देती हमको अब हवा, एक नया पैगाम।
पाना हमको आज तो, कुछ चोखे आयाम।।

कितना उजला हो गया, देखो तो दिन आज।
है मौसम भी तो नया, बजता है नव साज।।

पायें मंजिल आज तो, कर हर दूर विषाद।
नहीं करें हम वक्त से, बिरथा में फरियाद।।

साहस से हम लें खिला, काँटों में भी फूल।
दुख पहले सुख बाद में, यही सत्य का मूल।।

अभिनंदित हो वर्ष नव, बिखरायें उल्लास।
कभी न भाई मंद हो, पलने वाली आस।।

गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फाउण्डेशन
www.gssfoundation.org
editor.adhyatmsandesh@gmail.com
m.facebook.com/अध्यात्म संदेश
मासिक
अध्यात्म संदेश
जनकल्याण एवं राष्ट्रोत्थान को समर्पित धर्म, संस्कृति, अध्यात्म चिंतन का मासिक ई–पत्र

स्थायी स्तम्भ

डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह
भू–वैज्ञानिक, पर्यावरणविद्
एवं हिन्दी रचनाकार, पटना

पर्यावरण चिन्तन 11

स्वच्छ–पर्यावरण स्वस्थ जीवन का आधार है, जो अनादिकाल से पृथ्वी पर मानव एवं सम्पूर्ण जीव–जगत को प्रश्रय देता आधार रहा है। भविष्य का जीवन भी इसी पर निर्भर करता है। यही मुख्य कारण है कि इसे स्वच्छ और संतुलित रखना नितान्त आवश्यक है। लेकिन विकास के पागल घोडे अपने प्रदूषित पावों से रौंदना छोडता नहीं। छोडे कैसे? हमारा लोभ–स्वार्थ इसके दो अतिरिक्त पांव जो बन गये हैं। इतर इसके वर्तमान में आजकल वैश्विक तापन और जलवायु परिवर्तन का प्रकोप प्रदूषण की आग में घी जैसा काम कर रहा है। और हम अपने ही जीवन–अस्थित्त्व से खिलवाड करने में पीछे नहीं रहते।

वर्ष 2023 वायु प्रदूषण से ग्रसित रहा। खासकर देश की राजधानी दिल्ली की हालत दयनीय रहीं । जानते हुए पंजाब और हरियाणा के खेतों में पराली को जलाना छोड़े नहीं। जीवाश्म ईंधन की खपत में कोई कमी नहीं – किये। सर्दी के आहट होते ही या आहट के साथ ही महीने भर से भी ज्यादा समय जहरीली हवा में साँस लेते और राजनीति की रोटी सेंकते रहे। स्थायी निदान को लेकर कोई गम्भीरता कहीं किसी स्तर पर नहीं दिखी। अपनी–अपनी नियति पर वायु प्रदूषण का दंश झेलने को मजबूर रहे। मौसम बदला। दिसम्बर महीना में राहत की कुछ किरण देखने को मिली।

वायु–प्रदूषण का मापन वायु की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। गुणवत्ता की ईकाई 'एक्यूआई' से आँकी जाती है । शून्य से 50 एक्यूआई तक की हवा ही 'स्वच्छ' होती है। इसके बाद 51 से 100 एक्यूआई तक 'संतोषजनक', 101 से 200 एक्यूआई तक 'मध्यम', 201 से 300 एक्यूआई तक 'खराब', 301 से 400 एक्यूआई तक 'बहुत खराब' और 401 से 500 एक्यूआई तक की हवा को 'गम्भीर' श्रेणी में आती है। औसतन स्थिति बहुत ही खराब पायी गई। यही कारण रहा कि विशेषज्ञ चेताते रहे कि दिल्ली– एनसीआर और देश के अन्य इलाकों की जहरीली हवा श्वांस सम्बन्धित रोग बढ़ा रही है, जिनसे फेफड़ों में इन्फेक्शन ही नहीं, कैंसर भी हो सकता है। यह हवा बच्चों और बुजुर्गो के लिये और भी खतरनाक है। सर्वोच्च न्यायालय ने खतरनाक वायु प्रदूषण के लिये दिल्ली सरकार की नाकामी को जिम्मेदार ठहराया है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के अनुसार भारत में तीन–चौथाई से अधिक जहरीली हवा में साँस ले रहें हैं। वैश्विक रिपोर्ट के अनुसार विश्व के 50 प्रदूषित शहरों में 39 भारत से हैं। इतर इसके साफ है कि सरकारों और लोगों की उदानसीनता के कारण प्रदूषित होने वाले छोटे शहरों की सूची दिन पर दिन लम्बी होती जा रही है। यदि हम समय रहते नहीं जागृत हुए तो विकास की दौड का तो पता नहीं, परन्तु जिन्दगी की दौड में अवश्य पिछड जायेंगे। यह भी ज्ञातव्य है कि विकास और स्वच्छ– पर्यावरण में छत्तीस अंक जैसा सम्बन्ध है। एक बढ़ेगा तो दूसरा घटेगा । विकास से सम्बंधित नीतियों पर पुनर्विचार नहीं किया गया तो आनेवाला समय बडा कठिन और कष्टों से भरा होगा।

अपने देश भारत में वायु प्रदूषण का सबसे बडा स्रोत और कारण परिवहन क्षेत्र है, जो वायु प्रदूषण में 25 से 30 प्रतिशत का योगदान करता है। जीवाश्म ईंधन से चलने वाले पावर प्लांट, जंगल की आग, उद्योग, निर्माण–कार्य और शहरीकरण आदि भी जिम्मेदार कारण हैं। वायु– प्रदूषण के बीच मजदूरों के स्वास्थ्य पर असर पड़ता है। मजदूरों के काम करने की क्षमता में ह्रास होता है, फल– स्वरूप उत्पादन में गिरावट आती है और देश की सकल आर्थिकी पर विपरीत प्रभाव पडता है। स्वास्थ्य–व्यय बढ़ जाता है। खाद्य–श्रृंखला प्रभावित होती है। यह समाज के लिये आवश्यक कार्य हेतु पारिस्थितिकी तंत्र की क्षमता को कम कर देता है। एक अनुमान के अनुसार केवल वायु प्रदूषण से देश को लगभग 150 अरब डालर होता है। इस तरह आर्थिकी पर भी वायु प्रदूषण का कुप्रभाव पडता है। वायु प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और जैव–विविधता ह्रास का गहरा सम्बन्ध है। इस संयुक्त खतरों के सफल नियंत्रण के लिये एक नियोजित रणनीति एवं उससे जुड़े विकल्पों पर मिलकर कार्य करना होगा। सबसे आसान और सस्ता विकल्प है सघन पौधारोपण और वृक्ष–संरक्षण

क्रमशः

मासिक
अध्यात्म संदेश
जनकल्याण एवं राष्ट्रोत्थान को समर्पित धर्म, संस्कृति, अध्यात्म चिंतन का मासिक ई–पत्र
editor.adhyatmsandesh@gmail.com
m.facebook.com/अध्यात्म संदेश
गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फ़ाउण्डेशन
www.gssfoundation.org

डॉ. निशा नंदिनी भारतीय
तिनसुकिया, असम

मैं भारत की भगवा नारी

खून पसीने की आजादी
व्यर्थ नहीं मैं होने दूंगी।
मैं भारत की भगवा नारी
जगद्गुरु का भाव भरूंगी।

मैं झांसी रानी लक्ष्मीबाई
कांधे से कांधा जोड़ चलूंगी।
दामोदर को बांध पीठ पर
राष्ट्र हित आगे बढ़ूंगी।
मैं भारत की भगवा नारी
जगद्गुरु का भाव भरूंगी।

मैं वीरांगना कनकलता
भारत पर आंच न आने दूंगी।
हाथों में लेकर मैं तिरंगा
युद्ध–भूमि में कूद पड़ूंगी।
मैं भारत की भगवा नारी
जगद्गुरु का भाव भरूंगी।

मैं शिक्षिका सावित्रीबाई
हर नारी शिक्षित करूंगी।
कलम कागज हाथ में लेकर
भारत ऊर्जावान करूंगी।
मैं भारत की भगवा नारी
जगद्गुरु का भाव भरूंगी।

मैं देशरत्न भीकाजी कामा
कुरीतियों के खिलाफ लड़ूंगी।
लहराकर देश–विदेश तिरंगा
अपने भारत का मान करूंगी।
मैं भारत की भगवा नारी
जगद्गुरु का भाव भरूंगी।

मैं नारी सुचेता कृपलानी
स्वतंत्र भारत की शान रखूंगी।
वंदे मातरम् गीत गाकर
घर–घर अलख जगाऊंगी।
मैं भारत की भगवा नारी
जगद्गुरु का भाव भरूंगी।

मैं कोकिला सरोजिनी नायडू
महिलाओं को आगे लूंगी।
लेखनी लेकर हाथ में
राष्ट्रहित लेखन करूंगी।
मैं भारत की भगवा नारी
जगद्गुरु का भाव भरूंगी।

मैं बालिका उषा मेहता
दुश्मनों से लोहा लूंगी।
गांधी के आदर्श जोड़कर
भारत की रक्षा करूंगी।
मैं भारत की भगवा नारी
जगद्गुरु का भाव भरूंगी।

मैं विजय लक्ष्मी पंडित
कुशल राजनीतिज्ञ बनूंगी।
हरपल भारत रक्षक बनकर
गुलाम भारत न होने दूंगी।
मैं भारत की भगवा नारी
जगद्गुरु का भाव भरूंगी।

मैं कित्तूर रानी चेन्नम्मा
प्रतिद्वंदी से द्वंद करूंगी।
समरभूमि में शस्त्र उठाकर
अरि को आड़े हाथ धरूंगी।
मैं भारत की भगवा नारी
जगद्गुरु का भाव भरूंगी।

मैं बा कस्तूरबा गांधी
भारत को स्वच्छ स्वस्थ रखूंगी।
अनुशासन की सीख देकर
हर नागरिक जागरुक करूंगी।
मैं भारत की भगवा नारी
जगद्गुरु का भाव भरूंगी।

श्रीराम नाम अनमोल है

डॉ. नरेन्द्रकुमार मेहता
'मानसश्री' मानस शिरोमणि,
विद्यावाचस्पति एवं विद्यासागर
उज्जैन, म.प्र.

एक महात्मा किसी नगर के बाहर रहा करते थे। उनका एक अनन्य भक्त श्रद्धापूर्वक प्रतिदिन उनके पास आता था और उनकी सेवा सुश्रूषा बड़े ही प्रेमपूर्वक करता था। उसकी श्रद्धा और सेवा से महात्माजी अत्यधिक प्रसन्न हो गए और उससे बोले– तू ईश्वर का भक्त है, तू साधु–संतों का सत्संग करता है, शास्त्र के वचनों तथा उसके मार्ग पर श्रद्धापूर्वक विश्वास करता है। अतः तेरी सरलता और सेवा प्रशंसनीय है। तू दूसरों जैसा व्यर्थ के कुतर्क नहीं करता है, साथ ही साथ तुझमें दूसरों के अहित करने की भावना भी नहीं रहती है। ये सब इस संसार में चरित्रवान व्यक्ति के लिए आदर्श गुण है। यह सब गुण ईश्वर की कृपा से ही उसके भक्त में सहज आ जाते हैं। आज मैं तुझको इन सद्गुणों से सम्पन्न तथा योग्य मानकर प्रसन्नता के साथ एक अत्यन्त ही गोपनीय महामंत्र दे रहा हूँ। इस महामंत्र का वास्तविक महत्व कोई जन साधारण नहीं जानता है। तुम इसे किसी को बतलाना–देना मत। इतना कहकर उन महात्माजी ने 'राम' उस भक्त के कान में कह दिया। बस फिर क्या था वह भक्त रामनाम के जप में संलग्न हो गया। वह दिन–रात रामनाम का जप करने लग गया। वह भक्त प्रतिदिन गंगास्नान करने जाता था। एक दिन वह गंगा स्नान कर लौट रहा था कि उसका ध्यान उन लोगों की ओर गया, जो गंगा स्नान करके लौटते समय जोर–जोर से 'राम–राम' बोल रहे थे। उनके सबके द्वारा 'राम' शब्द सुनते ही उस भक्त को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसके मन में विचार आया कि महात्माजी तो यह कहते थे कि यह परम गुप्त ही नहीं महामंत्र है किन्तु इसे तो सब लोग जोर–जोर से सबके सामने बोल रहे हैं। अब इस महामंत्र की गोपनीयता भंग हो गई।

भक्त घर भी नहीं गया तथा सीधा महात्माजी की कुटिया पर जा पहुँचा तथा अपने मन का सम्पूर्ण सन्देह महात्माजी को कह सुनाया। महात्माजी उस भक्त की भावना और मनोदशा को जान गए। महात्माजी ने कहा– ठीक है, मैं तुम्हारे सन्देह को मिटा दूँगा, तुम व्यर्थ में क्यों चिन्ता करते हो। सबसे पहले मेरा एक अत्यन्त आवश्यक कार्य कर दो। इतना कहकर महात्माजी ने अपनी झोली से एक चमकता हुआ काँच–सा निकालकर उस भक्त को दिया तथा उससे कहा कि वत्स! इसको तुम बाजार में लेकर जाओ और इसका मूल्य अंकवा (मूल्यांकन) कर लाओ। ध्यान रहे कि इसको किसी भी मूल्य पर बेच मत आना। बस तुम्हें इसका सही–सही मूल्य पता लगाना है कि आखिर इसका मूल्य क्या है?

उस भक्त ने अपने सन्देह को महात्माजी के पास छोड़ दिया तथा उनकी आज्ञानुसार उस काँच का मूल्य अँकवाने के लिए वह तुरन्त बाजार की ओर चल पड़ा। बाजार में प्रवेश करते ही उसे एक साग–भाजी बेचने वाली मिली। भक्त ने उक्त काँच उसे दिखाकर उसका मूल्य पूछा। साग–भाजी बेचने वाली ने बड़े सोच विचार कर कहा कि यह काँच बड़ा ही चमकदार है अतः बच्चों के खेलने के लिए बहुत बढ़िया होगा। यह सोचकर साग–भाजी बेचने वाली महिला ने उस भक्त से कहा– यह काँच मुझे दे दो और बदले में दो सेर आलू ले जाओ। भक्त ने वह काँच उससे वापस ले लिया और वहाँ से चल दिया। आगे जाने पर उसे एक सुनार की दुकान दिखाई दी भक्त ने सुनार को काँच दिखाकर मूल्य पूछा। सुनार ने काँच को देखकर सोचा कि यह देखने में नकली हीरा जैसा लगता है, अतः इसका मूल्य सौ रुपया देकर लेने में कोई हानि नहीं होगी। सुनार ने भक्त को उस काँच का मूल्य सौ रुपया बता दिया। यह सुनकर भक्त सुनार से काँच लेकर वहाँ से चल दिया। भक्त आगे चलकर एक महाजन की दुकान पर गया और काँच को दिखाया। महाजन ने देखा और सोचा– यह तो नकली हीरा है किन्तु इतना सुन्दर है कि इसे कौन नकली कहेगा। महाजन ने सोचा कि हमारे घर की बहू–बेटियों को पहने देखकर तो सभी इसको असली कहेंगे। इतना सोच विचार करने के बाद महाजन ने एक हजार रुपए मूल्य देने को कहा इतना सब कुछ सुनकर वह पुनः वहाँ से चल पड़ा। भक्त सोच में पड़ गया तथा उत्साह से भर गया। भक्त काँच के मूल्य की जाँच जहाँ भी करता वहाँ उसका मूल्य बढ़ते ही जा रहा था। वह आश्चर्यचकित हो गया।

भक्त एक जौहरी की दुकान पर गया। जौहरी ने काँच को देखकर मन ही मन में सोचा कि यह लगता तो हीरा ही है किन्तु इतना बड़ा उच्च कोटि का हीरा उसने अपने जीवन में कभी नहीं देखा। सम्भवतः हीरा न भी हो किन्तु यदि कहीं हीरा हुआ तो इसका मूल्य बहुत अधिक होगा। अतएव एक लाख रुपए तक में इसे खरीद लेना ठीक होगा। अतः जौहरी ने काँच का मूल्य एक लाख रुपए भक्त को बताकर देने को कहा। भक्त ने जौहरी से काँच वापस ले लिया। भक्त बड़े ही सोच विचार में पड़ गया कि जहाँ भी वह जाता है वहाँ इसका मूल्य बढ़ ही रहा है। तदनन्तर वह भक्त नगर के ख्याति प्राप्त सबसे बड़े जौहरी के वहाँ काँच को ले गया। उस जौहरी ने अत्यन्त सूक्ष्म तरीके से जाँच कर उसे परख कर कहा भैय्या! इतना बढ़िया हीरा तुम्हें कहाँ से मिल गया? अरे यह तो अमूल्य है। इतना भव्य और बड़ा हीरा मैंने आज तक कभी नहीं देखा और परखा। उस जौहरी ने कहा कि यह हीरा इतना मूल्यवान है कि जौहरियों तथा बड़े–बड़े राजाओं के खजाने के सारे हीरों का जितना दाम हो सकता है, वह सब मिलाकर भी इसके मूल्य के बराबर नहीं हो सकता। वास्तविक रूप में इसका मूल्य आँकना किसी की बुद्धि से बाहर की बात है। यह उस काँच तथा अब हीरा ज्ञात हो गया की चरम सीमा है। यह सोचकर भक्त महात्माजी की कुटिया की ओर उससे हीरा वापस लेकर दौड़ पड़ा।

महात्माजी ने भक्त से काँच का मूल्य पूछा। भक्त ने कहा– गुरुदेव! यह तो अमूल्य हीरा है। साग–भाजी वाली ने दो सेर आलू इसका मूल्य बताया। सुनार ने इसके बदले में सौ रुपए देने चाहे। महाजन ने इसका मूल्य एक हजार रुपए आँके। जौहरी ने एक लाख रुपए कहा तथा नगर के ख्यातिप्राप्त सबसे बड़े जौहरी ने यह कहा कि यह तो अमूल्य है। देश के सारे हीरे मिलकर भी मूल्य में इस हीरे की बराबरी नहीं कर सकते। भक्त ने कहा– गुरुदेव! मैं तो आपकी आज्ञानुसार आपका काम कर आया हूँ। अब तो आप मेरा सन्देह दूर कीजिए। महात्माजी ने हँसते हुए कहा– वह सन्देह तो दूर कर चुका हूँ। यह बात भक्त की समझ में नहीं आई। उसने पूछा गुरुदेव यह कैसे? महात्माजी ने बड़ी मधुर एवं स्नेहपूर्ण वाणी से कहा– अभी तुमको प्रत्यक्ष उदाहरण दिया जा चुका है। तुम हीरा लेकर नगर के बाजार में गए थे। किसी ने दो सेर आलू, किसी ने सौ रुपए, किसी ने एक हजार रुपए, किसी ने एक लाख रुपए मूल्यांकन किया। किन्तु इन सबका मूल्यांकन अलग–अलग था। किसी ने तो अनमोल भी कहा है।

इसी प्रकार रामनाम अमूल्य है– अनमोल है। इसका सच्चा मूल्य आँका नहीं जा सकता और तो और स्वयं राम भी इसका मूल्य नहीं बता सकते–

कहँ कहँ लगि नाम बड़ाई। रामु न सकहिं नाम गुन गाई।।

श्रीरामचरितमानस बाल. २६–४

श्रीरामनाम अमूल्य है इसको वही जान सकता है जो कि उस जौहरी से तीव्र बुद्धि एवं जानकार हो। श्रीराम को वही व्यक्ति जान सकता है जिस पर श्रीराम की कृपा होती है।

राम कृपा बिनु सुनु खगराई। जानि न जाइ राम प्रभुताई।।

श्रीरामचरितमानस उत्तरकाण्ड ९६ (क)३

काक भुशुण्डीजी पक्षिराज गरुड़जी से कहते हैं कि हे पक्षिराज गरुड़! सुनिए श्रीरामजी की कृपा बिना श्रीरामजी की प्रभुता नहीं जानी जा सकती है।

शिवजी ने भी पार्वतीजी को श्रीरामजी की भक्ति एवं कृपा के बारे में कहा है–

यह सुभ चरित जान पै सोई। राम कृपा कै जापर होई।।

श्रीरामचरितमानस बाल. ११६–३

हे पार्वती यह शुभ चरित वही जान सकता है, जिस पर श्रीरामजी की कृपा हो। इस प्रकार देखा जाता है कि श्रीरामजी की कृपा हो जाने पर इस संसार में दूसरे भी कृपा करते हैं। श्रीरामनाम लेने वाले बहुत लोग हैं पर उसका मूल्य (कीमत) जानने वाला बिरले ही हैं। भक्त का सारा सन्देह जाता रहा। भक्त ने अत्यधिक श्रद्धा से गुरुदेव (महात्माजी) के चरणों में प्रणाम किया तथा वह अधिक निष्ठा–श्रद्धा से रामनाम लेने का दृढ़ संकल्प लेकर घर लौट गया।

नहि रामसमरू कश्चिद् विद्यते त्रिदशेष्वपि।

वा.रा. सुन्दरकाण्ड ११–३

देवताओं में भी कोई ऐसा नहीं जो श्रीराम की समानता कर सके।

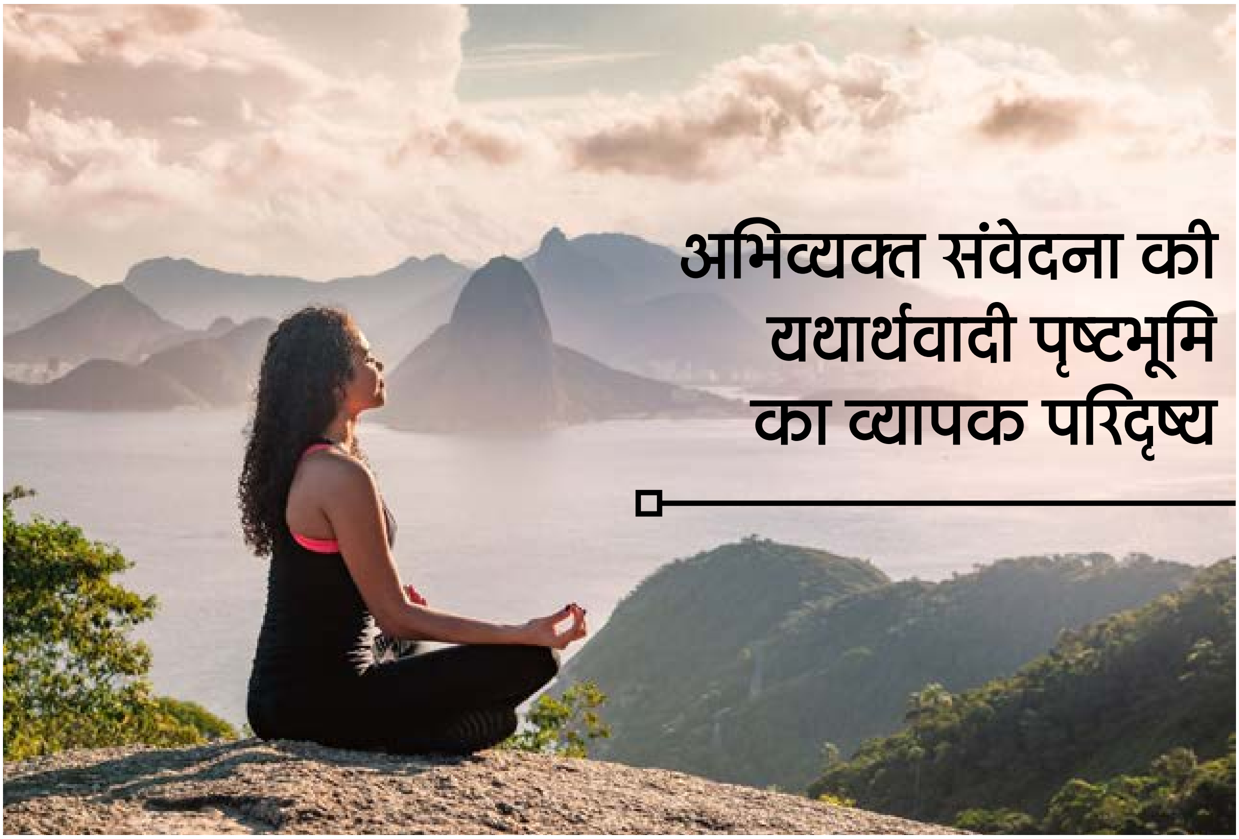

अभिव्यक्त संवेदना की यथार्थवादी पृष्ठभूमि का व्यापक परिदृष्य

डॉ. अजय शुक्ला
गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल ह्यूमन राइट्स
मिलेनियम अवार्ड
डायरेक्टर, स्प्रीचुअल रिसर्च
स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर
देवास, मध्य प्रदेश

" जीवन एक सतत् चलने वाली अनुभूतिपरक प्रक्रिया है जो विभिन्न घटनाक्रमों में नवीनतम सीख को स्वीकार करने के लिए प्रेरित करती है और शिक्षा को स्वरुप में लाने के लिए कहीं – कहीं हमें बाध्यता के बंधन में स्वाभाविक रूप से बंधना पड़ता है परन्तु इस परिवेश के माध्यम से प्रेरणायुक्त विचारों को आन्तरिक धरातल की अनुभूति से अंतर्मन द्वारा सकारात्मक संकेत मिलने पर जीवन के व्यावहारिक पहलुओं को आत्मसात करना महत्वपूर्ण बात हो जाती है । इस प्रकार मानव द्वारा स्थायी सुख एवं शांति की प्राप्ति से जुड़े मसलों को जीवन में सम्मिलित होने की अनुमति मानवीय ह्रदय द्वारा प्राप्त हो जाती है, सामान्यतः मानव उस निश्चित परिस्थिति या घटनाक्रम अथवा इससे संलग्न व्यक्तियों द्वारा व्यावहारिक कर्म की सफलता हेतु अनेक प्रसंगों से उत्पन्न कल्याण युक्त श्रेष्ठ विचारों के प्रति आभार व्यक्त करता है जो व्यावहारिक पृष्ठभूमि की अनुभूति पर खरे उतर चुके हैं । "

क्रियाशील जीवन का निष्ठापूर्ण आरंभ : उद्देश्य की सार्थक सिद्धि को फलीभूत करने की उत्कंठा मानव ह्रदय में एक प्रकार का कभी न समाप्त होने वाला कोलाहल उत्पन्न कर देती है तथा इस ध्वनि के वेग पर पूर्ण एकाग्रचित अवस्था की बलिदानी स्थिति को न्यौछावर करके परिणाम प्राप्ति की प्रतीक्षा की जाए तो स्पष्ट समझ में आ जाएगा कि मानव मन की पुकार सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्ष के सम्मिश्रण हेतु कितनी बैचेन है परन्तु क्या यह बौखलाहट चाहत के अनुरूप परिणित हो जाएगी तो प्रत्युतर मिलेगा कि अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा ।

यह तथ्य यदि उजागर होकर हमारे समक्ष उपस्थित होता है तो यह मान लेना चाहिए कि जो सिद्धांत प्रतिपादित हुआ है उसके गर्भ में सत्य का व्यावहारिक धरातल अवश्य विद्यमान है अतरू समागम की पूर्ण सम्भावना तथा सिद्धि की निश्चितता ही इस बात का ठोस परिणाम है कि जब भी मानव जाति ने महान एवं अनुकरणीय इतिहास को रचना चाहा उसने 'मार्ग' को

पुरुषार्थ के सकारात्मक स्वरुप से खोज निकाला है ।

उस मार्ग पर मंजिल तक पहुँचने की पावन अभिलाषा को मानस – पटल पर लिपिबद्ध कर कठिनाईयों का बहादुरी से सामना करते हुए कभी पीछे मुड़कर न देखने का संकल्प ही मानव को सक्षम बनाने में मददगार बनता है एवं समस्त दुरूखों को सहन करते हुए अनुपम स्मृतियों की अनुभूति द्वारा परिश्रम से गतिमान अवस्था को जीवन में सुनिश्चित किया जाना चाहिए जिससे इस व्यावहारिक स्थिति को प्रत्यक्ष रूप से प्रमाणित कर क्रियाशील जीवन का – ' आरंभ ' पूर्ण निष्ठा के साथ किया जा सकता है ।

श्रेष्ठतम संस्कारों की अंकित छवि : संसार में मानव द्वारा स्थापित किये जाने वाले समस्त उत्कर्षों का आधार मानवीय कर्म है जो विभिन्न स्थिति एवं परिस्थिति में आपसी व्यवहार के फलस्वरूप दृष्टिगोचर होते हैं ऐसा नहीं है कि दूर से देखने मात्र से ही व्यवहार की कुशलता का आभास अन्य लोगों को हो जाता है बल्कि अनेक प्रसंगों व घटनाओं के समय व्यक्ति की व्यवहारिक समझ एवं निष्पक्ष सूझ – बूझ का परिचय मिलता है ।

तब चारों ओर के विभिन्न पहलुओं पर मानवता की अमिट छवि अंकित हो जाती है जो एक दृष्टांत बनकर सामाजिक ढांचे में एक सूत्र के रूप में उभरकर प्रकट होते हैं जिन्हें लोग अपनाने हेतु अपनी स्मृतियों में संजों लेते हैं और प्रयास करते हैं कि इस प्रकार के स्वर्णिम सूत्र हृदय में सदा के लिए अंकित हो जायें और हम जीवन में न्याय का साथ देते हुए सर्व से प्रेम कर सकें जिसमें छोटा– बड़ा, ऊँच– नींच, अपना– पराया इत्यादि कुण्ठित भावनाओं के लिए तनिक भी स्थान न रहे।

व्यावहारिक संबंधो का वास्तविक रूप हम आपके और आप हमारे बन जाएं जिसे मानवीय संवेदना के बोध स्वरुप यह स्वीकार किया जाता है कि यदि पराये अपने हो जाएं तो मनुष्य का सौभाग्य होता है अतः सदा यह प्रयास रहना चाहिए कि अपने तो अपने रहें हीं, पराएं भी अपने हो जाएं अर्थात् मनःस्थिति में केवल अपनाने की ही भावना उत्पन्न होती रहे तथा कभी हमारे शब्दकोष में पराये शब्द को प्रश्रय न मिले और यदि अपनत्व का भाव, पूर्ण सकारात्मक शैली में ग्रहण किया जाए तो स्पष्ट हो जाएगा कि श्रेष्ठतम संस्कारों की – 'अंकित' छवि ही मानस की वास्तविक धरोहर है ।

मानवीय गरिमा का अंकुरित स्वरूप : सत्संग की महिमा से बहुधा सम्पूर्ण जन– मानस परिचित रहता है परन्तु इसका वास्तविक अर्थ जानने का प्रयास किया जाए तो ज्ञात होगा कि 'सत्य का संग' अर्थात् सत्य की पहचान एवं जीवन में सत्य के साथ रहने का भरपूर साहस होना चाहिए क्योंकि सत्य की विजय तो अंत में होती है इसलिए जीवन संग्राम में मानव को अंत समय तक संघर्ष करते हुए पुरुषार्थ करना पड़ता है जिससे कर्म – क्षेत्र के अंतर्गत बहुसंख्यक चिंतन की धाराएं विपरीत दिशा में भी प्रेरित करती हैं ।

ऐसी स्थिति में संघर्षरत व्यक्ति के पथ – विचलन की सम्भावना बढ़ जाती है और मानव मन डांवाडोल होने लगता है तथा व्यक्ति द्वारा यह सोचा जाता है कि मेरे साथ तथा मेरे पीछे चलने वाले लोग संसार की धारा में धनोपार्जन करते हुए गतिशील हैं एवं मैं सत्य के सिद्धांतों की दुहाई देते हुए जीवन को बोझिल समझ, जी रहा हूँ ऐसा मेरे द्वारा आन्तरिक रूप से अनुभव किया जाता है तथा स्वयं का प्रस्तुतीकरण अपने साथियों के समक्ष इस प्रकार से करता हूँ कि वे कितने सुखी एवं भाग्यवान हैं तथा मुझे लगता है कि मैं जीवन में कुछ नहीं कर पाऊंगा।

इस प्रकार निजी मापदंड अर्थात् मानव की सफलता का पैमाना केवल धनोपार्जन को स्वीकार कर समझौतावादी दृष्टिकोंण को अपनाते हुए किसी भी प्रकार का श्रम करके धन का अर्जन करना सम्पूर्ण सफल होने का प्रतीक मान लिया गया है अतरू जीवन के विरोधाभास से मुक्त हो सत्य का सार्थक प्रयोग– 'सत्यम शिवम् सुन्दरम्' के महामंत्र की निरंतर स्मृति का अनुभव करते हुए श्रेष्ठ कर्मो द्वारा जीवन के उपवन में मानवीय गरिमा– 'अंकुरित' की जा सकती है।

आत्मिक अनुशासन में अप्रत्यक्ष अंकुश : बहुधा मानव अपनी समस्त शक्ति का विनियोजन किसी भी वस्तु, पदार्थ एवं इच्छाओं की प्राप्ति अथवा दमन करने में व्यय कर देता है फिर भी सत्य के मार्ग पर चलते हुए स्वयं को भार युक्त अर्थात् बोझिल समझता है और प्रयास की श्रृंखला में मानसिक तैयारी करता रहता है कि इस बार मैं संकल्प ले लूँगा कि कामनाओं का त्याग हमेशा के लिए कर दूँ परन्तु यदि नियंत्रण एवं त्याग के पश्चात् किसी भी वस्तु एवं पदार्थ अथवा व्यक्ति के प्रति आकर्षण बना हुआ है जो इस बात का परिणाम है कि वैराग्य वृति का अनुपालन पूर्ण रूप से नहीं किया जा सकता है।

यह भी सच है कि सूक्ष्म तक पहुँचने के लिए स्थूल से अपना प्रयास आरंभ करना होगा तभी हम सार्थक पुरुषार्थी की पंक्ति में स्वयं को शामिल कर सकेंगे और हमें इस बात के प्रति दृढ़ होना पड़ेगा कि जिन प्राप्तियों की ओर हम अग्रसर हो रहे हैं उनके अस्तित्व तथा स्थायित्व के बोध हेतु पुरुषार्थ के क्षेत्र में स्वयं को परखना होगा, अतः निर्धारित नियमों पर चलने के साथ– साथ उस मार्ग तक पहुँचने वाले लोगों के अनुभवी विचारों को सम्पूर्ण समादर एवं विनम्रता के साथ आत्मसात करना होगा।

दूसरी ओर स्वयं के कर्म को प्रधानता देकर हम केवल अपने अहम् को संतुष्ट कर सकते हैं इसलिए आवश्यकता है इस बात को गहराई से परखने की, जिससे कहीं हमारी मनःस्थिति इस बात के लिए बेचैन तो नहीं है कि अवसर मिले और अपने आन्तरिक सम्मान पाने की क्षणिक अभिलाषा को हम तृप्त कर लें, इस प्रकार इन्द्रिय सीमा से परे, अतिंद्रिय सुखों से मंजिल की प्राप्ति हेतु हमारे विश्वास में सार्थक वृद्धि हो सकेगी और तब स्वतरू ही लग जाएगा कर्मेन्द्रियों पर आत्मिक अनुशासन का अप्रत्यक्ष– 'अंकुश'।

वास्तविक प्रेरणा को अंगीकार करना : जीवन एक सतत् चलने वाली अनुभूतिपरक प्रक्रिया है जो विभिन्न घटनाक्रमों में नवीनतम सीख को स्वीकार करने के लिए प्रेरित करती है और शिक्षा को स्वरुप में लाने के लिए कहीं – कहीं हमें बाध्यता के बंधन में स्वाभाविक रूप से बंधना पड़ता है परन्तु इस परिवेश के माध्यम से प्रेरणायुक्त विचारों को आन्तरिक धरातल की अनुभूति से अंतर्मन

द्वारा सकारात्मक संकेत मिलने पर जीवन के व्यावहारिक पहलुओं को आत्मसात करना महत्वपूर्ण बात हो जाती है ।

इस प्रकार मानव द्वारा स्थायी सुख एवं शांति की प्राप्ति से जुड़े मसलों को जीवन में सम्मिलित होने की अनुमति मानवीय हृदय द्वारा प्राप्त हो जाती है, सामान्यतः मानव उस निश्चित परिस्थिति या घटनाक्रम अथवा इससे संलग्न व्यक्तियों द्वारा व्यावहारिक कर्म की सफलता हेतु अनेक प्रसंगों से उत्पन्न कल्याण युक्त श्रेष्ठ विचारों के प्रति आभार व्यक्त करता हैं जो व्यावहारिक पृष्ठभूमि की अनुभूति पर खरे उतर चुके हैं।

यह समस्त स्थिति उस समय निर्मित होती है जब मानवीय प्रयासों की श्रृंखला सकारात्मक दिशा में कार्य कर रही होती है परन्तु जीवन में कुरूपता का समावेश उस समय होने लगता है जब जनमानस परिस्थितियों एवं घटनाक्रमों द्वारा इस बात की खोज करने लगता है कि अस्थायी या क्षणिक लाभ की प्राप्ति किन संसाधनों के फलस्वरुप होती है तथा उसकी प्राप्ति हेतु किस प्रकार के उपक्रमों की आवश्यकता होगी, अतः इस दयनीय दशा से मानव को मुक्त होकर सही दिशा की ओर बढ़ना होगा तभी अंतरात्मा की आवाज को सुनकर वास्तविक प्रेरणा को – 'अंगीकार' किया जा सकेगा।

प्रेरक प्रसंग : सीख

दोस्तों, हर बुराई में कोई न कोई अच्छाई छुपी होती है। सार बस यही है कि जो भी समस्या हमारे सामने आती हैं उस समय हम यही सोचते हैं की ऐसा क्यों हुआ, ऐसा मेरे साथ क्यों होता है। परंतु हर चीज जो भी हमारे सामने आती है वो कोई न कोई संदेश, शुभ संदेश, कल्याणकारी संदेश लाकर जरूर आती है। जी समय समस्या आती है उस समय लगता है की सब कुछ गलत हो रहा है परंतु कुछ समय के बाद हमें समझ में आ जाता है कि हां यह चीज इस दृष्टिकोण से मेरे लिए अत्यंत लाभदायक भी है। इसी लिए किसी भी समस्या के बीच सकारात्मक रहना बहुत जरूरी है।

मासिक
अध्यात्म संदेश
जनकल्याण एवं राष्ट्रोत्थान को समर्पित धर्म, संस्कृति, अध्यात्म चिंतन की मासिक ई–पत्रिका

क्या आपकी लेखन में अभिरुचि है?

क्या आप भी कभी अपने विचारों, भावनाओं को व्यक्त करने के लिए कागज – कलम उठाते हैं?
क्या आप लेखक/लेखिका, कवि/कवियत्री है?

आपको **अध्यात्म संदेश** ई पत्रिका की ओर से आमंत्रण है, आप अपनी रचनाएं, कविताएं, गीत, लघु कथाएं हमें प्रेषित करें। आपकी रचनांए आलेख प्रकाशन योग्य होने पर उसका पत्रिका में अवश्य प्रकाशन किया जाएगा।

अपनी रचनायें हमें प्रेषित करते समय यह अवश्य सुनिश्चित करें कि यह रचना आपकी अपनी मौलिक कृति है और न तो यह किसी पत्र – पत्रिका – पुस्तक – ब्लॉग – वेबसाइट आदि में प्रकाशनार्थ विचाराधीन है और न ही कभी प्रकाशित हुई है।

आपकी रचना को मूल रूप में प्रकाशित/संपादित रूप में प्रकाशित करने अथवा प्रकाशित न करने का पूर्ण विवेकाधिकार संपादक मंडल का है।

आलेख भेजने की अंतिम तिथि 15 जनवरी 2024

विशेष : शब्द सीमा 500–750 शब्दों के मध्य होनी चाहिए

1. लेखक/लेखिका अपनी रचना यूनिकोड/कृतिदेव – वर्ड फाइल में टाइप कराकर ही भेजे। पी. डी. एफ फाइल न भेजें।
2. लेखक/लेखिका अपनी स्वरचित अप्रकाशित एवं मौलिक रचना के साथ कृपया अपना संक्षिप्त परिचय, व्हाट्सप नंबर, फोटो के साथ भेजें ।
3. आपकी स्वीकृत रचना आपके फोटो के साथ प्रकाशित की जायेगी। प्रकाशित रचना पर पारिश्रमिक देय नहीं है।
4. जनकल्याण हित में ज्ञान वर्धन हेतु यह ई पत्रिका पूर्णतः निः शुल्क है। अपनी रचनाएँ ई–मेल: **editor.adhyatmsandesh@gmail.com** पर प्रेषित करें।

– योगी शिवनन्दन नाथ
प्रधान संपादक

12 जनवरी पर विशेष

राष्ट्रीय युवा दिवस

‘उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाए’ का संदेश देने वाले युवाओं के आदर्श स्वामी विवेकानंद जी के जन्मदिन के अवसर पर विशेष

श्रीमती सुषमा सागर मिश्रा
उपसम्पादक (अध्यात्म संदेश)
सेवानिवृत्त प्रधानाचार्या
राजकीय विद्यालय, लखनऊ

आधुनिक समाज एवं भारतीय युवकों के आदर्श प्रतिनिधि एवं प्रेरणास्रोत स्वामी विवे. कानंद ने देश को ऐसी अनमोल एवं अद्भुत विरासत दी है, जिसे उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त कर समस्त भारतीय स्वयं को सौभाग्यशाली, गौरवान्वित एवं ऊर्जावान महसूस करते हैं। उन्होंने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में वर्तमान भारत की अध्यात्मिक एवं दार्शनिक संस्कृति बहुत प्रभावित किया है। स्वामी विवेकानन्द जी के जन्मदिन को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाए जाने का प्रमुख कारण उनका युवाओं को दिये गये प्रेरक संदेश, दर्शन, सिद्धांत, अलौकिक विचार एवं उनके उच्च आदर्श हैं, जिनका उन्होंने स्वयं भी पालन किया और भारत के साथ–साथ अन्य देशों में भी उन्हें स्थापित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनके अनमोल विचार और आदर्श हमेशा देश के युवाओं में नई शक्ति और ऊर्जा का संचार करने की सामर्थ्य रखते हैं।

किसी भी देश के युवा उस देश का भविष्य होते हैं उनके मजबूत हाथों में देश की आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक उन्नति की बागडोर होती है एवं उन्हीं से होकर देश के विकास की गंगा बहती है। वर्तमान में देश और प्रदेश में जहां भ्रष्टाचार, बुराई एवं अपराध का बोलबाला है जो पूरे देश को दीमक की तरह अंदर ही अंदर खोखला किये जा रहा है, ऐसे में देश की युवा शक्ति को जागृत करना और उन्हें देश के प्रति कर्तव्य का बोध कराना अत्यंत आवश्यक है। स्वामी विवेकानंद जी के विचारों मे वह क्रांति एवं तेजस्विता है जो सारे युवाओं को नई चेतना से परिपूर्ण कर दे, साथ ही उनमें नई ऊर्जा और सकारात्मकता का संचार कर दें। स्वामी विवेकानंद जी की ओजस्वी वाणी भारत में तब उम्मीद की किरण लेकर आई जब

भारत पराधीन था और भारत के लोग अंग्रेजों के जुल्मों को सह कर गुलामी का जीवन जी रहे थे, हर तरफ दुख और निराशा के बादल छाए हुए थे। ऐसे कठिन एवं विपरीत परिस्थितियों में उन्होंने भारत के सोए हुए समाज को जगा कर उनमें उमंग एवं उत्साह का संचार किया था।

स्वामी विवेकानंद एक महान दार्शनिक एवं आध्यात्मिक नेता के रूप में जाने जाते हैं। स्वामी विवेकानंद बनने से पूर्व इनका नाम नरेंद्रनाथ दत्त था। इनके पिता श्री विश्वनाथ दत्त कलकत्ता के एक प्रसिद्ध वकील थे। धर्मपरायण माता श्रीमती भुवनेश्वरी देवी के उच्च कुलीन धार्मिक आंगन में पौष मास के कृष्ण पक्ष सप्तमी तिथि (दिनांक 12 जनवरी 1863) को इनका जन्म हुआ था। सामान्य परिवार में जन्मे नरेंद्र नाथ जन्म से ही नटखट होने के साथ विलक्षण बुद्धि के स्वामी एवं एक तेजस्वी बालक थे। वह एक बार जो भी सुन लेते थे अथवा पढ़ लेते थे, वह उन्हें अक्षरशः याद हो जाता था। बचपन से ही इनकी माता इन्हें रामायण और महाभारत के प्रेरक प्रसंग सुनाती रहती थी जिसके परिणामस्वरूप इनका बाल हृदय भक्ति रस से ओतप्रोत हो गया था। वह बाल्यकाल से ध्यान मग्न हो जाते थे जिसमें उनका शरीर तो वहीं रहता था मगर मन शान्ति की खोज में रम जाता था, समय के साथ ईश्वर की खोज एवं ज्ञान प्राप्ति की लालसा और अधिक बढ़ कर विश्व विजयी के रूप में परिणिति हो गई। दुर्भाग्यवश इनके पिता की मृत्यु इनके बाल्यकाल में ही हो गई थी, जिससे इनका परिवार गरीबी की दशा में जीवन यापन करने को मजबूर हो गया और इसी के साथ उनके परिवार की आर्थिक हड्डी टूट गई। एक अच्छे छात्र होने के बावजूद बहुत लंबे समय तक इन्हें नौकरी नहीं मिल सकी जिसके कारण इन्होंने घर–घर जाकर नौकरी मांगना शुरू कर दिया लेकिन सफलता नहीं मिली। अपने परिवार के भरण–पोषण के लिए उन्हें घर घर जाकर पढ़ाने का काम करना पड़ा तभी एक प्रोफेसर ने उन्हें श्री रामकृष्ण परमहंस के नाम से परिचित करवाया और उनसे मिलने के सलाह दी। सन् 1881 में दक्षिणेश्वर के काली मंदिर में उनकी मुलाकात श्री रामकृष्ण परमहंस से हुई और उनके रहस्यमयी व्यक्तित्व एवं अथाह ज्ञान से प्रभावित नरेंद्रनाथ उनके शिष्य बन गए। यहीं पर उन्होंने उपनिषद, वेद और योग के भारतीय दर्शन को स्वयं आत्मसात किया और पश्चिमी देशों से भी परिचित कराया और भारतीय संस्कृति का परचम सम्पूर्ण विश्व में लहराया। स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने उन्हें मंत्र दिया था कि

'सारी मानवता में ही ईश्वर की संचेतना निहित है, उनकी सेवा ही ईश्वर की सच्ची आराधना है।'

स्वामी विवेकानंद एक सच्चे देशभक्त एवं अपने देश के नायक के रूप में पहचाने जाने लगे। सन् 1893 में वह अमेरिका के शिकागो में आयोजित विश्व धर्म संसद में भारत के प्रतिनिधि के रूप में शामिल हुए जिसमें उनके द्वारा दिए गए हिंदी में व्याख्यान, जिसकी शुरुआत उन्होंने ष्मेरे अमेरिका के भाइयों और बहनों 'के सम्बोधन के साथ कर भारतीय संस्कृति एवं इसके महत्व का परिचय करा कर सबको सम्मोहित कर दिया। वहां पर उन्होंने दुनिया को शून्य पर आधारित दिव्य ज्ञान से परिचित करवाया और इस प्रकार शून्य को कुछ भी न मानने वालों को उन्होंने शून्य की महत्ता से अवगत कराया। उन्होंने दुनिया को भारत की आध्यात्मिकता से परिपूर्ण वेदांत के दर्शन करवाए, जिससे प्रभावित होकर देश एवं विदेश के लोग उनका शिष्यत्व पाने के लिए दौड़ पड़े। उनका यह भाषण वर्तमान में भी सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत है। स्वामी विवेकानंद एक ज्ञानी, आस्थावान एवं एक सच्चे दार्शनिकता से परिपूर्ण व्यक्ति थे। उनकी शिक्षाओं ने न केवल युवाओं को प्रेरित किया बल्कि देश के विकास का मार्गदर्शन भी किया। इनकी अध्यात्म में रुचि के कारण ही उन्होंने 25 वर्ष की अल्पायु में ही सन्यास ले लिया था और इसी के बाद इन्हें पूरे विश्व में वे स्वामी विवेकानंद के रूप में विख्यात हो गये।

दिव्य ज्योति से आलोकित मुख मंडल, ज्ञान विज्ञान से परिपूर्ण, एवं दैवीय व्यक्तित्व के धनी ओजस्वी युवा संन्यासी स्वामी विवेकानंद जी शिकागो में आयोजित विश्व धर्म सम्मेलन के आ. काश में सूर्य की भांति उदित हुए और शिकागो की विश्व सम्मेलन जो ज्ञान विज्ञान एवं सनातन धर्म की सुनहरी किरणें बिखेरी, उससे संपूर्ण विश्व आलोकित हो गया एवं धर्म के व्योम के पटल पर सनातन धर्म का ध्वज लहरा उठा। स्वामी जी के ओजस्वी भाषण को सुनकर सारे श्रोता मंत्र मुक्त हो गये और उनकी वह अमृतवाणी अमर हो गई जो आज भी मानव समाज को दशा और दिशा प्रदान कर रही है देश के साथ–साथ विदेश में विशेष कर अमेरिका में उन्हें बहुत आदर के साथ याद किया जाता है। उनके उपदेश, वेद, उपनिषद, गीता सहित अन्य धर्म ग्रंथो पर वैज्ञानिक व्याख्यान अद्वितीय एवं अद्भुत है उनका दर्शन संपूर्ण जगत के लिए कल्याणकारी, प्रासंगिक एवं प्रेरक है जो युगों युग तक संपूर्ण संपूर्ण मानव समाज को प्रेरित करता रहेगा।

अपने उच्च विचारों एवं आदर्श के लिए सुविख्यात स्वामी विवेकानंद धर्म, दर्शन, इतिहास, कला, सामाजिक विज्ञान, एवं साहित्य के ज्ञाता थे इतना ही नहीं उन्हें भारतीय संगीत का बहुत अच्छा ज्ञान था साथ ही साथ में उच्च कोटि के खिलाड़ी भी थे उनके अनमोल विचार सदैव युवाओं का मार्गदर्शन करते रहे हैं देश के विकास एवं प्रगति की डोर युवाओं के हाथ में होने के कारण उनके लिए विवेकानंद जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व सदैव अनुकरणीय रहा है। यही कारण है कि भारत सरकार ने उनके जन्मदिन को कालजयी बनाने के लिए 12 जनवरी सन् 1984 से इस दिन को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया था।

वर्ष 2024 को सम्पूर्ण भारत में 12 जनवरी को स्वामी विवेकानन्द जी की जयंती मनाई जाएगी। इस उपलक्ष्य पर सभी सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं के द्वारा इनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व को भाषण, सेमिनार एवं लेखनी के माध्यम से जन जन तक पहुंचा कर उन्हें याद करेंगे। देश के युवाओं से निवेदन है कि वह उनके बताए हुए राह पर चल कर देश के चहुंमुखी विकास एवं समृद्धि में अपना भागीरथ योगदान दे कर उसे सुदृढ़ बनाए, यही स्वामी विवेकानन्द जी का सच्चा सम्मान होगा और तभी 'राष्ट्रीय युवा दिवस' मनाने का उद्देश्य सार्थक हो सकेगा।

ज्ञानेंद्रपतिः जनसंवेदना के कवि

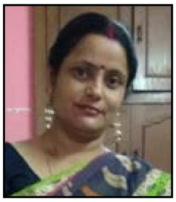

मेघना रॉय

शोधार्थी हिन्दी
सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु
सिद्धार्थ नगर

कवि ज्ञानेंद्रपति का जन्म 1 जनवरी वर्ष 1950 को झारखंड के गांव पथरगामा में हुआ था। इन्हें निराला परंपरा का कवि कहा गया है, वस्तुतरूये मुक्त छंद के कवि हैं। सामाजिक विषमताओं पर इनकी बेबाक लेखनी इन्हें निर्भीक शब्द निर्माता बनाती है। इनके काव्य को पढ़ने से अतीत के पन्ने स्वयं परत दर परत खुलते चले जाते हैं। इनकी रचनाओं में कविता संग्रह..आंख हाथ बनते हुए (1970), शब्द लिखने के लिए ही यह कागज बना है (1981), गंगा तट (2000),संशयात्मा (2004), भिनसार (2006), कवि ने कहा (कविता संचयन), मनु की बनती मनई (2013) इसके अतिरिक्त कथेतर गद्यः पढ़ते–गढ़ते तथा काव्य नाटक : एक चक्रानगरी भी प्रकाशित हो चुकी है।

इन्हें वर्ष 2006 मे संशयात्मा शीर्षक कविता संग्रह पर साहित्य अकादमी पुरस्कार के अतिरिक्त इन्हें पहल सम्मान, बनारसी प्रसाद भोजपुरी सम्मान व शमशेर सम्मान सहित अनेक प्रतिष्ठित सम्मान व पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।

ज्ञानेंद्रपति का काव्यालोक लोकान्मुख होकर जन–मन वेदना से सम्पृक्त हो अपनी लेखनी की अजस्र धारा प्रवाहित करती है। जिस धारा में मानव अपने संघर्ष गाथा को तिरोहित कर आनंद के उन्मुक्त गगन में विचरण करता है–––

'शब्दों में जो रोशनी है
जन–मन वेदना में सनी है
होठों से ही नहीं कढ़ी
बात गहरी, हिरदै–छनी है।' (कविता–भविता)

कवि ज्ञानेंद्रपति की समकालीन कविता अपने आरंभ से ही अपनी जनपदीय चेतना से उसका प्रत्याख्यान आंकती है...

'पालिथिन, पालिथिन।
पालिथिन की मुट्ठी में बंद हैं बाजार
जिस तरह बाज़ार की मुट्ठी में बंद है हम
. . . .
करिखाई है गंगा
विषपायी है गंगा
दुखियारी माई है गंगा
उस निर्भर पालिथिन के पड़ते ही
भारी हो जाता है उसका जी।' (गंगातट)

आद्यांत यह कहा जा सकता है कि कवि ज्ञानेंद्रपति प्रगतिशील उदात्त एवं भव्य कविता की परिकल्पना के कवि हैं। ये कवि जीवन के विविध पक्षों पर अपने रचनाओं के अदम्य क्षमता से सिर्फ प्रहार ही नहीं करता अपितु उसके निदान का पथ भी सुझाता है। वस्तुतः कवि ज्ञानेंद्रपति अन्तर्मन से जो भावुक छंद शब्द गढ़ते हैं उनकी मेधा उसे मानवता के स्तर पर तराश कर शब्दों का जामा पहनाकर साहित्याकाश में रोशनी बिखेर रही है व नवांकुरों का पथ भी आलोकित कर रही है।

ग़ज़ल

विज्ञान व्रत

क्या बनाऊँ आशियाँ
कम पड़ेगा ये जहाँ

बिजलियाँ ही बिजलियाँ
और मेरा घर यहाँ

एक थे हम दो यहाँ
कौन आया दरमियाँ

ढूँढ़ते हो क्यों निशाँ
वो जमाने अब कहाँ

था जहाँ से वो बयाँ
अब नहीं हूँ मैं वहाँ

देवी लक्ष्मी एवं दरिद्र देवी

एक बार धन की देवी लक्ष्मी और गरीबी की देवी दरिद्र देवी में झगड़ा हो गया। लक्ष्मी जी का कहना था कि वह ज्यादा सुंदर है और लोग उन्हें ज्यादा चाहते हैं। दरिद्रदेवी का कहना था कि वह ज्यादा सुंदर है।
दोनों के बीच हो रही बहस का कोई हल नहीं निकल रहा था, इसलिए दोनों देवियों ने फैसला किया कि धरती पर चलकर जो पहला आदमी नजर आये उसी से झगड़े का फैसला करवाया जाये। दोनों धरती पर आयीं। धरती पर उन्हें एक किसान दिखायी दिया।

दोनों किसान के पास अपनी समस्या लेकर पहुंची और उससे कहा कि जब तक वह समस्या का हल नहीं निकालता, तब तक उसे कहीं नहीं जाने दिया जायेगा। बेचारा किसान बड़ी मुश्किल में फंस गया। किसान जानता था कि उसने अपना फैसला लक्ष्मी के पक्ष में सुनाया तो दरिद्रदेवी नाराज होकर उसका पीछा नहीं छोड़ेगी और अगर उसने दरिद्रदेवी को ज्यादा सुंदर बताया तो लक्ष्मी जी उससे रूठकर उसे छोड़ जायेंगी।

किसान समझ गया कि दोनों देवियों में से किसी को भी नाराज नहीं किया जा सकता। उसने कुछ देर सोचकर दोनों को जवाब दिया- 'देवियों! असल में तुम दोनों ही इतनी सुंदर हो कि मैं किसी एक के पक्ष में फैसला नहीं दे सकता। दरिद्रदेवी जब आप किसी के घर से बाहर जाती हो तब आपसे ज्यादा सुंदर और कोई नजर नहीं आता और लक्ष्मी जब आप किसी के घर आती हो, तब आपसे ज्यादा सुंदर और कोई नहीं होता।' दोनों देवियां अपनी प्रशंसा सुनकर प्रसन्न हो गयीं और खुशी-खुशी वापस चली गयीं। दोनों को जाते देख किसान भी खुशी खुशी अपने घर चला गया। आपको भी उस किसान की तरह ही समझ-बूझ का परिचय देना चाहिए। आपने कई बार स्वयं अनुभव किया होगा कि किसी कार्यक्षेत्र में दो लोगों में झगड़ा हो जाता है, लेकिन उनसे भी जूनियर समझ-बूझ का परिचय देते हुए सुलह-मशविरा करा देता है। इसलिए समझ-बूझ को पद-प्रतिष्ठा, ऊंच-नीच से नहीं नापा जा सकता। एक सफाई कर्मी भी किसी अधिकारी से ज्यादा समझदार हो सकता है। लेकिन ऐसे ही लोग कुछ कर दिखाने में कामयाब होते हैं।

मेरे भीतर बसे हैं राम

डॉ. सन्तोष खन्ना
(वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर)
वरिष्ठ सम्पादक (अध्यात्म संदेश)
वरिष्ठ साहित्यकार एवं प्रधान संपादक :
महिला विधि भारती त्रैमासिक पत्रिका
दिल्ली–110088

उन दिनों की बात है जब मेरी एक सहयोगी नीलम गुलाटी को ब्रेस्ट कैंसर हो गया था। डॉक्टर ने उसे ऑपरेशन बताया था परंतु उसने कहा कि वह आपरेशन नहीं करायेगी क्योंकि उसके गुरुजी ने कहा कि डॉक्टर तो ऐसे ही काट फाट कर देते हैं यह रोग फिर हो जाता है। ऐसा करो, तुम पीपल की छाल सुखाकर उसे पीसकर प्रभावित अंग पर लगाते रहो, ठीक हो जाओगी।'

आरम्भ में एक छोटी – सी गिल्टी समय के साथ एक भयंकर फोड़े में तब्दील हो गई। पीपल की छाल का पाउडर लगाने के बावजूद वह फोड़ा ठीक नहीं हुआ बल्कि रिसने लगा और इतना रिसता कि नीलम के कपड़ों का अग्र भाग गीला ही रहता। अब नीलम का कार्यालय आना भी मुश्किल हो गया। दर्द इतना कि सहनशीलता भी जवाब दे जाए, पर उसकी गुरु के प्रति आस्था इतनी अधिक कि पेन किलर तक नहीं खाना। उस को देख कर मुझे रामकिशन परमहंस की याद आ जाती। उनको भी मां काली में इतना विश्वास था कि वह गले के केंसर से इतना पीड़ित रहते भी वह भी दवाई आदि नहीं लेते थे। मेरा संवेदनशील मन आरंभ से ही उसके पीछे पड़ा हुआ था कि वह ऑपरेशन करा ले। मैंने उसे कई बार बोला कि मैं किसी अच्छे डॉक्टर का पता लगाकर ऑपरेशन के दौरान उसके साथ रहूंगी। पर उसे उसकी आस्था से डिगा पाना कठिन था जो उसे अपने गुरुजी के प्रति थी।

जब पानी सिर से गुजरने लगा तो मैंने फिर उस पर दबाव बनाना शुरू किया कि वह अब अस्पताल में दाखिल हो जाए जहां उसके घाव की नियमित साफ सफाई हो पायेगी।

वास्तव में उसका समय पर विवाह नहीं हो सका था और मां – बाप भी मर चुके थे, अब घर में वह थी और थी उसकी एक दिव्यांग युवा बहन। दोनों बहिनें अपने मकान में रह रही थी। पड़ोसी आदि अच्छे थे परंतु शायद अस्पताल से इलाज कराने के बारे में उसने उनकी भी राय नहीं मानी थी।

मैंने उस पर फिर दबाव बनाया कि मैं उसे अस्पताल ले जाकर दाखिल करवा देती हूं परंतु वे किसी हालत में मानने को तैयार ही नहीं थी। उसे गुरु जी पर इतना विश्वास था कि गुरु जी ने कहा है कि वे ठीक हो जायेगी तो ठीक हो कर रहेगी। राम जी की प्रेरणा से तभी मुझे एक बात सूझी और मैंने उससे कहा कि अगर गुरुजी कह दे तो तब तुम हस्पताल में दाखिल हो जाओगी? उनकी बात तो मानोगी ना? 'एक अंतिम विकल्प के रुप में मैं ने पुनः उसे सुझाव दिया

'वे जो कहेंगे मैं करूंगी,' उसने तत्काल उत्तर दिया।

अब मुझे एक आशा की किरण दिखाई दी। जब उसने यह कहा कि वह गुरुजी से मिल लेगी तो तो बिना समय गंवाए मैंने उसी दिन अपने पति खन्ना जी को उनके कार्यालय फोन किया कि नीलम को आज ही गुरुग्राम गुरु जी के पास ले जाना है। मेरे पति भी एक संवेदनशील व्यक्ति थे और उन में सेवा की भावना कूट–कूट कर भरी थी। उन्होंने तत्काल कहा,' मैं अभी आता हूं। हम दोनों अपने अपने कार्यालय से थोड़ा जल्दी निकल कर बस से उसके घर पहुंच गए।

नीलम दिल्ली के पटेल नगर में रहती थी। अब प्रश्न यह था ज्ञकि उसे गुरुग्राम ले जाया कैसे जाये? उन दिनों प्राइवेट टैक्सी आम नहीं होती थी?। हम भी बसों में कार्यलय आते जाते थे। खन्ना जी ने बड़ी मुश्किल से काफी ऊंची दरों पर एक टैक्सी का इंतजाम किया। जब हम दिल्ली से गुरुग्राम के लिए रवाना हुए तो शाम के सात बजे चुके थे। रास्ते में डेढ़ दो घंटे लगे और जब गुरु जी के यहां उनके आवास पर पहुंचे तो रात के नौ बजने वाले थे। गुरुजी अपने आवास में उपरी मंजिल रहते थे और वह नीचे अपने भक्तों से मिलते थे। उन्हें जब नीलम के आने का पता चला तो वे बदहवास–सा हो एकाएक नीचे आए और पूछा, 'पुत, क्य हुआ? इस वक्त कैसे?'

मैंने उन्हें प्रणाम कर कहा, 'गुरु जी, नीलम की हालत बहुत बिगड़ चुकी है इन्हें अस्पताल दाखिल करना होगा। यह आपके आदेश के बिना हस्पताल जाने को तैयार ही नहीं है। इसका जख्म इतना गल चुका है अब उसके घर में भी बदबू तक फैलने लगी है। हम इसको अस्पताल दाखिल करना चाहते हैं कि कम से कम वहां जख्म को साफ रखा जा सके।,' मैंने गुरुजी से अनुनय–विनय करते हुए कहा।

'पुत, तू अस्पताल दाखिल हो जा। मैं तुम्हें वहां देखने आऊंगा। चिंता मत कर । तुम जल्दी ठीक हो जाओगी।'

गुरु जी का कथन सुनते ही नीलम एकाएक खड़ी हो गई और मुझसे बोली, 'मिसेज खन्ना, अब तुम चाहे जिस अस्पताल में दाखिल कराओ, मैं तैयार हुं।'

दूसरे दिन मैंने अपने कार्यालय पहुंचकर सबसे पहले अपने ऑफिस के प्रशासन को नीलम के हालात से परिचित कराते हुए कहा कि आज नीलम को अस्पताल दाखिल कराना है। प्रशासन ने मेरे साथ कार्यालय की एक गाड़ी भेजी जिसमें मैं उसे लेकर विलिंग्डन हॉस्पिटल (अब राम मनोहर लोहिया अस्पताल) की इमरजेंसी में लेकर गई। वहां डॉक्टरों ने मुझे बाहर रुकने को कहा और वह नीलम की जांच करने लगे। जब उन्होंने उसकी ब्रेस्ट चेक करने के लिए उसके शर्ट को हटाया तो मेरे तो पैरों तले की जमीन ही निकल गई और एक सर्द सिहरन मेरे पूरे शरीर में दौड़ गई। वहां ब्रेस्ट की जगह एक भयंकर फोड़ा था जिसका मुंह खुला हुआ था। वास्तव में बाहर खड़े खड़े मैंने एक कर्टन के कपड़े को थोड़ा–सा हटा कर देख लिया था। जांच कर रहे डाक्टर भी उस भयंकर फोड़े को देख घबरा कर दो कदम पीछे हट गए और उन्होंने जख्म को पहले की तरह ढक दिया और मुझे बुलाते हुए कहा,'इन्हें आप सफदरजंग हॉस्पिटल में दाख्लि करा दें। वही इसका ठीक ढंग से इलाज कर पाएंगे।

कुल मिलाकर नीलम को सफदरजंग अस्पताल में दाख्लि करा दिया गया। दो एक दिन बाद मैं उससे मिलने गई। उस दिन उनके मुख पर एक अजीब – सी शांति और खुशी बिखरी हुई थी। उन्होंने मुझे देखते ही कहा, आज गुरु जी मुझसे मिलने आए थे। लग रहा था जैसे उसके जीवन की कोई बहुत बड़ी साध पूरी हो गई हो।

अस्पताल में दाखिल होने के आठ दिन बाद वह निर्वाण को प्राप्त हो गई। यह अभी रहस्य ही है कि क्या गुरु जी उससे वास्तव में मिलने आये थे या कि नीलम ने कोई दिवास्वप्न देखा था। मैंने अपने जीवन में आस्था का इतना बड़ा कमाल देखा था और सवाल अब भी बना हुआ था कि अगर नीलम समय पर अस्पताल दाखिल हो जाती तो क्या वह केंसर जैसे लाइलाज रोग से ठीक हो जाती? वास्तव में यह घटना कोई तीस चालीस साल पहले की है जब केंसर के उपचार की टेक्नोलोजी आज जैसी उन्नत नहीं होती थी और केंसर के रोगियों का सर्वाइवल रेट बहूत कम था।

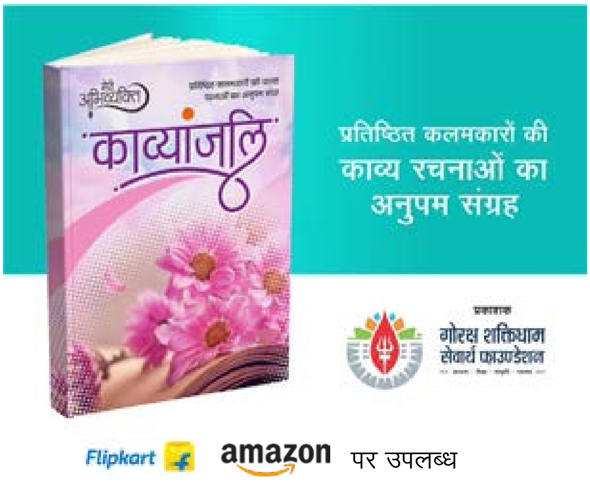

मासिक
अध्यात्म संदेश
जनकल्याण एवं राष्ट्रोत्थान को समर्पित धर्म, संस्कृति, अध्यात्म चिंतन का मासिक ई-पत्र

editor.adhyatmsandesh@gmail.com
m.facebook.com/अध्यात्म संदेश

गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फ़ाउण्डेशन
www.gssfoundation.org

12 जनवरी पर विशेष

युवा शक्ति राष्ट्र की अमूल्य संपदा

सुजाता प्रसाद
स्वतंत्र रचनाकार
शिक्षिका सनराइज एकेडमी
नई दिल्ली, भारत

युवावस्था जीवन का सर्वाधिक श्रेष्ठ समय होता है। किसी देश का भविष्य उस देश के बच्चे होते हैं तो देश की गति युवाओं में निहित होती है। व्यक्ति के जीवन की यह अवस्था, उसके जीवन का ऐसा पड़ाव है, जो ओजस्वी ऊर्जा से ओत–प्रोत होता है, जिसमें स्फूर्ति का संचार होता है, चेतना का प्रकाश होता है और प्रज्ञा का साथ होता है। सचमुच युवाओं में कल्पनाओं को आकार देने की अद्‌भुत क्षमता होती है। युवा अपने समाज और देश की जैसी चाहे वैसी तस्वीर बना सकते हैं। यह भी एक बुनियादी सच है कि एक युवा अपने समाज व देश को वही देता है जो उसने अपने बाल्यकाल और छात्र जीवन में प्राप्त किया होता है। इसलिए अभिभावक व शिक्षक की एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी होना चाहिए कि बालपन से ही बच्चों के मस्तिष्क का विकास सुविचारों एवं अच्छी शिक्षा के साथ हो। हम कह सकते हैं कि अभिभावकों का कर्तव्य है अपनी सन्तानों को सही संस्कार देने की और युवाओं के साथ मित्रवत व्यवहार कर समय समय पर उनका सही मार्गदर्शन करने की। समाज का भविष्य युवाओं के कंधों पर निर्भर करता है इसलिए उन कंधों को मजबूत करना बहुत ही आवश्यक है और उसके लिए बचपन से ही उन्हें स्वस्थ और नैतिक वातावरण देना हमारा परम कर्तव्य बनता है। यह अति चिंतनीय विषय है कि माता पिता को अपने बच्चों की परवरिश केवल अपने वंश को चलाने वाला समझकर नहीं बल्कि देश का भविष्य समझ कर करना चाहिए। जिससे कि देश को एक सुविज्ञ नागरिक मिल सके। शैक्षिक संस्थानों के द्वारा भी विद्यार्थियों की मानसिक मजबूती पर कार्य किए जाने की जिम्मेदारी होनी चाहिए।

हर पीढ़ी के युवा को अपने समय की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। वर्तमान समय में भी युवा वर्ग की कुछ समस्याएं ऐसी हैं जिन पर विचार करने के साथ–साथ ध्यान दिए जाने की भी आवश्यकता है। नशे का सेवन करना, उद्देश्य रहित जीवन शैली, अपने कर्तव्यों से विमुख रहना, सिर्फ व्यक्तिगत सुख सुविधाओं तक ही खुद को सीमित रखना और देश समाज के प्रति उदासीन रवैया रखना इत्यादि ऐसी समस्याएं हैं जो देश व समाज के लिए बहुत ही घातक हैं। हमें यह भी सोचना चाहिए कि समाज की मजबूत नींव हम तभी रख सकते हैं, जब हम और हमारे युवा अपने व्यक्तित्व में अच्छे गुणों का समावेश कर सकें।

अपने जीवन में सामाजिक और नैतिक मूल्यों को धारण कर सकें। इसके लिए प्रत्येक युवा को सुनहरे भविष्य और देश की प्रगति में सहयोगी बनने का संकल्प लेना चाहिए। जब प्रत्येक युवा मानसिक दृढ़ता, सकारात्मकता, प्रगतिशील प्रवृत्ति के साथ देश को केंद्र बिंदु मानकर सोद्देश्य अपने लक्ष्य की तरफ बढ़ेगा तो निश्चित ही देश का उत्थान होगा। युवा ही है जो न केवल आने वाली पीढ़ी का पथप्रदर्शक होता है बल्कि युग प्रवर्तक भी होता है।

यह भी सच है कि आज के युवा अपने करियर के साथ साथ समाज के लिए भी कुछ करने का संकल्प लेकर आगे बढ़ रहे हैं। गरीबों की शिक्षा, बेटियों को बचाना उन्हें पढ़ाना, पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता अभियान, रोजगार सृजन आदि से जुड़ी सामाजिक सेवा करके ये समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का काम करते हैं। इनके इस योगदान से एक बेहतर कल का निर्माण हो पाता है। निरूसंदेह समाज के विकास में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। युवा भावी समाज का सशक्त स्तंभ होते हैं। समाज की ऊर्जा, उत्साह और साहस के प्रतीक युवा समाज और राष्ट्र के आने वाले भविष्य का नेतृत्व ही नहीं करते बल्कि ये हमारे समाज के सबसे सशक्त भागीदार भी होते हैं। क्योंकि युवा समाज के महत्वपूर्ण मानव संसाधन होते हैं, इसलिए विभिन्न क्षेत्रों में युवाओं का योगदान महत्वपूर्ण होता है, जैसे शिक्षा, विज्ञान, व्यापार, साहित्य, कला, खेल– कूद, सामाजिक कार्य, राजनीति इत्यादि इत्यादि। युवा हमारे समाज को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस प्रकार उनके विचार और शब्द समाज के हर व्यक्ति, हर वर्ग को प्रभावित कर सकते हैं। युवा वर्ग की सोच समय के साथ न सिर्फ बदलती रहती है बल्कि युवा पीढ़ी का उत्साह, जोश और साहस नये विचारों और नवाचारों को संजीवनी भी देता है। जिससे समाज विकास की राह पर अग्रसर होता है। इसलिए एक अच्छे समाज के विकास में युवाओं की भागीदारी महत्वपूर्ण है। युवा तो सामाजिक विकास की धुरी हैं, असीम संभावनाओं का पुंज हैं।

अपने लिए हो, परिवार के लिए हो या समाज के लिए कुछ अच्छा कर गुजरने की सोच हमारे मन और विचारों में होनी चाहिए, इससे फर्क नहीं पड़ता कि हमारी उम्र कितनी है। क्योंकि, उम्र तो केवल संख्या मात्र है। मन में सकारात्मक सोच और अपने देश से प्रेम हो तो कभी भी किसी भी उम्र में हम समाज के लिए एक बहुत बड़ा उदाहरण कायम कर सकते हैं।

प्रेरणा का स्रोत बन सकते हैं। गहराई से अगर सोचें तो युवा होना तो भाव है, मन से, मस्तिष्क से, सोच से अपने विचारों से, इसलिए उम्र चाहे जो भी हो हमें अपने युवापन को हमेशा जिंदा रखना चाहिए। युवा शक्ति हमारे राष्ट्र की, समाज की अमूल्य संपदा है। स्वामी विवेकानंद जी ने भी कहा है कि – नवजययुवा वही होता है, जिसके हाथों में शक्ति, पैरों में गति, हृदय में ऊर्जा और आंखों में सपने होते हैं। नवजय समाज को अपना अमूल्य योगदान देना हमारा दायित्व बनता है। हमारे द्वारा लिया गया हर एक संकल्प समाज के विकास के लिए सार्थक प्रयास साबित हो यही शुभकामना है। ■

घमंड मत करो

सन्त च्वांगत्सु एक अन्धेरी रात में मरघट से गुजर रहा था। वह मरघट शाही खानदान का था। अचानक उसका पैर एक आदमी की खोपड़ी पर लग गया। च्वांगत्सु फकीर घबरा गया। उसने वह खोपड़ी उठायी और घर लाकर उसके आगे हाथ-पांव जोड़ने लगा कि मुझे क्षमा कर दो। उसके मित्र इकठ् हो गये और कहने लगे, 'पागल हो गये हो, इस खोपड़ी से क्षमा मांगते हो?'

च्वांगत्सु ने उत्तर दिया, यह बड़े आदमी की खोपड़ी है। यह सिंहासन पर बैठ चुकी है। मैं क्षमा इसलिए मांगता हूं क्योंकि यह आदमी आज जीवित होता और मेरा पैर उसके सिर पर लग जाता तो पता नहीं मेरी क्या हालत बनाता? यह तो सौभाग्य है, यह आदमी जीवित नहीं है, लेकिन क्षमा मांग ही लेनी चाहिए।'

मित्रों ने कहा, तुम बड़े पागल हो।'

च्वांगत्से ने कहा, मैं पागल नहीं हूं। मैं तो इस मरे हुए आदमी से कहना चाहता हूं कि जिस खोपड़ी को तू सोचता था, सिंहासन पर बैठी है वही लोगों की, एक फकीर की ठोकर खा रही है और 'उफ' भी नहीं कर सकती। कहां गया तेरा सिंहासन? कहा गया तेरा अहंकार?'

कितना अच्छा जवाब था च्वांगत्सु का! आदमी को कभी भी पद और नाम का घमण्ड नहीं करना चाहिए।

इस संसार में हर कोई सात्विक श्चवृक्कि का इंसान नहीं है, ताम"क विचारों वालों की भी कमी नहीं। तामसिक विचार से पीड़ित व्यक्ति किसी की भी उन्नति से खुश होने की बजाय दु:खित होते रहे हैं और कोई-न-कोई नुक्स निकालकर आलोचना करते रहते हैं। अपनी आलोचना या निंदा सुनकर आवेश में नहीं आना चाहिए, बल्कि यह विचार करना चाहिए अमुक ने मेरी निंदा या आलोचना किन कारणों से की? उन कारणों को समाप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए और आलोचना करने वाले को गाली-गलौज की बजाय धन्यवाद देना चाहिए, कि शुक्रिया आपने मुझे मेरी गलती का अहसास करा दिया। गलतियों और आलोचनाओं को स्वीकार करने का विचार ही सकारात्मक सोच को जन्म देता है।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम –अनुकरणीय जीवन दर्शन

डॉ. अलका शर्मा
(वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर)
संपादक अध्यात्म संदेश

रामम लक्ष्मण पूर्वजम रघुवरम काकस्थम
गुण निधाम विप्र प्रिय धार्मिक राजेन्द्र धार्मिक राजेन्द्र
सत्यसंध दशरथ तनय श्यामल सत्यमूर्ति
वंदे लोकाभिराम रघुकुल तिलकम राघव रावणारि

"लक्ष्मण के पूर्वज, रघुकुल श्रेष्ठ, सीताजी के स्वामी, अति सुंदर, ककुस्थ कुल नंदन, करुणा सागर, गुण निधान, ब्राह्मण भक्त, दशरथ पुत्र, सम्पूर्ण लोको में सुंदर रघुकुल तिलक राघव , रावण के शत्रु राम का मैं स्मरण करता हूँ "

विश्व प्रसिद्ध 'रामायण' भारतीय संस्कृति का वाहक ग्रंथ माना जाए तो तनिक भी अतिशयोक्ति न होगी। मर्यादा पुरुषोत्तम राम आदर्श शासक होने के साथ जन जन के आदर्श माने जाते है।

राम जिनके स्मरण मात्र से समस्त नकारात्मक प्रवत्तियों का स्वत: शमन हो जाये वही राम है। जो रोम रोम में रहता है, जो समूचे ब्रह्मांड में रमण करता है। मुनिगण का मन जिसमे रमण करता है वही राम है।

उनके व्यक्तिव में विरोधाभास का अनूठा संगम है। राम का शरीर कोमल पर शत्रुओं के प्रति राम बहुत कठोर है।

एक ओर आज्ञाकारिता, विनम्रता से परिपूर्ण राम है तो दूसरी ओर शूरवीरता, अतुलबल, अदम्य साहस, पराक्रम ही राम की पहचान है। एक ओर राम शास्त्रों के ज्ञाता राम, तो दूसरी ओर अपने शस्त्रो से शत्रु का मानमर्दन करने राम। एक ओर सौम्यता व शालीनता की प्रतिमूर्ति राम तो दूसरी ओर राम अपने पराक्रम से शत्रुओं को कँपा देने की सामर्थ्य रखने वाले राम। संक्षेप में कहा जाए तो राम का चरित्र सदैव अनुकरणीय रहेगा।

प्रत्येक सनातनी के परस्पर अभिवादन, सुख दु:ख, पीड़ा, विषाद यहां तक कि जीवन की अंतिम यात्रा में भी राम ही सबकी जिव्हा पर होते है। राम सबके जीवन मे रच–बस गए है जिसके जीवन मे राम नाम बस गया उसके जीवन से सारे क्लेशो, दु:ख दर्द से निवृति हो गई। इसी लिए कहा गया है –

कलयुग में केवल रामनाम आधारा
सुमिर सुमिर नर उतरहिं पारा।

जिस प्रकार से हम एक छोटी से नौका से विशाल समुन्द्र पार कर सकते है उसी प्रकार राम नाम स्मरण करने मात्र से व्यक्ति भव सागर पार कर जाते है।

अध्यात्मिक दृष्टि राम का महत्व स्पष्टत: परिलक्षित होता है। यदि हम गौर करेंगे तो यही पाएंगे कि राम का पूरा जीवन जिन विषमताओं व द्वन्दों से परिपूर्ण रहा यदि आप उनकी मात्र कल्पना भी करेंगे तो अवश्य ही सिहर उठेंगे।

जिस समय राज्य–अभिषेक के लिए राम को बुलाया गया उनके चेहरे पर मंद मुस्कान थी। लेकिन ठीक उसी समय उन्हें राजपद के स्थान पर वनवास जाने का आदेश मिला। वनवास जाने की बात सुनकर भी उनका मुख विवर्ण नही हुआ, क्रोध भी नही आया,बल्कि उनके चेहरे पर उस समय भी वही मंद मुस्कान फैल गयी। ऐसी कठिन परिस्थिति में अपना धैर्य व मानसिक संतुलन बनाये रखने का साहस राम ही कर सकते है।

वर्तमान परिपेक्ष्य में जीवन मे असफलता प्राप्त होने पर हताशा, निराशा में डूबे असंख्य युवा आत्महत्या कर लेते है। विकट परिस्थितियों में आज भी सम– भाव रखने की प्रेरणा श्री राम के उदात्त चरित से मिलती है। हर्ष –विषाद, सुख–दु:ख, जीवन के उतार– चढ़ाव में विचलित हुए बिना किस प्रकार हम सम भाव बनाये रख सकते है इसके के प्रेरणास्त्रोत राम ही है। हताशा निराशा से कोसों दूर संकल्पशक्ति, लक्ष्य के प्रति एकाग्रता की मिसाल स्वरूप राम का चरित्र आज भी युवावर्ग को निराशा हताशा टेंशन, डिप्रेशन के कुहासे से निकालकर सफलता के प्रचंड सूर्य से उनका साक्षात्कार कराने में सक्षम है।

राम का वनवास प्रसंग हम सभी का पथप्रदर्शक बनकर यही शिक्षा देता है कि सफलता कभी भी अपरिमित संसाधनो की मोहताज नही होती। किस प्रकार राम ने बिना किसी बड़ी सेना, कम धन, केवल सङ्गठन शक्ति व अपनी दूरदर्शिता व सुयोजना के कारण अपने प्रतिद्वंदी महापराक्रमी ,लंकापति रावण का संहार किया। इस प्रसार हम देखते है राम का चरित्र, पराक्रम दूरदर्शिता, सङ्गठन शक्ति, सद्भावना, मैत्री विनम्रता धैर्य, सदाचार, भ्रातृप्रेम, आज्ञापालन प्रजावत्सलता का उद्घोषक है जो युगों युगों तक भावी पीढ़ी का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा।

राम का 14 वर्ष का वनवास तो कब का खत्म हो गया था। अपनी अयोध्या नगरी से निकाले राम का राजनैतिक वनवास भी सभी सच्चे सनातनियो के वर्षो के अथक प्रयास, बलिदान के बाद अब 22 जनवरी को समाप्त होने वाला है त्रिकालतीत, लोकनायक राम लला की प्राणप्रतिष्ठा की वैश्विक स्तर पर प्रतीक्षा की जा रही है। विश्व के राम भक्त अपने पालक पावड़े बिछा कर अपने राम की प्रतीक्षा कर रहे है। प्रत्येक सनातनी की आंखों में पलने वाले सुनहरा स्वप्न पूरा होने जा रहा है। जब तक सूर्य, चंद्र, गिरि वन, कानन, वृक्ष आदि पृथ्वी पर रहेंगे। तब तक श्री राम प्रत्येक के दिल मे रहकर सदा अनुकरणीय रहेगे।

भज रामम द्वापर नायकं
भज रामम युगप्रवर्तकम
सार्थक नामो रामस्य
शुचितो युग युगांतरो

युगयुगान्तर में शुचिता के लिए प्रसिद्ध श्री राम का नाम ही सार्थक है। इस लिए द्वापर के नायक युगप्रवर्तक प्रभु श्री राम का भजन करना चाहिए।

श्री राम के चरणों मे मेरा कोटि कोटि प्रणाम ■

प्रेरक प्रसंग : सीख

दोस्तों, कितनी बड़ी समस्या क्यों न हो जब तक हम डट कर उसका सामान नहीं करते तब तक हम कोई भी उपलब्धि हांसिल नहीं कर सकते। आप जितना आगे बढ़ेंगे आपका समस्याओं से सामना उतना ही होगा। समस्याओं का सामना करे से वो छोटी हो जाती हैं और डर जाने से बड़ी हो जाती हैं।

मकर संक्रान्ति

डॉ. अर्चना प्रकाश
स्वतंत्र लेखन
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

हिंदू धर्म में मकर संक्रांति का विशेष महत्व है। शास्त्रों के अनुसार भगवान सूर्य बारह राशियों में भ्रमण के दौरान जब मकर राशि में प्रवेश करते हैं तब (यानी अपने पुत्र शनि की राशि में) मकर संक्रांति का त्यौहार मनाया जाता है।

इस त्यौहार को संक्रांत, लोहड़ी, टिहरी, पोंगल आदि नामो से भी जाना जाता है। उत्तर भारत में इसे खिचड़ी कहा जाता है ऐसी मान्यता है कि सूर्य के मकर राशि में होने पर तिल खाना शुभ होता है इसीलिए इस दिन तिल गुड़ के लड्डू भोजन में खिचड़ी खाना लाभदायक एवम उपयोगी माना जाता है।

रोमन नव वर्ष के प्रारंभ में मकर संक्रांति पर्व मनाया जाता है यह सूर्य पूजा का महापर्व है इसी कारण अन्य संक्रांतियों से ज्यादा मकर संक्रांति का महत्व है वर्ष 2024 में 15 जनवरी 2024 सोमवार को मनाई जाए गी मकर संक्रांति।

मकर संक्रांति का पुण्य काल सुबह 7:15 से शाम 5:40 तक 10 घंटे 31 मिनट तक माहा पुण्य काल रहेगा।

सूर्य के मेष राशि में प्रवेश को संक्रांति कहते हैं। इसे वर्ष की शुरुआत का समय भी माना जाता है। इस दिन इस दिन को भारत के कई राज्यों में त्यौहार की तरह भी मनाया जाता है जैसे– बंगाल में पोहेला, बोईशाख, पंजाब में बैसाखी, उड़ीसा में पाना संक्रांति आदि।

खगोल शास्त्र के अनुसार मेष संक्रांति के दिन सूर्य उत्तरायण की आधी यात्रा पूर्ण कर लेते है। सौर वर्ष के दो भाग हैं उत्तरायण छह माह का और दक्षिणायन भी छह माह का। सूर्य का मेष राशि में प्रवेश सौर वर्ष या सोलर कैलेंडर का पहला माह है।

धार्मिक मान्यता है इस दिन गंगा व गंगा सागर स्नान व तिल गुण एवं खिचड़ी का दान भी विशेष महत्वपूर्ण है। धर्माचार्यों का मत है कि इस दिन पवित्र नदियों में स्नान के बाद तिल चावल का होम करने से एवं चूड़ा, तिल, मिठाई, खिचड़ी, गर्म कपड़े दान करने से घर सुख समृद्धि आती है।

इसके अलावा मकर राशि में सूर्य के होते ही सूर्य देव उत्तरायण हो जाते हैं जिससे देवताओं के दिन और दैत्यों के लिए रात्रि काल शुरू होता है। इसके साथी खरमास भी समाप्त होकर माघ मास के प्रारंभ के साथ विवाह, मुंडन, जनेऊ जैसे मांगलिक कार्यो के आयोजन होने लगते हैं।

मकर संक्रांति की पूजन विधि के लिए सूर्य देव को अर्घ्य में जल में लाल पुष्प अक्षत सुपारी आदि अर्पित की जाती है। मकर संक्रांति पितरों के मोक्ष के लिए भी महत्वपूर्ण दिन है। पितरों के मोक्ष के लिए पवित्र नदियों की बहती जलधारा में तिलांजलि अर्पित की जाती है, एवं उनके नाम से गुप्त दान भी जलधारा में ही किया जाता है।

अधिकांश वर्षों में मकर संक्रांति 14 जनवरी को ही पड़ती है। लेकिन कैलेंडर के अनुसार यह लीप वर्ष में इस वर्ष 2024 में 15 जनवरी को मनाई जाएगी। इस दिन सूर्य देव धनुष राशि से निकलकर सुबह 2:00 बाज कर 54 मिनट पर मकर राशि में प्रवेश करेंगे।

मकर संक्रांति हिंदू धर्म के सबसे महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक है।

इस वर्ष की मकर संक्रांति एवं पूजन विधि : इस वर्ष 2024 में देशभर में 15 जनवरी मकर संक्रांति मनाने की धर्माचार्य की सम्मति है। इस दिन सुबह जल्दी उठकर सर्वप्रथम घर की साफ सफाई करके पानी में तिल गंगाजल डालकर स्नान करें। इससे कुंडली के ग्रह दोष दूर होते हैं। एवं सूर्य व शनि शनि दोनों की कृपा प्राप्त होती है। इसके बाद सूर्य मंत्र जाप या सूर्य चालीसा पाठ के बाद गुड तिल का होम करें। शुद्ध मन से यथाशक्ति तिल गुड़ खिचड़ी, फल, ऊनी वस्त्र दान दे कर स्वयं प्रसाद में गुण या गन्ने के रस की खीर एवं खिचड़ी का भोजन करें।

धार्मिक मान्यता है कि संक्रांति के दिन ही स्वर्ग का दरवाजा खुल जाता है। इसी लिए इस दिन किया गया दान पुण्य अन्य दिनों की अपेक्षा अधिक फलदाई होता है। एक मान्यता यह भी है कि मकर संक्रांति में सूर्य का तेज बढ़ता है। इसी कारण इस दिन सूर्य की पूजा करने से व्यक्ति को मान सम्मान धन व यश समृद्धि का अधिकतम लाभ भी मिलता है।

ज्यादातर हिंदू त्योहारों की गणना चंद्रमा पर आधारित पंचांग के अनुसार की जाती है। लेकिन मकर संक्रांति पर्व सूर्य पर आधारित पंचांग की गणना से मनाया जाता है। मकर संक्रांति से ही ऋतु परिवर्तन शुरू होते हैं होने लगते हैं। इस दिन से शरद की शीत चीढ़होने लगती है और वसंत के आगमन की संदेश मिलने लगते हैं। इस दिन सूर्य देव अपने पुत्र शनि के घर जाते हैं। इसलिए यह पर्व पिता पुत्र के अनोखे मिलन से भी जुड़ा है। धान सरसों की लहलहाती फसलों की कटाई से इस त्यौहार का महत्व अधिक बढ़ जाता है। किसान इसे आशीर्वाद दिवस के रूप में मनाते हैं।

जब सूर्य देव पूर्व से उत्तर की ओर गमन करते हैं तब उसकी किरणें सेहत व शांति को बढ़ाती हैं। इसी वजह से साधु संत और आध्यात्मिक क्रियाओं से जुड़े लोग इस दिन तंत्र–मंत्र व अनेक सिद्धियां प्राप्त करते हैं। श्री कृष्ण ने गीता में कहा है कि जब सूर्य उत्तरायण में होते हैं तब पृथ्वी प्रकाशमय में हो जाती है। अतः इस प्रकाश में शरीर त्यागने से मनुष्य का पुनर्जन्म नहीं होता है और वह ब्रह्म को प्राप्त होता है। महाभारत काल में भीष्म पितामह जिन्हें इच्छा मृत्यु का वरदान था उन्होंने भी मकर संक्रांति के दिन शरीर त्यागा था।

अंत में एक तथ्य यह है कि मकर संक्रांति पर मीठे पकवान खाने और खिलाने से रिश्तों में आई कड़वाहट दूर होती है और व्यक्ति सकारात्मक ऊर्जा के साथ जीवन में आगे बढ़ता है।

संदर्भ :
1. जी न्यूज
2, हिंदी वेब दुनिया
3, वेगो ट्रैवल ब्लॉग

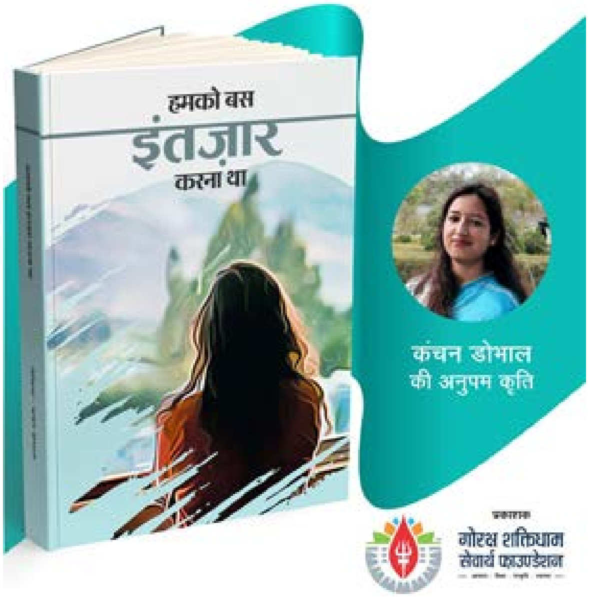

वैदिक साहित्य और संस्कृति

आज हम बात करते हैं वैदिक साहित्य और संस्कृति की। हिंदू धर्म और भारतीय सभ्यता संस्कृति पूरे विश्व में पूजनीय, अनुकरणीय एवं अग्रगण्य है क्योंकि यह पूरी तरह प्रामाणिक, सार्वकालिक, सार्वभौमिक, सर्व कल्याणकारी है। यूं ही नहीं पूरी दुनिया में भारत को 'जगतगुरु' कहा जाता है और यह उक्ति ऐसे ही नहीं बनी है कि .... कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।

डॉ. विदुषी शर्मा
(वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर)
संकलन विश्लेषण कर्ता
अकादमिक काउंसलर, IGNOU
शोध निर्देशक, JJTU
विशेषज्ञ, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, उच्चतर शिक्षा विभाग, भारत सरकार
OSD, (Officer on Special Duty) NIOS
दिल्ली

विषय–प्रवेश : भारतीय संस्कृति की महत्ता– भारतीय संस्कृति विश्व के इतिहास में कई दृष्टियों से विशेष महत्त्व रखती है। यह संसार की प्राचीनतम संस्कृतियों में से है। मोहनजोदड़ों की खुदाई के बाद से यह मिस्र मेसोपोटेमिया की सबसे पुरानी सभ्यताओं के समकालीन समझी जाने लगी है। प्राचीनता के साथ इसकी दूसरी विशेषता अमरता है। चीनी संस्कृति के अतिरिक्त पुरानी दुनिया की अन्य सभी–मेसोपोटेमिया की सुमेरियन, असीरियन, बेबीलोनियन और खाल्दी प्रभृति तथा मिस्र ईरान, यूनान और रोम की–संस्कृतियाँ काल के कराल गाल में समा चुकी हैं, कुछ ध्वंसावशेष ही उनकी गौरव–गाथा गाने के लिए बचे हैं। किन्तु भारतीय संस्कृति कई हजार वर्ष तक काल के क्रूर थपेड़ों को खाती हुई आज तक जीवित है। उसकी तीसरी विशेषता उसका जगद्गुरु होना है। उसे इस बात का श्रेय प्राप्त है कि उसने न केवल महाद्वीप–सरीखे भारतवर्ष को सभ्यता का पाठ पढ़ाया, अपितु भारत के बाहर बड़े हिस्से की जंगली जातियों को सभ्य बनाया, साइबेरिया के सिंहल (श्रीलंका) तक और मैडीगास्कर टापू, ईरान तथा अफगानिस्तान से प्रशांत महासागर के बोर्नियो, बाली के द्वीपों तक के विशाल भू–खण्ड पर अपना अमिट प्रभाव छोड़ा। सर्वांगीणता, विशालता, उदारता और सहिष्णुता की दृष्टि से अन्य संस्कृतियाँ उसकी समता नहीं कर सकतीं।

इस अनुपम और विलक्षण संस्कृति के उत्तराधिकारी होने के नाते इसका यथार्थ ज्ञान प्राप्त करना हमारा परम आवश्यक कर्त्तव्य है। इससे न केवल हमें उसके गुण प्रत्युत दोष भी मालूम होंगे। यह भी ज्ञात होगा कि किन कारणों से उसका उत्कर्ष और अपकर्ष हुआ। इसमें तो कोई सन्देह नहीं कि भारतीय संस्कृति का अतीत अत्यन्त उज्ज्वल था, किन्तु हमारा

कर्त्तव्य है कि हम भविष्य को भूत से भी अधिक उज्ज्वल और गौरवपूर्ण बनाने का प्रयास करें। यह सांस्कृति इतिहास के गम्भीर अध्ययन से ही सम्भव है।

किन्तु इससे पहले संस्कृतिक के स्वरूप का सामान्य परिचय आवश्यक है।

⏩ सभ्यता और संस्कृति–संस्कृति का शब्दार्श है उत्तम या सुधरी हुई स्थिति। मनुष्य स्वभावतः प्रगतिशील प्राणी है। यह बुद्धि के प्रयोग से अपने चारों ओर की प्राकृतिक परिस्थिति को निरन्तर सुधारता और उन्नत करता रहता है। ऐसी प्रत्येक जीवन–पद्धति, रीति–रिवाज रहन–सहन आचार–विचार नवीन अनुसन्धान और आविष्कार, जिससे मनुष्य पशुओं और जंगलियों के दर्जे से ऊँचा उठता है तथा सभ्य बनता है, सभ्यता और संस्कृति का अंग है। सभ्यता (Civilization) से मनुष्य के भौतिक क्षेत्र की और संस्कृति (Culture) से मानसिक क्षेत्र की प्रगति सूचित होती है। प्रारम्भ में मनुष्य आँधी–पानी, सर्दी–गर्मी सब कुछ सहता हुआ जंगलों में रहता था, शनैःशनैः उसने इन प्राकृतिक विपदाओं से अपनी रक्षा के लिए पहले गुफाओं और फिर क्रमशः लकड़ी, ईंट या पत्थर के मकानों की शरण ली। अब वह लोहे और सीमेन्ट की गगनचुम्बी अट्टालिकाओं का निर्माण करने लगा है। प्राचीन काल में यातायात का साधन सिर्फ मानव के दो पैर ही थे। फिर उसने घोड़े, ऊँट, हाथी, रथ और बहली का आश्रय लिया। अब मोटर और रेलगाड़ी के द्वारा थोड़े समय में बहुत लम्बे फासले तय करता है, हवाई जहाज द्वारा आकाश में भी उड़ने लगा है। पहले मनुष्य जंगल के कन्द, मूल और फल तथा आखेट से अपना निर्वाह करता था। बाद में उसने पशु–पालन और ऋषि के आविष्कार द्वारा आजीविका के साधनों में उन्नति की। पहले वह अपने सब कार्यों को शारीरिक शक्ति से करता था। पीछे उसने पशुओं को पालतू बनाकर और सधाकर उनकी शक्ति का हल, गाड़ी आदि में उपयोग करना सीखा। अन्त में उसने हवा पानी, वाष्प, बिजली और अणु की भौतिक शक्तियों को वश में करके ऐसी मशीनें बनाई, जिनसे उसके भौतिक जीवन में काया–पलट हो गई। मनुष्य की यह सारी प्रगति सभ्यता कहलाती है।

⏩ संस्कृति का स्वरूप–मनुष्य केवल भौतिक परिस्थितियों में सुधार करके ही सन्तुष्ट नहीं हो जाता। वह भोजन से ही नहीं जीता, शरीर के साथ मन और आत्मा भी है। भौतिक उन्नति से शरीर की भूख मिट सकती है, किन्तु इसके बावजूद मन और आत्मा तो अतृप्त ही बने रहते हैं। इन्हें सन्तुष्ट करने के लिए मनुष्य अपना जो विकास और उन्नति करता है, उसे संस्कृति कहते हैं। मनुष्य की जिज्ञासा का परिणाम धर्म और दर्शन होते हैं। सौन्दर्य की खोज करते हुए वह संगीत, साहित्य, मूर्ति, चित्र और वास्तु आदि अनेक कलाओं को उन्नत करता है। सुखपूर्वक निवास के लिए सामाजिक और राजनीतिक संघटनों का निर्माण करता है। इस प्रकार मानसिक क्षेत्र में उन्नति की सूचक उसकी प्रत्येक 'सम्यक्–ति' संस्कृति का अंग बनती है। इनमें प्रधान रूप से धर्म, दर्शन, सभी ज्ञान–विज्ञानों और कलाओं, सामाजिक तथा राजनीतिक संस्थाओं और प्रथाओं का समावेश होता है।

⏩ संस्कृति का निर्माण–किसी देश की संस्कृति उसकी सम्पूर्ण मानसिक निधि को सूचित करती है। यह किसी खास व्यक्ति के पुरुषार्थ का फल नहीं, अपितु असंख्य ज्ञात तथा अज्ञात व्यक्तियों के भगीरथ प्रयत्न का परिणाम होती है। सब व्यक्ति अपनी सामर्थ्य और योग्यता के अनुसार संस्कृति के निर्माण में सहयोग देते हैं। संस्कृति की तुलना आस्ट्रेलिया के निकट समुद्र में पाई जाने वाली मूँगे की भीमकाय चट्टानों से की जा सकती है। मूँगे के असंख्य कीड़े अपने छोटे घर बनाकर समाप्त हो गए। फिर नए कीड़ों ने घर बनाये, उनका भी अन्त हो गया। इसके बाद उनकी अगली पीढ़ी ने भी यही किया और यह क्रम हजारों वर्ष तक निरन्तर चलता रहा। आज उन सब मूगों के नन्हे–नन्हे घरों ने परस्पर जुड़ते हुए विशाल चट्टानों का रूप धारण कर लिया है। संस्कृति का भी इसी प्रकार धीरे– धीरे निर्माण होता है और उनके निर्माण में हजारों वर्ष लगते हैं। मनुष्य विभिन्न स्थानों पर रहते हुए विशेष प्रकार के सामाजिक वातावरण, संस्थाओं, प्रथाओं, व्यवस्थाओं, धर्म दर्शन लिपि भाषा तथा कलाओं का विकास करके अपनी विशिष्ट संस्कृति का निर्माण करते हैं। भारतीय संस्कृति की रचना भी इसी प्रकार हुई है।

⏩ वेदों का महत्त्व–भारतीय संस्कृति।

⏩ शिक्षा–उन ग्रन्थों को शिक्षा कहते हैं, जिनकी सहायता से वेद–मन्त्रों के उच्चारण का शुद्ध ज्ञान होता था। वेद–पाठ में स्वरों का विशेष महत्त्व था। इनकी शिक्षा के लिए पृथक् वेदांग बनाया गया। इसमें वर्णों के उच्चारण के अनेक नियम दिये गये हैं। संसार में उच्चारण–शास्त्र की वैज्ञानिक विवेचना करने वाले पहले ग्रन्थ यही हैं। ये वेदों की विभिन्न शाखाओं से सम्बन्ध रखते हैं और प्रातिशाख्य कहलाते हैं। ऋग्वेद अथर्ववेद, वाजसनेयी व तैत्तिरीय संहिता के प्रातिशाख्य मिलते हैं। बाद में इसके आधार पर शिक्षा–ग्रन्थ लिखे गये। इनमें शुक्ल यजुर्वेद की याज्ञवल्क्य–शिक्षा, सामवेद की नारद शिक्षा और पाणिनि की पाणिनीय शिक्षा मुख्य हैं।

⏩ छन्द–वैदिक मन्त्र छन्दोवद्ध हैं। छन्दों का ठीक ज्ञान बिना प्राप्त किये, वेद– मन्त्रों का शुद्ध उच्चारण नहीं हो सकता। अतः छन्दों की विस्तृत विवेचना आवश्यक समझी गई। शौनक मुनि के ऋक्प्रातिशाख्य में, शांखायन श्रौतसूत्र में तथा सामवेद से सम्बद्ध निदान सूत्र में इस शास्त्र का व्यवस्थित वर्णन है। किन्तु इस वेदांग का एकमात्र स्वतन्त्र ग्रन्थ पिंगलाचार्य–प्रणीत छन्द सूत्र है। इसमें वैदिक और लौकिक दोनों प्रकार के छन्दों का वर्णन है।

⏩ व्याकरण–इस अंग का उद्देश्य सन्धि, शब्द–रूप, धातु–रूप तथा इनकी निर्माण–पद्धति का ज्ञान कराना था। इस समय व्याकरण का सबसे प्रसिद्ध ग्रन्थ पाणिनी का अष्टाध्यायी हैय किन्तु व्याकरण का विचार ब्राह्मण–ग्रन्थों के समय से शुरू हो गया था। पाणिनी से पहले गार्ग्य, स्फोटायन, भारद्वाज आदि व्याकरण के अनेक महान् आचार्य हो चुके थे। इन सबके ग्रन्थ अब लुप्त हो चुके हैं।

⏩ निरुक्त–इसमें वैदिक शब्दों की व्युत्पत्ति दिखाई जाती थी। प्राचीन काल में वेद के कठिन शब्दों की क्रमबद्ध तालिका और कोश निघंटु कहलाते थे और इनकी व्याख्या निरुक्त में होती थी।

आजकल केवल यास्काचार्य का निरुक्त ही उपलब्ध होता है। इसका समय 800 ई. पू. के लगभग है।

▸▸ ज्योतिष–वैदिक युग में यह धारणा थी कि वेदों का उद्देश्य यज्ञों का प्रतिपादन है। यज्ञ उचित काल और मुहूर्त में किये जाने से ही फलदायक होते हैं। अतः काल–ज्ञान के लिए ज्योतिष का विकास हुआ। यह वेद का अंग समझा जाने लगा। इसका प्राचीनतम ग्रन्थ लगधमुनि–रचित वेदांग ज्योतिष है।

श्रौत, गृह्य एवं धर्म सूत्रों के ही कल्प सूत्र कहते हैं। इनका वर्णन ऊपर किया जा चुका है।

▸▸ वैदिक साहित्य का काल–इस विषय के विद्वानों में पर्याप्त मतभेद है कि वेदों की रचना कब हुई और उनमें किस काल की सभ्यता का वर्णन मिलता है। भारतीय वेदों को अपौरुषेय (किसी पुरुष द्वारा न बनाया हुआ) मानते हैं अतः नित्य होने से उनके काल–निर्धारण का प्रश्न ही नहीं उठतायकिन्तु पश्चिमी विद्वान इन्हें ऋषियों की रचना मानते हैं और इसके काल के सम्बन्ध में उन्होंने अनेक कल्पनाएँ की हैं। उनमें पहली कल्पना मैक्समूलर की है। उन्होंने वैदिक साहित्य का काल 1200 ई. पू. से 600 ई. पू. माना है। दूसरी कल्पना जर्मन विद्वान विण्टरनिट्ज की है। उसने वैदिक साहित्य के आरम्भ होने का काल 2500–2000 ई. पू. तक माना। तिलक और याकोबी ने वैदिक साहित्य में वर्णित नक्षत्रों की स्थिति के आधार पर इस साहित्य का आरम्भ काल 4500 ई.पू. माना। श्री अविनाशचन्द्र दास तथा पावगी ने ऋग्वेद में वर्णित भूगर्भ–विषयक साक्षी द्वारा ऋग्वेद को कई लाख वर्ष पूर्व का ठहराया है।

सत्य सनातन धर्म बहुत ही वृहद एवं अनुकरणीय है। यह हमारी भारतीय संस्कृति का आधार स्तंभ है, यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इसी प्रकार और भी बहुत कुछ है। लेकिन आज के लिए सिर्फ इतना ही। ■

> **हर साल एक बुरी आदत को जड़ से खोदकर फेंका जाए तो कुछ ही साल में बुरे से बुरा आदमी भी भला हो सकता है**

नया वर्ष शुभ मंगलमय हो

डॉ. विष्णुप्रसाद पाठक
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

नया वर्ष शुभ मंगलमय हो,
रवि सा दीप्त प्रकाशमान हो।
दिन सा उज्ज्वल नवोन्मेष हो,
निशाकांत सी शीतलता हो।
मधुवसंत सा मनभावन हो।।

मलयज सुरभित मंदपवन हो,
सर सरिता निर्मल पावन हो।
रात रुपहली दिवस सुखद हो,
हर दिन प्यारा उजियारा हो।
निशदिन प्रगतिशील जीवन हो।।

शस्य श्यामला वसुन्धरा हो,
अन्धकारतम का विनाश हो।
साक्षरता का नित विकास हो,
ज्ञान प्रकाश प्रभा भाषित हो।
पथ प्रतिपल आलोकित हो।।

मानवधर्म प्रकृति समुदित हो,
देश वासियों का अभ्युदय हो।
प्राणि मात्र का समुत्थान हो,
जनजीवन सब सुखमय हो।
सुखसाधन परिपूर्ण धरा हो।।

समता ममता समादरण हो,
सदाचरण का नव प्रकर्ष हो।
नैतिकता का अभ्युत्थान हो,
शिवकारी जनमन समाज हो।
वैभवश्रीसंपन्न भरा भारत हो।।

12 जनवरी पर विशेष

मानवतावाद के अग्रदूत स्वामी विवेकानंद

डॉ. हनुमान प्रसाद उत्तम
स्वतंत्र लेखन
योग. प्राकृतिक चिकित्सा विशेषज्ञ
(आयुर्वेद रत्न)
कानपुर नगर, उत्तर प्रदेश

समग्र मानव जाति की हित–कामना से अनुप्राणित होकर जीवन–साधना करने वाले आधुनिक महाप्राण मनीषियों में स्वामी विवेकानंद का स्थान सर्वोच्च है। उनकी चिंता समग्र विश्व को लेकर थी। उनकी चेतना उच्च आदर्शों से युक्त थी। वे चाहते थे कि संसार में धर्म के सच्चे स्वरुप की स्थापना हो। धर्म को परिभाषित करते हुए वैशेषिक दर्शन कहता है 'यतो अभ्युदय निश्रेयस सिद्धि सः धर्मः' अर्थात् जिससे अभ्युदय का अर्थ है भौतिक उन्नति और निश्रेयस का अर्थ है परमार्थिक विकास। स्वामी जी धर्म के इसी रुप को विश्व में स्थापित हुआ देखना चाहते थे। उनकी स्पष्ट धारणा थी कि समष्टि के ही सुख में व्यष्टि का सुख है। सब की उन्नति में ही प्रत्येक की उन्नति है। व्यक्ति तब तक स्वतंत्र नहीं हो सकता, जब तक मानव जाति संपन्न और सुखी नहीं होगी। उन्होंने कहा है, 'समष्टि के जीवन में व्यष्टि का जीवन है। समष्टि के सुख में व्यष्टि का सुख है। समष्टि के बिना व्यष्टि का अस्तित्व असंभव है। यही अनन्त सत्य जगत का मूलाधार है। अनन्त समष्टि के साथ सहानुभूति रखते हुए उसके सुख में सुख और उसके दु:ख में दु:ख मानकर धीरे–धीरे आगे बढ़ना ही व्यष्टि का एकमात्र कर्तव्य है।'

20 सितम्बर, 1892 को खेतड़ी निवासी पं. शंकरलाल के एक पत्र का उत्तर देते हुए स्वामी जी ने ईश्वर को सर्वशक्तिमान मानकर अपना विश्वास प्रकट किया। उन्होंने लिखा है, 'हे भगवान! मनुष्य कब दूसरे मनुष्यों को भाई चारे का बर्ताव करना सीखेगा।' स्वामी जी मनुष्य में ईश्वर का दर्शन करते थे। उनका मानना था कि दु:खी और पीड़ित मानवता की

सेवा ही सच्ची ईश्वर साधना है।

वे उच्च वर्ग वालों से कहते थे कि वे दलित मनुष्य से प्यार करना सीखें, ''प्रेम ही मैदान जीतेगा। क्या तुम अपने भाई मनुष्य जाति को प्यार करते हो? ईश्वर को कहां ढूंढने चले हो? ये सब गरीब, दु:खी, दुर्बल मनुष्य क्या ईश्वर नहीं है? इन्हीं की पूजा पहले क्यों नहीं करते? गंगा तट पर कुआं खोजने क्यों जाते हो?''

स्वामी जी का मानना था कि मानव जाति की वास्तविक शक्ति, अस्पृश्य, दलित और नीच समझे जाने वाले शूद्रों में है। वे मनुष्य–मनुष्य के बीच की इस विभाजन को मिटा देना चाहते हैं। वे मानते थे कि मेहतरों, मजदूरों, मोचियों, धोबियों, डोमों और ऐसे ही अन्य कर्मकारों ने सदियों से मौन रहकर अनन्त अत्याचार सहे हैं। ये अभागे रात–दिन श्रम करके मानवता को सुखी बनाने का प्रयास करते है। वे आधा पेट खाकर भी विश्व की हालत सुधार सकते हैं। संसार में बड़ी–बड़ी क्रांतियां इन्हीं के बल पर हुई हैं और आगे भी होंगी। राष्ट्र इन्हीं की झोपड़ियों में बसता है। वे मुट्ठी भर सत्तू खाकर सम्पूर्ण विश्व की स्थिति को बदल सकते हैं। इनमें अपार शक्ति है, अपार शांति है। मानवता के लिए प्रेम है और ये मौन रहकर सब–कुछ सहते हैं। फिर भी, कार्य के समय इनमें सिंह का पराक्रम प्रकट होता हे। इनमें कर्तव्य बोध के साथ–साथ प्रशंसा, पराङ्मुखता भी है। ये निर्लिप्त रहते हैं। गीता के निष्काम कर्म योग के ये शूद्र ही सच्चे साधक है। यहां तक की इनमें तो अपने कार्य के लिए प्रशंसा पाने की ललक भी नहीं है। ऐसे श्रमजीवियों को सम्बोधित करते हुए स्वामी जी ने एक बार कहा था, ''बड़ा काम आने पर बहुतेरे हो जाते हैं। दस हजार आदमियों की वाहवाही के सामने का पुरुष भी सहज में ही प्राण दे देता है। घोर स्वार्थ पर भी निष्काम हो जाता है, परंतु अत्यंत छोटे से कर्म में भी सब के अज्ञान भाव से जो वैसी निस्वार्थता, कर्तव्यपरायण दिखाते हैं, वे ही धन्य हैं। वे तुम लोग हो। भारत के हमेशा के पैरों के तले कुचलते गए श्रमजीवियों! तुम लोगों को मैं प्रणाम करता हूं।''

मानव जाति के विकास के लिए स्वामी जी पहले विश्व की गरीबी दूर करना चाहते थे। उनका कहना था कि भूखे लोगों को आध्यात्मिक उपदेश देना उन पर अत्याचार करना है। पहले पेट की चिंता की जानी चाहिए। लोगों का पेट भरा होगा, तो वे ईश्वर साधना में भी प्रवृत होंगे। पाठशालाएं खुलवा भी दी जाएं, तो भी वे खाली पड़ी रहेंगी, जब तक कि उनकी रोटी की समस्या हल नहीं हो जाती। लोगों को भोजन मिले, उनकी दैनिक आवश्यकताएं पूरी हों, तभी आगे की बात सोची जा सकती है। उन्नति का द्वार यहीं से खुलेगा।

सामाजिक जीवन में वे स्वतंत्रता और समता के पक्षधर थे। उनका मानना था, ''हरेक विषय में स्वतंत्रता अर्थात् मुक्ति की प्रगति ही मनुष्य के लिए उच्चतम लाभ है। जो सामाजिक नियम इस स्वतंत्रता के मार्ग में बाधक हैं, वे हानिकारक हैं और उनको नष्ट करने का उपाय शीघ्रता से करना चाहिए। जिन संस्थाओं के द्वारा मनुष्य स्वतंत्रता के मार्ग में अग्रसर होते हैं, उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए।'' जब तक समता, भ्रातृत्व और स्वतंत्रता को मानव समाज जीवन में मूल रुप से स्वीकार नहीं करता, उसकी प्रगति नहीं हो सकती। सदियों पुराने बंधन खोलने ही होंगे।

पहले भारतवर्ष में ब्राह्मणों के ज्ञान और क्षत्रियों की शक्ति ने मिलकर शासन किया। क्षत्रिय के पास शारीरिक बल और भौतिक शक्ति थी। फिर भी, उन पर सर्वस्वव्यापी ब्राह्मणों का वर्चस्व था। फिर, ब्राह्मणों और क्षत्रियों की शक्ति को वैश्य अंग्रेजों की शक्ति ने पराभूत किया। उनका मानना था कि आगे आने वाला समय शूद्रों का है। संसार के विभिन्न देशों में विभिन्न कालों में इसी प्रकार विभिन्न वर्णों की शक्तियों का उत्थान और पतन होता रहा है, परंतु उन्हें लगता है कि मनुष्य जाति को इन सबकी आवश्यकता है, क्योंकि ब्राह्मण का ज्ञान, क्षत्रिय की शक्ति, वैश्य का धन और शूद्र की कर्मशीलता मिलकर ही सम्पूर्ण मानवता की सृष्टि करेंगी। जीवंत मानवता इन सबका समुच्चय होगी। उनकी कामना है, ''यदि इस प्रकार का राष्ट्र बन सके, जहां पुरोहित का ज्ञान, योद्धा की संस्कृति, व्यापारी की विचारशीलता और अंतिम वर्ण की समता का आदर्श ज्यों का त्यों बना रहे, लेकिन उनके दोश हटा दिए जाए, तो वह आदर्श राष्ट्र होगा।''

स्वामी जी का मानना था कि आत्मवत् सर्वभूतेषु के मंत्र को अपनाकर ही प्रत्येक मानव अपने समाज का हित कर सकता है। वे उन लोगों को विश्वासघातक और हीन समझते थे, जो गरीबों के पैसों से अध्ययन करके बनकर अपने लिए सुख–साधन इकट्ठे करने में जीवन बिता देते थे। ''जब तक संसार में भूख है, अशिक्षा है, तब तक मनुष्य को सुख भोगने का अधिकार नहीं। जब तक सुख का समान वितरण नहीं होता, मनुष्यता प्रगति नहीं कर सकती। मानव के भीतर मानवता का गुण होना चाहिए। यदि वह नहीं है, तो सब कुछ व्यर्थ है।''

मानवता के सच्चे विकास में स्वामी जी स्त्री जाति को भी समान रुप से सहभागी देखना चाहते थे। उनकी धारणा थी कि स्त्रियां मनुष्य समाज का अर्द्धांश है। जब तक वे संस्कारित और चरित्रवती नहीं होती रहेंगी, तब तक मानवता का हित नहीं हो सकता। विश्व कल्याण का मार्ग नारी के निकट होकर ही रह जाता है। इसलिए वे शिक्षा का प्रसार करना चाहते थे। वे चाहते थे कि चरित्रवती और सुसंस्कारित ब्रह्मचारियां घर–घर जाकर नारियों को शिक्षित करें उन्हें नैतिक शिक्षा दी जाए। उनके संस्कार उच्च बनाए जाएं। उनके भीतर सोई हुई आत्मशक्ति को जगाया जाए। उन्हें आत्मा के दर्शन करवाए जाएं, ताकि वे श्रेष्ठ माता, योग्य भगिनी तथा आदर्श पुत्री बन सके। मातृत्व की सच्ची साधना ही उनके जीवन का चरम प्राप्य होनी चाहिए, क्योंकि एक माता पुत्र की जननी ही नहीं होती, वह उसकी गुरु भी होती है।

मानवता के विकास में विवेकानंद धर्म को सर्वोच्च महत्वपूर्ण साधन मानते थे। उनका विचार था कि एक दिन धर्म की ध्वजा हाथ में लेकर भारत विश्व का नेतृत्व करेगा। उसने संसार के प्रचार के लिए शक्ति का सहारा कभी नहीं लिया। इसलिए नव मानवता के विकास में भारत को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। उनका विश्वास था कि काल के दुश्चक्र के फलस्वरुप भारत ने पराजय और पीड़ा का मुख देखा। लंबे समय तक गुलामी की पीड़ा झेली, परंतु अब कालचक्र पुन: घूम रहा है और भारत की सोयी

हुई शक्तियां अब उठकर खड़ी होगी। उनका चैतन्य जागेगा और हमारा प्रिय राष्ट्र संसार का नेतृत्व करके उसे उसके गन्तव्य तक पहुंचाएगा।

स्वामी जी स्वार्थोन्मुलन को धर्म का प्रथम लक्ष्य मानते थे। वे मानते थे कि संसार में जहां जो अशुभ है अथवा हो रहा है, उसका उत्तरदायित्व मानव समाज के सभी सदस्यों पर समान रुप से होता है। स्वार्थ के परित्याग को ही धर्म का प्रमुख लक्षण बताते हुए उन्होंने कहा कि, ''विश्व में कहीं भी कोई अशुभ कार्य हो, उसके लिए प्रत्येक उत्तरदायी है। जो क्रिया विश्व में एकत्व ड्डस्वार्थ्ऋ स्थापित करे, वह पाप है। तुम उस अनन्त के ही एक अंश हो। जीवन का प्रथम लक्ष्य है ज्ञान तथा दूसरा लक्ष्य है सुख। ज्ञान और सुख मुक्ति की ओर ले जाते हैं, परंतु जब तक प्रत्येक प्राणी (चींटी अथवा कुत्ता भी) मुक्ति प्राप्त नहीं कर लेता, तब तक कोई भी सुखी नहीं हो सकता। आत्म प्रति सर्जन नहीं, आत्मत्याग ही सर्वोच्च लोकधर्म है। अपने लिए कुछ मत चाहो। सब दूसरों के लिए करो। यही भगवान में निवास, विचरण और उसमें आत्मा समाहित कहा जाता है।'' यही है स्वामी विवेकानंद का मानवतावाद और यही है उनका मानव जाति को दिया गया संदेश।

स्वामी विवेकानन्द जी पर छंद

डॉ. विद्यासागर मिश्र 'सागर'
स्वतंत्र लेखन
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

विश्वनाथ दत्त के सुपुत्र थे नरेंद्रनाथ
माता भुवनेश्वरी के घर जन्म पाये थे।
तेज व विवेक से बने थे वे विवेकानंद,
जा के शिकागो में धर्म –ध्वजा लहराये थे।
जागो उठोऔर जब तक नहीं लक्ष्य मिले,
रुको नहीं तब तक मंत्र ये बताये थे।
ज्ञानमयी वाणी थी विवेकानंद स्वामी जी की,
जगती में भारत का मान वे बढ़ाये थे।

राम नाम मधुशाला हो

अंकुर सिंह
स्वतंत्र लेखन
जौनपुर, उत्तर प्रदेश

माफी मांगों तुम भूलों की,
छोड़ तन सभीको जाना हैं।
सांसे अपनी पूरी करके,
पंचतत्व में मिल जाना है।।

दुनिया का बुद्धिमान प्राणी,
मानव ही कहलाता हैं।
श्रीराम नाम का जप करके,
जन्म मरण को तर जाता हैं।।

चौरासी लाख जन्म खोकर,
हम मानव तन को पाएं हो।
न हो फिर चौरासी का फेरा,
क्या ये निश्चय कर आए हो ?

मिला श्वास गिन गिनकर सभीको,
सुकर्म कर हम सबको जाना हैं।
न घमंड करो तुम धन दौलत का,
छोड़ यहीं सभी को जाना हैं।।

है प्राणवायु जब तक तन में,
भू पर कुटुंबकम् लाना है।
डगर कठिन हो चाहे जितना,
श्री राम नाम को अपनाना है।

सफर में हो ऐसे नेक कर्म
फिर लौटकर ना आना हो।
हो जीवन में उद्देश्य अपना,
पास राम नाम मधुशाला हो।।

ज्योतिष क्या है ?

पंडित कैलाशनारायण
ज्योतिषाचार्य
उज्जैन, मध्य प्रदेश

ज्योतिषमान जागृत जगत की एक ज्योति का नाम ही जीवन है। ज्योति का पर्याय ज्योतिष है अथवा ज्योतिस्वरूप ब्रह्म की व्याख्या का नाम ज्योतिष है। वेदरूप ज्योतिष ब्रह्मरूप ज्योति का ज्योतिष है जिसका द्वितीय नाम संवत्कर ब्रह्म या महाकाल है। ....

ग्रह क्या होते हैं? ज्योतिष विज्ञान के अनुसार ग्रह (राहु–केतु को छोड़कर) आकाश मंडल में स्थित वे खगोलीय पिण्ड हैं जो गतिमान अवस्था में रहते हैं। ग्रह पृथ्वी पर रहने वाले सभी प्रकार के जीव–जंतुओं और मनुष्यों के जीवन पर प्रभाव डालते हैं। खगोल शास्त्र के अनुसार ग्रह सौर मंडल में गुरुत्वाकर्षण बल द्वारा एक–दूसरे से निश्चित दूरी में बंधे हुए हैं और वे सूर्य की परिक्रमा कर रह रहे हैं। इसमें सभी ग्रहों की एक निश्चित गति होती है। जैसे– चंद्रमा की गति सबसे तेज है अतः चंद्रमा के गोचर की अवधि सबसे कम होती है। इसी प्रकार शनि की गति सबसे मंद है और गोचर के दौरान यह एक राशि से दूसरी राशि में जाने में लगभग ढ़ाई वर्ष का समय लेता है।

खगोल विज्ञान के अनुसार ग्रहों की उत्पत्ति : खगोल विज्ञान में बिग बैंग थ्योरी के अनुसार ऐसा माना जाता है कि ब्रह्माण्ड की रचना महाविस्फोट के कारण हुई है। इस सिद्धांत के अनुसार लगभग 14 अरब वर्ष पहले पूरा ब्रह्माण्ड एक इकाई के रूप में था जिसमें एक भयंकर विस्फोट हुआ और इस महाविस्फोट के कारण पूरा ब्रह्माण्ड हीलियम और हाइड्रोजन तथा अन्य गैसों से भर गया। फिर लंबी अवधि के बाद अंतरिक्ष में आकाश गंगा ग्रहों व तारों का जन्म हुआ। खगोल शास्त्र में इसे महाविस्फोट का सिद्धांत कहा गया। खगोल विज्ञान के अनुसार ग्रह सूर्य को केन्द्र मानकर उसकी परिक्रमा करने लगे। सूर्य से ग्रहों की दूरी के आरोही क्रम में सबसे पहले बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, बृहस्पति, शनि आते हैं। इनमें केवल

पृथ्वी ही एक ऐसा ग्रह है जिसमें जीवन है। जल की अधिक मात्रा के कारण इसे नीला ग्रह भी कहते हैं।

ज्योतिष में ग्रहों का महत्व : वैदिक परंपरा में व्यक्ति का नाम उसकी राशि के अनुरूप रखा जाता है। जबकि राशि की जानकारी जातक की जन्म कुंडली से प्राप्त होती है और जन्म कुंडली से ग्रह तथा नक्षत्र की स्थिति का पता चलता है। इसलिए हिन्दू ज्योतिष के मुताबिक ग्रहों का प्रभाव व्यक्ति के जीवन पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है। इसे उस व्यक्ति की जन्म कुण्डली से भली प्रकार से समझा जा सकता है। ज्योतिष में नवग्रह कुंडली के 12 भावों के कारक होते हैं।

ग्रह भाव कारकत्व

सूर्य प्रथम, नवम, दशम
चंद्रमा चतुर्थ
मंगल तृतीय, षष्टम
बुध चतुर्थ, दशम
बृहस्पति द्वितीय, पंचम, नवम, दशम, एकादश
शुक्र सप्तम, द्वादश
शनि षष्टम, अष्टम, दशम

ज्योतिष में ग्रहों की दृष्टि एवं स्थान का परिणाम : कुंडली में सभी ग्रह अपने से सातवें भाव पर दृष्टि रखते हैं। हालाँकि इनमें बृहस्पति ग्रह अपने से पाँचवें और नौवें भाव पर भी दृष्टि रखता है। जबकि शनि तृतीय और दसवें भाव पर भी दृष्टि रखता है। इसके अलावा मंगल चौथे व आठवें भाव को देखता है। वहीं राहु और केतु क्रमशः पंचम एवं नवम भाव में पूर्ण दृष्टि रखते हैं।

यदि कुंडली में चंद्रमा, बुध और शुक्र जिस स्थान पर होते हैं, उसके परिणामों में वृद्धि करते हैं। इसी प्रकार बृहस्पति ग्रह जिस स्थान पर बैठता है उस भाव के फलों में कमी करता है, लेकिन यह जिस भाव पर दृष्टि रखता है उसके परिणामों में वृद्धि करता है। इसके अलावा मंगल ग्रह जिस भाव में बैठता है और जिस भाव को देखता है, उन दोनों भावों में इसके नकारात्मक परिणाम पड़ते हैं। हालाँकि यह अपने घर में अच्छे परिणाम देता है।

ज्योतिष में ग्रह भचक्र में स्थित राशियों के स्वामी होते हैं। परंतु राहु और केतु छाया ग्रह होने के कारण किसी भी राशि के स्वामी नहीं है। इन ग्रहों की नीच और उच्च राशि भी होती है। जैसे–

ग्रह स्वामित्व राशि उच्च राशि नीच राशि

सूर्य सिंह मेष तुला
चंद्रमा कर्क वृषभ वृश्चिक
मंगल मेष, वृश्चिक मकर कर्क
बुध मिथुन, कन्या कन्या मीन
गुरु धनु, मीन कर्क मकर
शुक्र वृषभ, तुला मीन कन्या
शनि मकर, कुंभ तुला मेष
राहु – मिथुन धनु
केतु – धनु मिथुन

धार्मिक दृष्टि से ग्रहों का महत्व : भारत सदियों से दुनिया के लिए धर्म और आध्यात्म का केन्द्र रहा है। यहाँ की वैदिक/ सनातन परंपरा ने विश्व के लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया है। यहाँ व्याप्त हिन्दू संस्कृति में हर उस सजीव और निर्जीव वस्तु को महत्व दिया गया है जो मानव कल्याण के लिए बनी हो। उसमें पेड़– पौधे, जीवन– जंतु, जल, जमीन और जंगल आदि सब शामिल है। इनके व्यापक महत्व को समझते हुए वैदिक काल में ऋषि– मुनियों ने इन्हें धर्म से जोड़ दिया और आज इस परंपरा के अनुयायी इनकी भिन्न– भिन्न प्रकार से पूजा– आराधना करते हैं। ऐसे ही यहाँ ग्रहों को देवता स्वरूप मानकर उनकी पूजा की जाती है।

नवग्रहों में सूर्य ग्रह सूर्य देवता का स्वरूप माना गया है। जबकि चंद्रमा का संबंध भगवान शिव से है। वहीं मंगल ग्रह को ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों का स्वरूप माना गया है। ऐसे ही बुध और बृहस्पति ग्रह का संबंध क्रमशः भगवान विष्णु और ब्रह्मा जी से है। शुक्र ग्रह को माँ लक्ष्मी जी से जोड़कर देखा जाता है। शनि ग्रह शनि देव के प्रतीक हैं और राहु का संबंध भैरो बाबा से हैं जबकि केतु का नाता भगवान गणेश जी से जोड़ा जाता है। यहाँ मंदिरों में नवग्रहों की पूजा की जाती है। देश में आपको कई जगह शनि देव के मंदिर मिल जाएंगे।

ग्रहों का स्वभाव : **सूर्य ग्रह** – वैदिक ज्योतिष में सूर्य को ऊर्जा, पराक्रम, आत्मा, अहं, यश, सम्मान, पिता और राजा का कारक माना गया है। ज्योतिष के नवग्रह में सूर्य सबसे प्रधान ग्रह है। इसलिए इसे ग्रहों का राजा भी कहा जाता है। पाश्चात्य ज्योतिष में फलादेश के लिए सूर्य राशि को आधार माना जाता है। यदि जिस व्यक्ति की कुंडली में सूर्य की स्थिति प्रबल हो अथवा यह शुभ स्थिति में बैठा हो तो जातक को इसके बहुत अच्छे परिणाम प्राप्त होते हैं। इसके सकारात्मक प्रभाव से जातक को जीवन में मान–सम्मान और सरकारी नौकरी में उच्च पद की प्राप्ति होती है। यह अपने प्रभाव से व्यक्ति के अंदर नेतृत्व क्षमता का गुण विकसित करता है। मानव शरीर में मस्तिष्क के बीचो–बीच सूर्य का स्थान माना गया है।

चंद्र ग्रह – नवग्रहों में चंद्रमा को मन, माता, धन, यात्रा और जल का कारक माना गया है। वैदिक ज्योतिष में चंद्रमा जन्म के समय जिस राशि में स्थित होता है वह जातक की चंद्र राशि कहलाती है। हिन्दू ज्योतिष में राशिफल के लिए चंद्र राशि को आधार माना जाता है। यदि जिस व्यक्ति की जन्म कुण्डली में चंद्रमा शुभ स्थिति में बैठा हो तो उस व्यक्ति को इसके अच्छे परिणाम प्राप्त होते हैं। इसके प्रभाव से व्यक्ति मानसिक रूप से स्वस्थ्य रहता है और उसका मन अच्छे कार्यों में लगता है। जबकि चंद्रमा के कमजोर होने पर व्यक्ति को मानसिक तनाव या डिप्रेशन जैसी समस्याएँ रहती हैं। मनुष्य की कल्पना शक्ति चंद्र ग्रह से ही संचालित होती है।

क्रमशः

मासिक
अध्यात्म संदेश
जनकल्याण एवं राष्ट्रोत्थान को समर्पित धर्म, संस्कृति, अध्यात्म चिंतन का मासिक ई–पत्र
editor.adhyatmsandesh@gmail.com
m.facebook.com/अध्यात्म संदेश
गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फ़ाउण्डेशन
www.gssfoundation.org

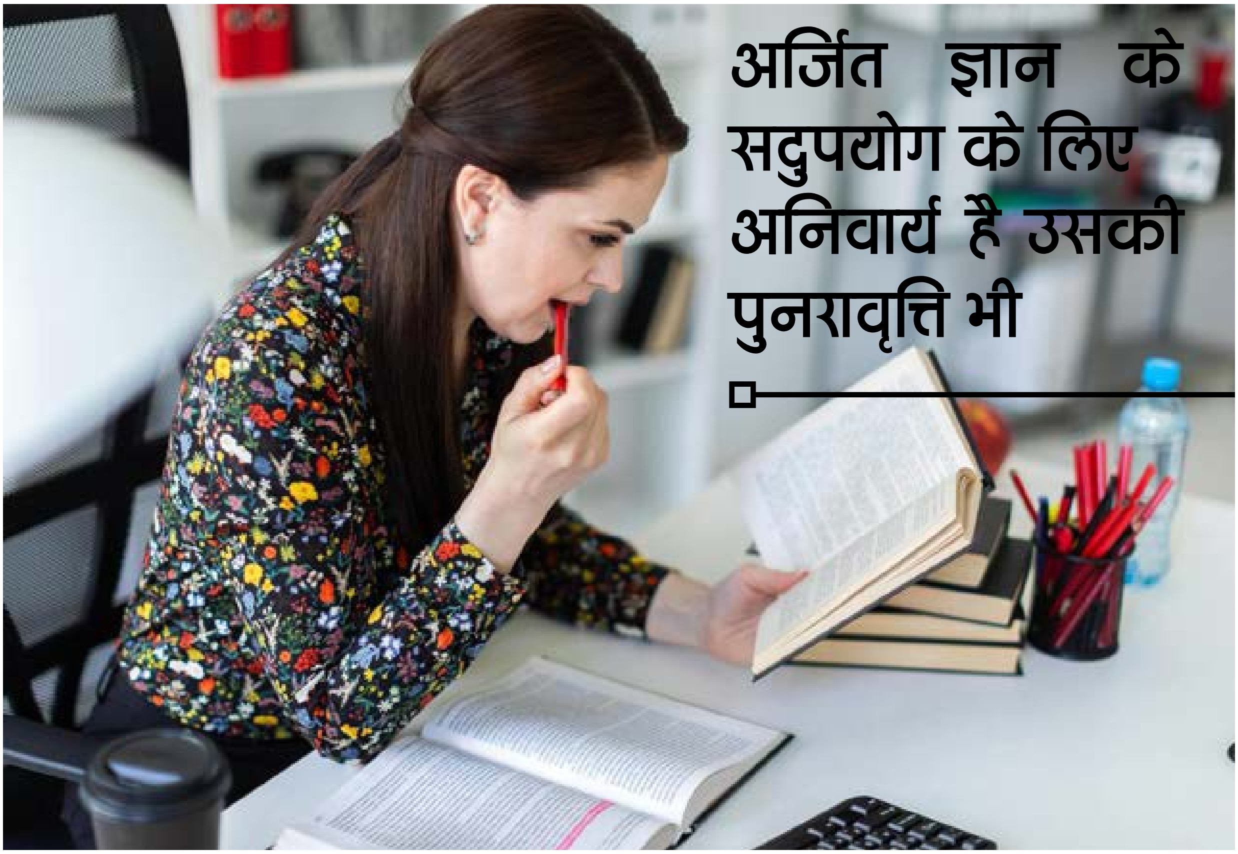

अर्जित ज्ञान के सदुपयोग के लिए अनिवार्य है उसकी पुनरावृत्ति भी

हमारे जीवन में सीखने का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान होता है लेकिन इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण होता है कि हम क्या सीखते हैं अथवा हमने जो सीखा है जीवन में उसकी क्या उपयोगिता है? जिस सीखने की कोई उपयोगिता न हो उसे सीखना व्यर्थ है और जो सीखा हुआ समय पर काम न आए ऐसा सीखना भी कोई महत्त्व नहीं रखता। क्या सीखें और सीखना कैसे उपयोगी बने इस दोनों बातों पर ही विचार करना अति महत्त्वपूर्ण है। इस संदर्भ में गोस्वामी तुलसीदास याद आ रहे हैं। रामचरितमानस में अरण्यकाण्ड में एक स्थान पर वे लिखते हैं – सास्त्र सुचिंतित पुनि पुनि देखिअ। भूप सुसेवित बस नहिं लेखिअ। जिन शास्त्रों का हमने भली–भाँति चिंतन–मनन किया है उन्हें बार–बार देखते रहना चाहिए व अच्छी प्रकार से सेवा करने पर भी राजा को वश में नहीं समझना चाहिए।

सीताराम गुप्ता
स्वतंत्र लेखन व विचारक
पीतम पुरा, दिल्ली

जो शास्त्र अथवा अच्छी बातें हमें याद हो गई हैं उनकी भी पुनरावृत्ति होती रहनी चाहिए। गोस्वामी तुलसीदास ने ऐसा क्यों कहा? जो शास्त्र हम अच्छी प्रकार से पढ़ चुके हैं उनको बार–बार पढ़ने अथवा दोहराने की क्या आवश्यकता है? इस बात का सबसे सरल उत्तर तो यही होगा कि यदि हम पूर्व में पठित किसी भी सामग्री अथवा शास्त्रों को नहीं दोहराएँगे तो उनके विस्मृत हो जाने की प्रबल संभावना बनी रहती है। यदि हम किसी प्रकार का ज्ञान अथवा विद्या प्राप्त करते हैं तो उसका उपयोग तभी संभव है जब वो हमें याद भी रहे। किसी उपयोगी से उपयोगी विद्या को प्राप्त करने के बाद अभ्यास अथवा पुनरावृत्ति के अभाव में उसे भूल जाना समय व संसाधनों का दुरुपयोग ही कहा जाएगा।

कई व्यक्ति जीवन में पर्याप्त स्वाध्याय करते हैं तो क्या जितना भी स्वाध्याय किया है, पढा–लिखा अथवा चिंतन किया है उसे पूरा का पूरा याद रखना अपेक्षित है? यदि हम बहुत अधिक बातों को याद रखेंगे तो क्या इससे मानसिक उद्विग्नता नहीं बढ़ जाएगी? इससे अन्य समस्याएँ उत्पन्न नहीं हो जाएँगी? क्या अपेक्षाकृत कम महत्त्वपूर्ण अथवा अव्यावहारिक बातों

को भूल जाना उचित नहीं होगा? हम जितना पढ़ते हैं अथवा जितना चिंतन करते हैं वो सभी अत्यंत उपयोगी हो ये संभव ही नहीं। कई बार तो हम जो जानते हैं उसी को सर्वोत्तम अथवा उपयोगी सिद्ध करने का प्रयास करते रहते हैं जिसका कोई लाभ अथवा औचित्य दिखलाई नहीं पड़ता। वैसे भी हर व्यक्ति के लिए हर बात लाभदायक अथवा उपयोगी नहीं हो सकती। हमें अच्छी बातें याद रखनी चाहिएँ लेकिन मात्र इसलिए शास्त्रों को हमेशा याद रखने का भी विशेष महत्त्व दृष्टिगोचर नहीं होता है।

लेकिन गोस्वामी जी कोई बात अकारण तो नहीं कह सकते। उनकी इस बात से एक बात और स्पष्ट हो जाती है और वो ये कि हम केवल उपयोगी व सार्थक चिंतन ही करें और उसे दोहराते रहें ताकि वो स्थायित्व प्राप्त कर ले। वो हमारे व्यवहार में आकर हमारे जीवन का अंग बन जाए। सुचिंतित शास्त्र से भी यही भावना व्यक्त होती है कि जिसे हमने भली-भाँति गहन चिंतन-मनन के पश्चात चुना है वो ज्ञान अथवा अनुभव बहुत महत्त्वपूर्ण है और उसके दोहराते रहने से भी यही तात्पर्य निकलता है हमने बहुमूल्य समय और संसाधनों के द्वारा अपने जीवन में जो महत्त्वपूर्ण व उपयोगी चिंतन किया है अथवा जो कुशलताएँ प्राप्त की हैं वे बेकार न जाएँ। उनसे हम ही नहीं पूरा समाज व राष्ट्र लाभांवित हो। हमारा चिंतन हमारे जीवन को सही दिशा प्रदान करता रहे। वो किसी भी स्थिति में हमसे छूट न जाए। हमने परिश्रम से जो भी अर्जित किया है वो व्यर्थ न चला जाए। हमारे जीवनभर का परिश्रम उचित समय पर हमारे काम आए।

कुछ व्यक्ति बहुत कुछ पढ़ते-लिखते हैं। वे सदैव जीवनोपयोगी व प्रेरक साहित्य का पठन-पाठन व चिंतन ही करते रहते हैं लेकिन अपने स्वाध्याय अथवा चिंतन को अपने जीवन में उतार नहीं पाते। दुनिया में अच्छी-अच्छी बातों की भी कोई सीमा नहीं। निरंतर नई-नई बातें सीखना अच्छी बात है लेकिन पूर्व में सीखी हुई अच्छी बातों को भूल जाना भी उचित नहीं। इसके लिए पूर्व में सीखी हुई अच्छी बातों को बार-बार दोहराना अनिवार्य प्रतीत होता है। उन्हें बार-बार दोहराने का ये प्रभाव होगा कि उन बातों के लिए हमारे मन की कंडीशनिंग हो जाएगी और हम उन बातों को अपने व्यवहार में लाने के लिए स्वाभाविक रूप से बाध्य हो जाएँगे। इस प्रकार की सकारात्मक कंडीशनिंग हमारे सही व संतुलित विकास के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण व उपयोगी होने के कारण हमारे लिए अनिवार्य भी है। यदि हम अपनी अर्जित योग्यताओं को अक्षुण्ण रख पाते हैं तो उनके सार्थक उपयोग के अवसर भी अवश्य ही उपलब्ध हो जाएँगे।

इसमें संदेह नहीं कि ऐसे अनेक व्यक्ति हैं जो जो भी अच्छा पढ़ते-लिखते अथवा चिंतन करते हैं उसे दोहराते रहते हैं और इससे वे बातें स्वाभाविक रूप से उनके आचरण में आ जाती हैं लेकिन जिन व्यक्तियों को अच्छी बातों की जानकारी ही नहीं होती या जिन्हें अच्छी बातें कंठस्थ नहीं होतीं वे कैसे अपने आचरण अथवा व्यवहार को उत्तम बनाएँ? ऐसे व्यक्तियों को भी अच्छी बातों को अपने सामने रखने का प्रयास करना चाहिए जिससे वे उनके जीवन को सकारात्मकता प्रदान कर उनके व्यक्तित्व को प्रभावशाली व उनके आचरण को सात्त्विक बना सकें और इसके लिए शास्त्रों की अच्छी बातों को बार-बार पढ़ने अथवा उन्हें दोहराते रहने के अतिरिक्त अन्य कोई प्रभावशाली उपचार दिखलाई नहीं पड़ता। हम प्रायः देखते हैं कि एक निश्चित अंतराल पर सामूहिक रूप से धर्मग्रंथों के अखण्ड पाठ होते रहते हैं। उद्देश्य यही होता है कि बार-बार सुनने से उनकी अच्छी बातें हमें याद होकर हमारे आचरण अथवा व्यवहार का अंग बन जाएँ। सेवाकाल के दौरान कर्मचारियों के लिए सेमिनार अथवा अन्य प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने का भी यही प्रमुख कारण होता है।

कई व्यक्ति बातचीत अथवा लेखन में कविता, शायरी अथवा लोकोक्तियों का भरपूर इस्तेमाल करते हैं। ये सब अभ्यास के कारण होता है। शेरो-शायरी हो अथवा लोकोक्तियाँ व मुहावरे हम जब तक उनका प्रयोग करते रहते हैं वे हमें याद रहते हैं। हम जैसे ही उनका अभ्यास अथवा प्रयोग करना छोड़ देते हैं अथवा कम कर देते हैं वे विस्मृति के गर्त में चले जाते हैं। एक अच्छा खिलाड़ी चाहे उसे किसी स्पर्धा में भाग लेना हो अथवा नहीं कभी अभ्यास करना नहीं छोड़ता। वो निरंतर अभ्यास करता रहता है। ये निरंतर अभ्यास ही उसकी जीत अथवा सफलता का कारण बनता है। सबसे बड़ी बात तो ये है कि उसके निरंतर अभ्यास करने के मूल में भी एक विचार होता है और वो विचार है मुझे जीतना है अथवा सफलता प्राप्त करनी है। वो जिस दिन इस विचार को त्याग देगा अभ्यास करना बंद हो जाएगा। इसलिए जो बातें हमारे लिए उपयोगी अथवा प्रेरक होती हैं उन्हें याद रखना चाहिए और इसका एकमात्र उपाय है उनकी पुनरावृत्ति करते रहना।

घर में हम अनेक प्रकार की वस्तुओं अथवा उपकरणों का प्रयोग करते हैं। वे सालों तक हमारे काम आते रहते हैं लेकिन यदि किसी कारण से किसी उपकरण का प्रयोग लंबे समय तक न किया जाए तो बिना प्रयोग किए ही उसके खराब हो जाने की संभावना बहुत बढ़ जाती है। कई बार हम भूल तक जाते हैं कि ऐसा कोई उपकरण हमारे घर में रखा भी है। कुछ ऐसा ही प्राप्त अथवा संचित ज्ञान अथवा कुशलताओं के साथ होता है अतः मात्र सीखना अथवा याद रखना पर्याप्त नहीं होता उसे व्यवहार में लाना भी अनिवार्य है। एक बार जो चीज हमारे व्यवहार में आ जाती है उसे याद रखना अत्यंत सरल हो जाता है और याद रखने के लिए किसी बात को दोहराते रहने से अधिक अच्छी बात कोई अन्य हो ही नहीं सकती। कुछ लोग अंग्रेजी भाषा बड़ी आसानी से बोलते हैं लेकिन कुछ लोग उनसे अच्छी अंग्रेजी जानते हुए भी अंग्रेजी बिलकुल नहीं बोल पाते हैं। कारण स्पष्ट है। हम जो सीखें उसे याद रखें व व्यवहार में लाएँ।

मान लीजिए हम मिष्टान्न खाना चाहते हैं लेकिन यदि मिष्टान्न हमारे समक्ष नहीं रखे होंगे तो हम मिष्टान्न नहीं खा सकते। जिस प्रकार से मिष्टान्न अथवा अन्य अपेक्षित उपयोगी भोजन का उपभोग करने के लिए वो हमारे समक्ष होना अनिवार्य है उसी प्रकार से जीवन की गुणवत्ता को सुधारने अथवा उसे अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए हमने जो भी अच्छा सीखा है अथवा जो स्वाध्याय अथवा चिंतन किया है वो हमारे सम्मुख रहना ही चाहिए। यदि ऐसा होगा तो देर-सवेर उसका प्रभाव भी अवश्य ही हम पर पड़ेगा। साथ ही आवश्यकता पड़ने पर उसका उपयोग भी संभव हो सकेगा। यदि

समय पर किसी चीज का उपयोग न हो पाए तो उसका होना या न होना बराबर है। यदि हमें मिठाइयाँ खानी हैं तो मिठाइयाँ लाकर रखनी होंगी और यह तभी संभव है जब हम याद रखें कि हमें मिठाइयाँ लानी हैं अथवा बनानी हैं। इसके लिए हमें मिठाई शब्द याद रखना होगा और तब याद रखना होगा जब तक उसकी छवि हमारे मन पर अंकित न हो जाए।

हम सब अपने कमाए हुए धन व दूसरी कीमती वस्तुओं की सुरक्षा का पूरा ध्यान रखते हैं ताकि हमारा धन व वस्तुएँ समय पर हमारे काम आ जाएँ। जिस प्रकार से कमाए हुए धन व अन्य कीमती वस्तुओं की सुरक्षा व सदुपयोग अनिवार्य है संचित ज्ञान अथवा कुशलतओं की सुरक्षा व सदुपयोग भी अनिवार्य है। वैसे भी संचित ज्ञान अथवा कुशलतओं से बड़ा धन और क्या हो सकता है? संचित ज्ञान अथवा कुशलतओं से ही हमारे व्यक्तित्व का विकास होता है और इन्हीं से प्रत्यक्ष अथवा परोक्षा रूप से धनार्जन भी संभव होता है। धनार्जन हो, व्यक्तित्व विकास हो अथवा चरित्र निर्माण इन सब बातों के मूल में एक नन्हे बीज की तरह कुछ सकारात्मक विचार ही होते हैं जिनसे हमारा जीवन वट वृक्ष की तरह विस्तार पाता है। जीवन रूपी वृक्ष को अपेक्षित विस्तार देने के लिए विचार रूपी बीजों की पूर्ण सुरक्षा व उनको बोना अनिवार्य है और इसके लिए भी अपेक्षित है कि हम न केवल विचार–बीजों को निरंतर दोहराते रहें अपितु उनको व्यवहार में भी लाते रहें।

गोस्वामी तुलसीदास शास्त्रों की बात कर रहे हैं। यदि हम आधुनिक संदर्भो में शास्त्रों की बात करें तो हर व्यावहारिक व व्यावसायिक योग्यता व कुशलता एक शास्त्र ही है। धर्म–दर्शन अथवा अध्यात्म ही नहीं अर्थशास्त्र अथवा पर्यावरण अध्ययन भी एक शास्त्र है। दूसरों से कैसे व्यवहार करें अथवा बदलती हुई परिस्थितियों में सामंजस्य कैसे बनाएँ ये भी एक शास्त्र है। जीवन में सफल होने के लिए व्यावहारिक व व्यावसायिक कुशलता भी अनिवार्य है। इसके लिए अनिवार्य है कि हम जब तक अपने क्षेत्र में कुशलता प्राप्त न कर लें निरंतर सीखते रहें और जो सीखा है उसे याद रखने के लिए उसे दोहराते रहें। जिस प्रकार से सीखे हुए ज्ञान को दोहराना अनिवार्य है उसी प्रकार से सीखी हुई कलाओं अथवा शिल्प का अभ्यास करना भी अनिवार्य है। जब कोई कलाकार अभ्यास करना छोड़ देता है उसकी कला में गुणवत्ता का ह्रास होने लगता है। कलाकार की सर्जनात्मकता बुरी तरह से प्रभावित होने लगती है।

निरंतर पुनरावृत्ति अथवा अभ्यास का प्रभाव ये होता है कि अर्जित ज्ञान अथवा सीखी हुई विद्याएँ विस्मृत नहीं होतीं और बार–बार की पुनरावृत्ति व अभ्यास से कठिन से कठिन कार्य भी सरल हो जाते हैं। अभ्यास बढ़ने के साथ–साथ न केवल किए गए कार्यों की गुणवत्ता में सुधार होता जाता है अपितु उनको करने में समय भी कम लगने लगता है। दूसरे जब हम किसी भी कार्य को बार–बार करते हैं तो हमें उसकी आदत पड़ जाती है और वो हमारे जीवन का अंग बन जाता है। व्यावहारिक दृष्टि से ही नहीं व्यावसायिक दृष्टि से भी चीजों का याद रखने का बड़ा महत्त्व है। एक गायक को यदि गीत कंठस्थ नहीं होंगे तो उसका तो सारा खेल ही बिगड़ जाएगा। इसी प्रकार से एक नृत्यांगना का उसकी नृत्य शैली में पारंगत होना अनिवार्य है। एक उपदेशक को भी जो कहना है उसे अच्छी प्रकार से याद होगा तभी वो उसे अच्छी तरह से प्रस्तुत कर पाएगा और उसका अच्छा प्रभाव भी सुनने वालों पर पड़ेगा।

मन का ये स्वभाव है कि उसमें कुछ न कुछ नया आता रहता है जो अच्छा अथवा बुरा दोनों प्रकार का हो सकता है। बुरे से बचने के लिए भी हमें अच्छे को प्राथमिकता देनी पड़ेगी। अच्छी बातों को सामने रखकर उनके लिए मन की कंडीशनिंग करनी पड़ेगी। अच्छी बातें जब तक हमारे व्यवहार में न आ जाएँ उन्हें याद रखना होगा। उन्हें पहाड़ों की तरह सही–सही रटना और याद रखना होगा। यदि हम पहाड़े भूल जाएँ तो गणित के आसान से आसान प्रश्न भी हल नहीं कर पाएँगे। जीवन के गणित को ठीक से हल करने के लिए, उसमें अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए हमें अच्छी बातों अथवा जीवनोपयोगी सूत्रों को भी पहाड़ों की तरह ही सदैव याद रखना होगा। एक विद्यार्थी अथवा परीक्षार्थी परीक्षा भवन में प्रवेश करने तक अपने याद किए हुए उत्तरों को बार–बार दोहराता रहता है ताकि वो किसी भी सूरत में उन्हें भूल न जाए। जीवन के अंतिम क्षणों तक शास्त्रों की उपयोगी बातों अथवा जीवनोपयोगी कुशलताओं को दोहराते रहने का प्रयास करना न छोड़ना हमारे हित में ही होगा इसमें संदेह नहीं।

हरियाली से परिपोषित भारत के अव्वल गांव : केरल के 'कोल्लेंगोड'

डॉ. षैजू के
सहायक आचार्य
सरकारी लॉं कॉलेज एर्णाकुलम
केरल

कोल्लेनगोड पलक्कड़ जिले, केरल, भारत के शहरों में से एक है। कोल्लेंगोड भारत के सुंदर गांवों में से तीसरे स्थान में है। यह शहर हरियाली से परिपोष है ।जो चारों ओर सुंदर ही सुंदर दृश्य मौजूद है। आज कल टूरिस्ट लोग यहाँ भरे पड़े है ताकि कोल्लेंगोड शहर की सौंदर्य देख सकूँ। कोलेंगोडे केरल की संस्कृति के लिए जाना जाता है। कोल्लेनगोड टाउन कोल्लेनगोड उप जिला, कोल्लेंगोड पंचायत और कोल्लेनगोड ब्लॉक पंचायत का मुख्यालय है। कोल्लेंगोड पलक्कड़ जिले के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक है। कोलेंगोडे ने फिल्मों, सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं, संगीतकारों, लेखकों, कवियों, विद्वानों आदि के क्षेत्र में समाज के लिए कई प्रसिद्ध हस्तियों का योगदान दिया है।

कोल्लेंगोड में एक मंदिर है जिसका नाम है काचमकूरिशी जो पालकाड का चावल का कटोरा का नाम से भी जाना जाता है। इस मंदिर का प्राचीन नाम है वेंगुनाड, अयस्करपुरी (प्राचीन नाम)। ब्रिटिश के जमाने में भी एक अलग नाम दिया गया था वह है कलिंगुडी (ब्रिटिश नाम)। बड़ी संख्या में पुरातात्विक और ऐतिहासिक स्थल, जो पर्यटन विकास की संभावना रखते हैं, अभी भी कोलेंगोडे के और आसपास के क्षेत्रों में मौजूद हैं

जनसांख्यिकी : 2001 तकभारत की जनगणना, कोलेंगोडे – I की जनसंख्या 18,583 थी जिसमें 9,068 पुरुष और 9,515 महिलाएं थीं। पलक्कड़ (पलक्कड़–कोलेनगोड मार्ग) से

22 किमी और त्रिशूर से 65 किमी (एनएच 544 और एसएच 58)

ट्रांसपोर्ट : कोलेंगोड़े रेलवे स्टेशन पर स्थित है ऊट्टरा और यह पलक्कड़, एर्नाकुलम, तिरुवनंतपुरम, पोलाची, पलानी, मदुरै, थिरीचेंदूर, साथ जुड़ा हुआ है। कोलेंगोडे प्रमुख बस मार्गों से भी जुड़ा हुआ है। स्टेट हाईवे एसएच–58 कोलेनगोड से होकर गुजर रहा है। कोल्लेंगोडे–पलक्कड़ मार्ग राज्य की प्रमुख सड़कों में से एक है। पलक्कड़, त्रिशूर, एर्नाकुलम, कालीकट, कोयंबटूर, पोलाची आदि के लिए बसें उपलब्ध हैं।

निकटतम हवाई अड्डा कोयंबटूर है जो कोलेनगोड से लगभग 70 किमी दूर है। कोचीन अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा कोलेंगोडे से लगभग 110 किमी दूर है और कालीकट हवाई अड्डे की दूरी लगभग 125 किमी है।

आकर्षण : ऐतिहासिक गायत्रीपुझा नदी , भरतप्पुझा की एक सहायक नदी शहर के पास बह रही है।

सितारकुंडु जलप्रपात, पालकापंडी जलप्रपात, कोल्लेंगोडे (वेंगुनाड) पैलेस, गोविंदा माला हिल्स, धान के खेत और प्रकृति के दृश्य, पहाड़ी घाटियाँ, अग्रहारम

विभिन्न फिल्म शूटिंग स्थान : कोलेंगोडे का उपयोग फिल्म उद्योग द्वारा एक स्थान के रूप में किया जाता है, और कई हिट फिल्मों की शूटिंग यहां की गई है।

प्रमुख त्यौहार : दिसंबर और जनवरी के महीनों में कोलेनगोड अपना सर्वश्रेष्ठ रहेगा। वहां त्योहारों का मौसम होता है।

कोल्लेंगोडे पुलिक्कोडे धर्मस्थल मंदिर अरट्टू, थिरु कचमकुरिसि विष्णु मंदिर अरत्तु, देसाविलक्कू (विभिन्न भगवती मंदिर) त्यौहार, पनंगट्टीरी कूथांडावेल, आलमपल्लम कार फेस्टिवल, शूरा समारा महोत्सव, शिवरात्रि त्यौहार, कोलेंगोडे प्रखंड पंचायत, कोल्लेंगोडे ब्लॉक पंचायत के अंतर्गत ग्राम पंचायतें हैं, कोलेंगोड़े, कोडुवयूर, पुथुनगरम, वडवन्नुरी, मुथलमदा, गेलरी

पवित्र बरगद का पेड़ : यह जगह पेड़ों से भरा पड़ा है। हर जगह देखों तो पेड़ ही पेड़ है। बरगद के पेड़ इस जगह का शान है। जो हर किसी को आकर्षित कर सकते है।

कोलेंगोडे हरे धान के खेतों से भरा है। खेतों से भरे है कोल्लेंगोड शहर। चावल इस शहर की सबसे प्रिय खान पान है।

कोल्लेनगोड पलक्कड़ जिले, केरल, भारत के शहरों में से एक है। कोलेंगोडे केरल की संस्कृति के लिए जाना जाता है। कोल्लेनगोड टाउन कोल्लेनगोड उप जिला, कोल्लेंगोड पंचायत और कोल्लेनगोड ब्लॉक पंचायत का मुख्यालय है। कोलेंगोडे पलक्कड़ जिले के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक है। कोलेंगोडे ने फिल्मों, सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं, संगीतकारों, लेखकों, कवियों, विद्वानों आदि के क्षेत्र में समाज के लिए कई प्रसिद्ध हस्तियों का योगदान दिया है। बड़ी संख्या में पुरातात्विक और ऐतिहासिक स्थल, जो पर्यटन विकास की संभावना रखते हैं, अभी भी कोलेंगोडे के और आसपास के क्षेत्रों में मौजूद है। कोलेंगोडे प्रमुख बस मार्गों से भी जुड़ा हुआ है। स्टेट हाईवे एसएच–58 कोलेनगोड से होकर गुजर रहा है। कोल्लेंगोडे–पलक्कड़ मार्ग राज्य की प्रमुख सड़कों में से एक है। पलक्कड़, त्रिशूर, एर्नाकुलम, कालीकट, कोयंबटूर, पोलाची आदि के लिए बसें उपलब्ध हैं। निकटतम हवाई अड्डा कोयंबटूर है जो कोलेनगोड से लगभग 70 किमी दूर है। कोचीन अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा कोलेंगोडे से लगभग 110 किमी दूर है और कालीकट हवाई अड्डे की दूरी लगभग 125 किमी है। ■

बट हू विल टेक केयर

प्रेम नारायण गुप्ता
पीतमपुरा, दिल्ली

पापा बहुत खुश थे कि उनका बेटा विदेश में अच्छी तरह से सैटल हो गया था। बेटे ने वहीं एक विदेशी युवती से शादी कर ली और उनके दो बच्चे भी हो गए। अब तो उसने अपना एक अच्छा सा मकान भी ले लिया है और बच्चों के साथ मजे से वहीं रह रहा है। पापा और मम्मी अब काफी बूढ़े हो गए हैं और अक्सर बीमार रहते हैं। पेंशन के जिन रुपयों से गृहस्थी चल जाती थी अब वे कम पड़ने लगे हैं क्योंकि महँगाई के कारण दवाओं और फलों का खर्च बजट बिगाड़कर रख देता है। माँ ने बार–बार फोन करके बेटे को घर आने के लिए कहा क्योंकि पापा बहुत बीमार चल रहे थे। बेटा किसी तरह समय निकालकर पिताजी की बीमारी का हाल–चाल जानने चला आया। माँ–पिताजी बेटे को देखकर बहुत खुश हुए और बहू और पोते–पोती को साथ न लाने पर नाराज भी हुए। आज बरसों बाद रसोई में कई चीजें एक साथ बनीं और बेटे को खूब खिलाया–पिलाया। जी भरकर बातें कीं।

बेटे ने पिताजी से पूछा, ''अब तो इंडिया में भी प्रॉपर्टी के दाम बहुत बढ़ गए हैं। अपना मकान कितने का चल रहा है?'' ये सुनकर पिताजी को अच्छा नहीं लगा और वो सुना–अनसुना कर गए। बेटे का अगले दिन ही वापस लौटने का कार्यक्रम था। जाते हुए बेटा इतना ही बोल पाया, '' टेक केयर पापा।'' यह सुनकर मम्मी की आँखों में आँसू भर आए। वे सोचती रहीं कि पापा तो कुछ कर नहीं पाते और मैं भी कुछ नहीं कर पाती ऐसे में भला केयर होगी तो कैसे? हू विल टेक केयर? प्रश्न उठता है कि क्या मात्र टेक केयर कहने से ही माता–पिता की देखभाल हो जाती है? बुढ़ापे में पैसों की ही नहीं सेवा की भी जरूरत पड़ती है। कुछ लोगों की मजबूरी हो सकती है जिसके कारण वे अपने माता–पिता के पास नहीं रह सकते अथवा उन्हें साथ नहीं रख सकते लेकिन माता–पिता को तो उनकी जरूरत है। क्या बचपन में माता–पिता किसी विवशता के कारण अपने बच्चों को अपने से कभी दूर होने देते हैं?

प्रायः सभी माता–पिता बच्चों के लिए हर प्रकार के समझौते करने को तैयार रहते हैं फिर उनके बुढ़ापे में बच्चे क्यों नहीं कोई समझौता करने का प्रयास करते? कुछ लोग अपने बूढ़े माता–पिता की सेवा तो नहीं कर पाते लेकिन उन्हें किसी प्रकार की आर्थिक तंगी नहीं होने देते। ऐसे लोग उन लोगों से बेहतर हैं जिनके माता–. पिता दाने–दाने को मोहताज हो जाते हैं लेकिन माता–पिता की सेवा करना भी तो बच्चों का ही फर्ज है। हम सब अपने फर्ज से कैसे मुँह मोड़ सकते हैं? आज के आधुनिक शिक्षा प्राप्त तथा पाश्चात्य संस्कृति के पुजारी वैसे तो अपने बूढ़े माता–पिता को कभी पूछते नहीं लेकिन मदर्स डे और फादर्स डे पर उपहार भिजवाना नहीं भूलते। बूढ़े माता–पिता को महँगे उपहार नहीं देखभाल और प्यार की ज्यादा जरूरत है। सबसे बड़ी बात तो ये है कि उन्हें देखभ. ाल की भी कोई खास जरूरत नहीं है। वास्तव में उन्हें जरूरत है अपने बच्चों के साथ की। बहू और पोते–पोतियों के साथ की। यदि उनकी बहू और पोते–पोतियाँ साथ होंगे तो उन्हें देखभाल की भी कोई जरूरत नहीं होगी अपितु वे ही उनके कामों में हाथ बँटा देंगे।

परिवार का अभाव ही तो उनके दुख और बीमारी का कारण है। बच्चों से अलगाव ही तो उनके बुढ़ापे का कारण है। एकल परिवारों की अपेक्षा संयुक्त परिवारों में रहने वाले माता–पिता और बच्चे सभी अधिक स्वस्थ रहते हैं। साथ रहना सुरक्षा ही नहीं अच्छे स्वास्थ्य का भी मूल है। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो माता–पिता के साथ तो रहते हैं और उनका पर्याप्त आदर–सम्मान भी करते हैं, उनके पैर छूते हैं लेकिन अपने बच्चों को उनके पास तक फटकने नहीं देते। मात्र दिखावे के लिए आदर–सम्मान भी पर्याप्त नहीं अपितु पूर्ण रूप से अपनेपन की जरूरत है। दादा–दादी अपने पोते–पोतियों के साथ घुलमिल कर रहें तभी उन्हें अच्छा लगेगा। दोनों एक दूसरे के साहचर्य से परस्पर लाभांवित भी हो सकेंगे। बच्चे थोड़े बड़े होंगे तो अपने दादा–दादी का काम करेंगे और छोटे होंगे तो उनसे अपना काम करवाएँगे जिससे दादा–दादी अपेक्षाकृत अधिक सक्रिय जीवन व्यतीत कर सकेंगे। सही सक्रियता तो उन्हें प्रसन्नचित्त व स्वस्थ रखने में सहायक होती है। यदि सचमुच अपने बूढ़े माता–पिता को प्रसन्नचित्त व स्वस्थ रखना है तो उनकी सेवा व सम्मान के साथ–साथ उनसे उनके पोते–पोतियों का संसार मत छीनिये। ■

चिड़िया रानी

– **मुकेश कुमार ऋषि वर्मा**
फतेहाबाद, आगरा

चिड़िया रानी –चिड़िया रानी
आओ बैठो
दाना चुगलों, पी लो पानी ।
चिड़िया रानी...

चीं – चीं, चूं – चूं हरदम करती
तिनका– तिनका जोड़ –तोड़
सुंदर नीड़ बनाती ।

चिड़िया रानी– चिड़िया रानी
आओ बैठो
हमें सुनाओ कहानी ।
चिड़िया रानी...

नित परिश्रम करना सिखलाती
आंधी– तूफानों से लड़
हिम्मत की शिक्षा दे देती ।

चिड़िया रानी– चिड़िया रानी
आओ बैठो
दाना चुगलों, पी लो पानी ।
चिड़िया रानी...

एक बार पाँच-छह साल की एक लड़की डेढ़ साल के तन्दुरूस्त लड़के को गोद में लिए खेत से घर की ओर जा रही थी। चार कदम चलती थी और बच्चे को गोद से उतारकर पसीना पोंछने लगती थी। एक युवा ने आगे बढ़कर पूछा-भारी है?'

लड़की ने बच्चे को गोद में सहेजते-समेटते हुए कहा-भारी नहीं भाई है।'

उस युवा को लड़की की बात बहुत अच्छी लगी और उसने इस घटना को अपनी डायरी में कलमबद्ध कर दिया।

बट हू विल टेक केयर

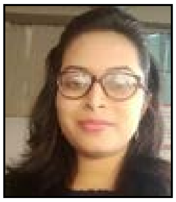

सोनल मंजू श्री ओमर
राजकोट, गुजरात

मकर संक्रांति अर्थात शुभकारी परिवर्तन

भारत वर्ष को संस्कृतियों एवं त्यौहारों का देश माना जाता है। ऐसे ही भारत का एक विशेष त्यौहार मकर संक्रांति है। संक्रांति का अर्थ है सुक्रांती अर्थात शुभकारी परिवर्तन। सूर्य मकर रेखा से कर्क रेखा की ओर चढ़ने लगता है। इस प्रकृति दत्त अवसर को मकर संक्रांति कहते है। मकर संक्रांति में सूर्य उत्तरयण में चले जाते है, इसके पूर्व दक्षिणायण में रहते है। सूर्य के दक्षिणायण में रहने के कारण दिन छोटे व राते बड़ी होती है, जबकि उत्तरायण में स्थित हो जाने पर दिन बड़े व राते छोटी होती है। मकर संक्रांति को स्नान और दान का विशेष महत्व है साथ ही तिल, गुड़, खिचड़ी, फल एवं राशि अनुसार दान करने पर पुण्य की प्राप्ति होती है। ऐसा भी माना जाता है कि इस दिन किए गए दान से सूर्य देवता प्रसन्न होते हैं।

हिन्दू पौराणिक कथाओं के अनुसार इस विशेष दिन पर भगवान् सूर्य अपने पुत्र भगवान् शनि के पास जाते है, उस समय भगवान् शनि मकर राशि का प्रतिनिधित्व कर रहे होते है। पिता और पुत्र के बीच स्वस्थ सम्बन्धों को मनाने के लिए, मतभेदों के बावजूद, मकर संक्रांति को महत्व दिया गया। ऐसा माना जाता है कि इस विशेष दिन पर जब कोई पिता अपने पुत्र से मिलने जाते है, तो उनके संघर्ष हल हो जाते हैं और सकारात्मकता खुशी और समृधि के साथ साझा हो जाती है। इसके अलावा इस विशेष दिन की एक कथा और है, जो भीष्म पितामह के जीवन से जुडी हुई है, जिन्हें यह वरदान मिला था, कि उन्हें अपनी इच्छा से मृत्यु प्राप्त होगी। जब वे बाणों की सज्जा पर लेटे हुए थे, तब वे उत्तरायण के दिन की प्रतीक्षा कर रहे थे और उन्होंने इस दिन अपनी आँखें बंद की और इस तरह उन्हें इस विशेष दिन पर मोक्ष की प्राप्ति हुई।

यह पर्व देश के विभिन्न राज्यों में अलग–अलग नामों और परंपराओं के साथ मनाया जाता है और इसी खूबी के कारण मकर संक्रांति का पर्व अन्य सभी त्योहारों से अलग व विशिष्ट बन जाता है। तो चलिए जानते हैं देश के विभिन्न हिस्सों में किस तरह सेलिब्रेट किया जाता है यह पर्व। पंजाब में इसे लोहड़ी के नाम से पुकारते है, जिसमे लकड़ियों व उपलों की आग बना कर उसके चारों ओर फेरी लगा कर नाचते गाते है और तिल रेवड़ी इत्यादि चढ़ाते है। वहीं तमिलनाडु व आंध्र प्रदेश में पोंगल नाम से इसे मनाया जाता है। जहां पर लोग पोंगल मनाने के लिए सबसे पहले स्नान करके खुले आंगन में मिट्टी के बर्तन में खीर बनाई जाती है, जिसे पोंगल कहा जाता है। इसके बाद सूर्य देव की पूजा की जाती है और अंत में उसी खीर को प्रसाद के रूप में ग्रहण किया जाता है। वहीं गुजरात में उत्तरायण के नाम से जाना जाता है मकर संक्रांति का पर्व। गुजरात में इस दिन पतंग उड़ाने की प्रथा है। इतना ही नहीं, गुजरात में मकर संक्रांति के पर्व पर पंतगोत्सव का भी आयोजन किया जाता है। गुजराती लोगों के लिए यह एक बेहद शुभ दिन है और इसलिए किसी भी शुभ कार्य की शुरूआत के लिए इसे सबसे उचित दिन माना जाता है। असम में मकर संक्रांति को बिहू नाम से मनाते है। तो वहीं उत्तर प्रदेश और बिहार में मकर संक्रान्ति को खिचड़ी के नाम से पुकारा जाता है। उत्तरप्रदेश में मकर संक्रांति के दिन को दान के पर्व के रूप में देखा जाता है। इलाहाबाद में तो मकर संक्रांति के दिन से ही माघ मेले की शुरूआत होती है और माघ मेले का पहला नहान मकर संक्रांति के दिन ही किया जाता है। इस खास दिन लोग स्नान के अतिरिक्त दान को भी महत्ता देते हैं। जिसमें खिचड़ी को मुख्य रूप से शामिल किया जाता है। इतना ही नहीं, लोग खिचड़ी को दान करने के साथ–साथ उसका सेवन भी अवश्य करते हैं।

भारत के अलावा मकर संक्रांति दूसरे देशों में भी प्रचलित है लेकिन वहां भी इसे अलग–अलग नाम से ही जाना जाता है। जैसे नेपाल में इसे माघे संक्रांति कहते है। नेपाल के ही कुछ हिस्सों में इसे मगही नाम से भी जाना जाता है। थाईलैंड में इसे सोंग्क्रण नाम से मनाते है। म्यांमार में थिन्ज्ञान नाम से जानते है। कंबोडिया में मोहा संग्क्रण नाम से मनाते है। श्री लंका में उलावर थिरुनाल नाम से जानते है। भले विश्व में मकर संक्रांति अलग–अलग नाम से मनाते है लेकिन इसके पीछे छुपी भावना सबकी एक है वो है शांति और अमन की, आस्था की। सभी इसे अंधेरे से रोशनी के पर्व के रूप में मनाते है।